खंड

4

पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद

इकाई 10
पारिभाषिक शब्दावली : विचारधाराएँ, सिद्धांत और युक्तियाँ 177

इकाई 11
पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद का संदर्भ 195

इकाई 12
विभिन्न विषय-क्षेत्रों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली : अभ्यास 210

खंड 4 का परिचय

ज्ञान-विज्ञान के किसी भी क्षेत्र से संबंधित साहित्य लेखन में पारिभाषिक शब्दावली का अपना विशेष महत्त्व एवं स्थान है। अनुवाद भिन्न भाषा-समाज द्वारा रचित साहित्य के ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराने का माध्यम होता है। अनुवाद के दौरान पारिभाषिक शब्दावली के समतुल्य प्रयुक्त करने होते हैं। ये समतुल्य शब्द हमें पारिभाषिक शब्द-संग्रहों में उपलब्ध होते हैं। लेकिन इसके लिए अनुवादक को पारिभाषिक शब्दों की पहचान होनी जरूरी है, तभी वह सटीक समतुल्य शब्द प्रयुक्त कर पाता है। इस संदर्भ में पारिभाषिक शब्दावली के निर्धारण, उनके निर्माण के सिद्धांत एवं युक्तियों/तकनीकों के बोध से अनुवाद-कर्मियों और अनुवाद अध्ययन के अध्येताओं को सहायता मिलती है। इसलिए खंड 4 को **'पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद'** से संबंधित रखा गया है। यह इस पाठ्यक्रम का अंतिम खंड है। इस खंड में भी तीन इकाइयाँ हैं।

इकाई 10 **'पारिभाषिक शब्दावली : विचारधाराएँ, सिद्धांत और युक्तियाँ'** पर केंद्रित है। भारत में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण से संबंधित शुद्धतावादी, हिंदुस्तानीवादी, अंतर्राष्ट्रीयतावादी और लोकवादी विचारधाराएँ प्रचलित रही हैं। इकाई में इन विचारधाराओं-दृष्टिकोणों से परिचित कराने के साथ-साथ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों और युक्तियों/तकनीकों के बारे में भी जानकारी दी गई है। वहीं, इसी इकाई में अखिल भारतीय शब्दावली की आवश्यकता, इसके निर्माण की पद्धति और पहचान के सामान्य पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है।

इकाई 11 का शीर्षक है - **'पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद का संदर्भ'**। इसमें पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद से जुड़े विभिन्न पक्षों को उजागर किया गया है। इस संदर्भ में अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता को स्पष्ट किया गया है और अनुवाद के साधन के रूप में पारिभाषिक शब्दावलियों से परिचित कराया गया है। इसके साथ-साथ अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की चयन प्रक्रिया और प्रासंगिकता को विवेचित किया गया है। अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग और सहजता के प्रश्न पर विचार किया गया है और अनुवाद के संदर्भ में पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग की जटिलता की समस्या और समाधानों पर प्रकाश डाला गया है।

इकाई 12 **'विभिन्न विषय-क्षेत्रों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली : अभ्यास'** है। इसमें ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली का अभ्यास कराया गया है। इसमें प्रशासन, विधि, मीडिया, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, बैंकिंग-बीमा-वाणिज्य आदि विषय-क्षेत्रों की चयनित पारिभाषिक शब्दावली को शामिल किया गया है। इस इकाई के जरिए पारिभाषिक शब्दावली के अनुप्रयोग को व्यावहारिक रूप देने की कोशिश की गई है। हालाँकि इन पारिभाषिक शब्दों को अंग्रेजी-हिंदी रूप में प्रस्तुत किया गया है, किंतु इन्हें हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद के संदर्भ में भी समान रूप से व्यवहार में लाया जाता है। **सत्रांत परीक्षा में इन विभिन्न विषय-क्षेत्रों की इस पारिभाषिक शब्दावली और इनके अनुवाद से संबंधित प्रश्न भी शामिल किए जाएँगे। ये प्रश्न दोनों में से किसी भी रूप में यानी अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद अथवा हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद करने से संबंधित हो सकते हैं। इसलिए विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे इनके हिंदी अनुवाद का अच्छी तरह से अभ्यास कर लें ताकि सत्रांत परीक्षा में उपयुक्त और उचित पर्याय दे सकें।**

इकाई 10 पारिभाषिक शब्दावली : विचारधाराएँ, सिद्धांत और युक्तियाँ

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 पारिभाषिक शब्दावली संबंधी विभिन्न विचारधाराएँ

- 10.2.1 शुद्धतावादी विचाधारा
- 10.2.2 हिंदुस्तानीवादी विचारधारा
- 10.2.3 अंतर्राष्ट्रीयतावादी विचारधारा
- 10.2.4 लोकवादी विचारधारा
- 10.2.5 समन्वयवादी दृष्टि

10.3 वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

10.4 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की युक्तियाँ/तकनीकें

- 10.4.1 अंगीकरण (Principle of Adoption)
- 10.4.2 अनुकूलन (Principle of Adaptation)
- 10.4.3 नव-निर्माण
- 10.4.4 अनुवाद (Translation)

10.5 अखिल भारतीय शब्दावली

- 10.5.1 अखिल भारतीय शब्दावली निर्माण की आवश्यकता
- 10.5.2 निर्माण की पद्धति
- 10.5.3 पहचान के सामान्य पक्ष और प्रकाशित शब्दावलियाँ

10.6 सारांश

10.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

10.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- पारिभाषिक शब्दावली से संबंधित विभिन्न विचारधाराओं को जान सकेंगे;
- वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों से परिचित हो सकेंगे;
- पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की विभिन्न युक्तियों/तकनीकों को समझ सकेंगे; और
- अखिल भारतीय शब्दावली से परिचित हो सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपको पारिभाषिक शब्दावली के विकास से परिचित कराया गया है। यह विकास, शब्दावली विकास की प्रक्रिया से भी संबंधित है और शब्दावली निर्माण की परंपरा से भी। शब्दावली के विकास की दो विशेषताएँ हैं – सहज विकास प्रक्रिया; और नियोजित विकास प्रक्रिया। सहज विकास प्रक्रिया के अंतर्गत मूल लेखन के कारण विकसित पारिभाषिक शब्द शामिल किए जाते हैं और नियोजित विकास प्रक्रिया में भाषा नियोजन के द्वारा शब्दावली निर्माण को। शब्दावली निर्माण की परंपरा से आपका भारत में इस दिशा में किए गए प्रयासों से साक्षात्कार कराया गया है। साथ ही इनके मानकीकरण के प्रयासों और समस्याओं से अवगत भी कराया गया है।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा की जानकारी हमें भारत में इस दिशा में किए गए प्रयासों से अवगत कराती है। इस परंपरा के बोध से हमें यह संकेत भी मिलता है कि पारिभाषिक शब्दावली विकसित करने के मूल में कुछ धारणाएँ काम करती रही हैं। वास्तव में पारिभाषिक शब्दावली के विकास में इन विचारधाराओं की विशेष भूमिका रही है। यह कहा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्दावली का भवन विचारधाराओं की नींव पर टिका है। इसलिए इनकी जानकारी होना जरूरी है, जो प्रस्तुत इकाई में उपलब्ध कराई गई है। इस इकाई का अध्ययन करने से आपको यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का आधारभूत दृष्टिकोण वस्तुतः समन्वयवादी ही है। समन्वय भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। आज विकसित पारिभाषिक शब्दावली भी इसी समन्वय को दर्शाती है। इस दृष्टिकोण के निर्माण में शुद्धतावादी, हिंदुस्तानीवादी, अंतर्राष्ट्रीयतावादी और लोकवादी विचार-दृष्टियों का प्रभाव नजर आता है। जब आप इन विचारधाराओं को ध्यान से पढ़ेंगे तो यह समझ में आ जाएगा कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने शब्दावली निर्माण के जो सिद्धांत निर्मित किए हैं, वे मूलतः इन्हीं दृष्टिकोणों का समन्वित प्रयास हैं। इसके अलावा, आयोग ने जो अखिल भारतीय शब्दावली बनाने की दिशा में जो प्रयास किए हैं, उसका भी परिचय इस इकाई में दिया गया है। साथ ही, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की विभिन्न युक्तियों अथवा तकनीकों अथवा तरीकों से भी परिचित कराया गया है।

10.2 पारिभाषिक शब्दावली संबंधी विभिन्न विचारधाराएँ

पारिभाषिक शब्दावली के विकासक्रम में आजादी के बाद भारत में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में व्यक्तिगत एवं संस्थागत स्तर पर जो प्रयास हुए, उनमें प्राप्त मत-भिन्नता से आप पिछली इकाई में परिचित हो चुके हैं। इस मत-विभेद का कारण था – हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्र में भारत का तत्कालीन विविध-रूपी असाधारण परिदृश्य। जन-सामान्य अंग्रेजी भाषा नहीं जानता था और शिक्षित वर्ग अंग्रेजी भाषा एवं वैज्ञानिक शब्दों से परिचित था। खड़ी बोली में संस्कृत शब्दों का अधिकतम प्रयोग था और हिंदी-भाषी प्रदेशों में लोग हिंदी-उर्दू से परिचित थे। आम भाषा-व्यवहार में हिंदी-उर्दू के बीच का भाषा-रूप अर्थात हिंदुस्तानी का प्रयोग अधिक था। इसी विविध-रूपी परिदृश्य में पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में शुद्धतावादी, हिंदुस्तानीवादी, अंग्रेजीवादी और समन्वयवादी विचारधाराएँ उभरकर सामने आईं। इन्हें 'पारिभाषिक शब्दावली संप्रदायों (Schools)' की संज्ञा भी प्रदान की जाती है। इन शब्दावली-संप्रदायों के विषय में क्रमशः विवेचन निम्न प्रकार से है :

10.2.1 शुद्धतावादी विचारधारा

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण संबंधी शुद्धतावादी विचारधारा को 'पुनरुद्धारवादी', 'राष्ट्रीयतावादी', 'संस्कृतवादी', 'प्राचीनतावादी' विचारधारा आदि अन्य अनेक नामों से भी अभिहित किया जाता है। इस वर्ग के लोग भारतीय भाषाओं की समस्त पारिभाषिक शब्दावली संस्कृत भाषा से लेने के पक्ष में हैं। इस विचारधारा में विश्वास रखने वाले लोगों का मानना है कि संस्कृत में शब्द-रचना की अपार क्षमता है, इसलिए किन्हीं अन्य स्रोतों से शब्द-ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है। वे यथासाध्य अधिक से अधिक पारिभाषिक शब्दों को प्राचीन संस्कृत वाङ्मय से लेना चाहते हैं, किंतु जिन आधुनिक पारिभाषिक शब्दों के लिए संस्कृत में प्रतिशब्द उपलब्ध नहीं हो पाते हैं, उनके लिए समास पद्धति द्वारा दो या अधिक संस्कृत शब्दों के मेल से, अथवा संस्कृत शब्द में उपसर्ग-प्रत्यय आदि जोड़कर या फिर आवश्यक होने पर नई धातुएँ बनाकर उनमें प्रत्यय-उपसर्ग जोड़कर नए तत्सम शब्द (संस्कृतनिष्ठ पारिभाषिक शब्दावली) निर्मित करने के पक्षधर हैं। डॉ. रघुवीर ने इस दृष्टिकोण का नेतृत्व किया। वे भारतीय शब्द-भंडार को संस्कृतनिष्ठ बनाने के प्रबल समर्थक थे। कई अन्य भी इस विचारधारा के समर्थक रहे हैं। उनके अतिरिक्त प्राचीन भारतीय संस्कृति के भक्त भी इस विचार-दृष्टि के समर्थ रहे हैं।

यह पुनरुद्धारवादी संप्रदाय इसलिए कहलाता है, क्योंकि इस विचार-दृष्टि वालों ने प्राचीन भारतीय शास्त्रों में उपलब्ध शब्दों का उद्धार किया। अंग्रेजी के वैज्ञानिक-तकनीकी शब्दों के समतुल्य नए तत्सम शब्दों की रचना-प्रक्रिया में प्राचीन भाषा संस्कृत के व्याकरण को साधन बनाते हुए प्राचीन व्याकरणिक पद्धति को अपनाया।

शुद्धतावादी संप्रदाय के प्रमुख समर्थक डॉ. रघुवीर का अपनी भाषा को विदेशी शब्दों के प्रभाव से मुक्त रखने के प्रति आग्रह था। डॉ गार्गी गुप्त ने 'पारिभाषिक शब्दावली की विकास-यात्रा' पुस्तक के संपादकीय में लिखा है कि 'डॉ. रघुवीर का कहना था कि शब्द और विचार अभिन्न हैं, इसलिए जब विचार नया होगा तो उसके लिए

नए शब्द की आवश्यकता भी अवश्य होगी। परंतु ये नए शब्द पारदर्शक भी हो सकते हैं और रंगीन भी। जो भाषाएँ विजातीय हैं और जिनकी जड़ें हमारे धरती से नहीं उपजी हैं, उनके शब्द हमारे लिए उधार के शब्द होते हैं और इसीलिए रंगीन शीशे की तरह धूमिल होते हैं। उनके पार सायास देखना पड़ता है। अंग्रेजी के शब्द हमारे लिए ऐसे ही उधार के और धूमिल शब्द हैं, क्योंकि उनकी जड़ें ग्रीक और लैटिन भाषाओं में हैं। इसके विपरीत संस्कृत हमारी अपनी भाषा है। लगभग सभी भारतीय भाषाओं में (उर्दू और कुछ सीमा तक तमिल को छोडकर) उसकी जड़ें फैली हुई हैं। इसलिए उसके आधार पर बनाए गए शब्द हमारे लिए स्पष्ट और पारदर्शी होंगे। यदि किसी को संस्कृत व्याकरण का थोड़ा-सा भी ज्ञान हो जाए तो नए शब्दों के अर्थ उसके लिए सहज एवं सुबोध हो जाएँगे। आवश्यकता है केवल शब्द निर्माण की पद्धति को एक बार अच्छी तरह समझ लेने की।' (पृ.3-4) डॉ. रघुवीर संसार की अन्य किसी भी भाषा की तुलना में हिंदी के शब्दों में पारदर्शिता स्वीकार करते थे। उनका कहना था कि संस्कृत भाषा शब्द-निर्माण का अनंत स्रोत है, क्योंकि इसकी 520 धातुओं, 20 उपसर्गों एवं 80 प्रत्ययों की सहायता से लाखों-करोड़ों शब्द बनाए जा सकते हैं। उनका विश्वास था कि इनके समुचित प्रयोग से पारिभाषिक शब्दों की क्रमबद्ध रचना की जा सकती है।

हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में व्यक्तिगत स्तर पर डॉ. रघुवीर का शब्दावली निर्माण संबंधी कार्य उल्लेखनीय है। संस्कृत भाषा व्याकरण के नियमों के आधार और शब्द-निर्माण की उर्वरा-शक्ति का प्रयोग करते हुए डॉ. रघुवीर ने लगभग प्रत्येक पारिभाषिक शब्द के लिए नए शब्दों का निर्माण किया एवं पुराने शब्दों का जीर्णोद्धार किया। उन्होंने चार भागों में 'A Comprehensive English-Hindi Dictionary' (आंग्ल भारतीय महाकोश) तैयार किया जिसमें प्रत्येक शब्द का पर्याय देवनागरी, बांग्ला, कन्नड़ और तमिल लिपियों में भी दिया गया है। अर्थशास्त्र शब्दकोश, वाणिज्य शब्दकोश, तर्कशास्त्र शब्दकोश, सांख्यिकी शब्दकोश, वैज्ञानिक शब्दकोश, पक्षिनामावली, स्तनि नामावली, भेषज-संहिता शब्दकोश, मंत्रालय कोश, विधि कोश, वानिकी कृषि कोश, अंग्रेजी-हिंदी वृहत कोश आदि का निर्माण किया है। वे मृत्यु-पर्यंत पाँच लाख पारिभाषिक शब्दों का निर्माण कर चुके थे, जबकि उनकी इच्छा अंग्रेजी के लाखों शब्दों के हिंदी पर्याय बनाने की थी। अपने शुद्धतावादी दृष्टिकोण के आधार पर डॉ. रघुवीर ने 1955 में प्रकाशित अपने प्रसिद्ध कोश 'A Comprehensive English-Hindi Dictionary' में अंग्रेजी शब्दों के प्रतिशब्द दिए हैं और पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या की है। शब्द-रचना संबंधी मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

1. अंग्रेजी भाषा से शब्द लेने के बजाए वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत तथा पालि आदि भाषाओं में विरचित ग्रंथों के रूप में भारतीय परंपरा में विद्यमान उचित शब्दावली को ग्रहण करना। उदाहरण के लिए 'octoroi' के लिए 'राजतरंगिणी' से 'द्वारादेय' शब्द लेना। इसी प्रकार 'tehsil' के लिए अशोक के शिलालेख से 'मुक्ति', 'umpire' के लिए महाभारत के 'प्रमाण पुरुष', 'auction' के लिए कौटिल्य के अर्थशास्त्र से 'कोशविक्रय', 'earnest money' के लिए याज्ञवल्क्य के 'सत्यंकार', 'will ' के लिए मनुस्मृति से 'रिक्थपत्र', 'invention' के लिए पाणिनि के 'उपज्ञा' आदि शब्दों को लेना।

2. भारतीय परंपरा का अनुसरण करते हुए डॉ. रघुवीर ने अंग्रेजी भाषा के तकनीकी शब्दों के लिए वर्तमान भाषा-साधनों (अर्थात प्रचलित देशी-विदेशी शब्दों) के स्थान पर नए शब्दों का निर्माण किया। उदाहरण के लिए 'federal' के लिए प्रचलित 'संघीय' शब्द के स्थान पर 'संघानीय' शब्द निर्मित किया। इसी प्रकार, 'time-barred' के लिए प्रचलित शब्द 'काल-बाधित' के स्थान पर 'काल तिरोहित', 'deficit financing' के लिए 'घाटे की वित्त-व्यवस्था' के स्थान पर 'हीनार्थ प्रबंधन', 'Fountain pen' के लिए 'मसीपथ', 'general election' के लिए 'सामान्य निर्वाचन' आदि शब्द निर्मित करना।

3. जिन संकल्पनाओं (अथवा वस्तुओं) के लिए शास्त्रीय परंपरा में शब्दों का अभाव है, उनके लिए संस्कृत व्याकरण के नियमों के अनुसार उपसर्ग-प्रत्यय एवं धातुओं से नई शब्द-रचना करना। उदाहरण के लिए, Law+full = विधि + वत। इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण हैं – Law+Less+ness = विधि + हीन+ ता, Tele+Vision =दूर + दर्शन, Tele+Phone = दूर + भाष आदि ।

4. डॉ. रघुवीर ने आवश्यकता पड़ने पर नए प्रत्ययों का निर्माण भी किया। उदाहरण के लिए 'धातु' शब्द से उन्होंने 'आतु' प्रत्यय बनाया और उसके आधार पर मिश्रातु (Alloy),, चर्णातु (Calcium), तेजातु (Radium), हर्यातु (Barium), महातु (Platinum) आदि शब्दों का निर्माण किया। इसी प्रकार, गैसों के नामों

के लिए डॉ. रघुवीर ने 'वाति' से 'आति' प्रत्यय बनाया और उसके आधार पर भूयाति (Nitrogen), शिथिराति (Neon), कोट्याति (Xenon) आदि शब्द निर्मित किए।

आदर्शवादी पुनरुद्धार की कामना से अनुप्रेरित डॉ. रघुवीर का शब्दावली निर्माण संबंधी कार्य पूरी तरह से मौलिक, वैज्ञानिक एवं महत्त्वपूर्ण है। उनकी संस्कृत आधारित शब्द ग्रहण एवं निर्माण संबंधी दृष्टि संस्कृत भाषा की शब्द-निर्माण की अपरिमित क्षमता का द्योतक शास्त्रीय भाषिक सामर्थ्य एवं गरिमा का प्रदर्शक है। डॉ. रघुवीर के इस दृष्टिकोण के जहाँ उनके घोर प्रशंसक थे, वहीं उनकी मान्यताओं का घोर विरोध करने वाले निदंकों की भी कमी नहीं रही। उनके प्रयासों की आलोचना करने वालों में विषय-विशेषज्ञ तो थे ही, साथ ही राजनीतिक लोग भी थे। डॉ. रघुवीर की विचारधारा का नकारात्मक पक्ष यह माना जाता रहा कि उनके द्वारा निर्मित शब्दों की अतिशय संस्कृतनिष्ठता, शब्दावली-प्रयोक्ताओं के लिए पूरी तरह से अपरिचित थी और इस कारण दुरूह थी। व्यवस्थित कोश-कार्य की अद्वितीयता और शब्द-निर्माण सौष्ठव में अपूर्व वैज्ञानिकता डॉ. रघुवीर को 'आधुनिक पाणिनि' सिद्ध करती है, किंतु शब्दावली की सार्थकता के मूल में प्रयोगसिद्ध व्यावहारिकता एवं सामाजिक ग्राह्यता के महत्त्व को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उस कसौटी पर डॉ. रघुवीर के द्वारा निर्मित शब्दों को कसा जाए तो वे पूरी तरह से खरे नहीं उतरते। हालाँकि हम इस वास्तविकता को भी अस्वीकार नहीं कर सकते कि पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में डॉ. रघुवीर की भूमिका एवं योगदान का समुचित मूल्यांकन नहीं हुआ।

10.2.2 हिंदुस्तानीवादी विचारधारा

पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में शुद्धतावादी दृष्टिकोण के पक्षधरों के अतिरिक्त एक अन्य वर्ग भी था, जो भाषा में प्रयोगवाद का पक्षधर था। दैनिक प्रयोग के हिंदी-उर्दू के संयुक्त रूप 'हिंदुस्तानी भाषा' के शब्दों का प्रयोग करने में इस वर्ग का विश्वास था। वे हिंदुस्तानी के माध्यम से देश की सामासिक संस्कृति का प्रचार करना चाहते थे। इसे 'प्रयोगवादी विचारधारा' के नाम से भी जाना जाता है। इस विचार-दृष्टि के पोषकों की मान्यता थी कि हमारी मिश्रित संस्कृति के अनुरूप शब्दावली भी मिश्रित होनी चाहिए। इस कारण इस विचारधारा का संस्कृत, अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी तथा तद्भव-देशज तत्वों की सहायता से पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के प्रयोग में विश्वास था।

हिंदुस्तानी विचारधारा के प्रवर्तक व्यक्ति थे – डॉ. जाफर हसन और पंडित सुंदरलाल। डॉ. हसन का हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय और पं. सुंदरलाल का इलाहाबाद की हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी से संबंध था। इस विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने वाली शब्दावलियों (उस्मानिया विश्वविद्यालय से 1950-52 में प्रकाशित 'हिंदी टर्म्स ऑफ सोशियोलॉजी' और हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद से 1954 में प्रकाशित पुस्तिका 'हिंदुस्तानी के लिए शब्दयाती असूल') से इनके द्वारा निर्मित शब्द एवं सिद्धांतों का पता चलता है। हालांकि इनका उद्देश्य पारिभाषिक शब्दावली को बोलचाल की भाषा एवं व्याकरण के निकट लाकर सरल शब्द विकसित करना था, किंतु इन दोनों संस्थाओं की विचारधाराओं में कमोबेश अंतर भी था।

उस्मानिया विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम उर्दू थी। वहाँ उर्दू के व्याकरणिक ढाँचे में ढली विषयानुरूप शब्दावली बनाने का विशेष ध्यान रखा गया। तद्भव एवं विदेशी शब्दों में उर्दू व्याकरण में उपलब्ध पद्धति से 'ना', 'इयाना' प्रत्यय लगाकर कई शब्द बनाए गए। 'Centralise' के लिए 'केंद्रियाना', 'Acknowledgement' के लिए 'रसीदियाना', 'normalise' के लिए 'नार्मलियाना', 'legalise' के लिए 'कानूनियाना', 'individualise' के लिए 'एकजियाना', 'Atomize' के लिए 'अणुयाना', 'Standardise' के लिए 'स्टेन्डर्डियाना', और 'particularise' के लिए 'खासियाना' शब्द इस प्रकार की शब्दावली निर्माण के उदाहरण हैं। इसी प्रकार, 'अलगाई', 'रचनाई', 'रचनित', 'संकटिक', 'ठगित', 'तजित' आदि शब्द भी हैं, जिनमें संस्कृत के प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है। वैसे नए शब्दों के साथ-साथ तत्सम शब्द भी दिए गए (जैसे 'reaction' – प्रतिक्रिया, पलटकारी, 'revolution'- क्रांति, इन्कलाब, 'Absolutism'- अरोकवाद, निरंकुशवाद, 'adaptation' – अनुकूलकरण, अपनाव, 'schedule' – अनुसूची, फेहरिस्त) और तद्भव शब्दों की ईजाद भी की गई (जैसे, abandoned = तजित, favourtism = पासकारी, habitation = रहाव, retropect = पिछदर्शन, sportine = खेलिक, dogmatism = हठमतवाद)। इसके अलावा, अंग्रेजी धातुओं के आधार पर नए शब्द भी रचे गए (जैसे – मार्केट, निगेटिव, नार्महीनता, पोलिटिकी, ऑब्जेक्टिवता आदि)।

डॉ. रघुवीर द्वारा निर्मित शब्दावली जहाँ व्याकरणिक अतिशुद्धता से आक्रांत थी, वहीं, हिंदुस्तानीवादी विचारधारा के आधार पर निर्मित ये शब्द अव्याकरणिक कहे जा सकते हैं, क्योंकि इन शब्दों की व्याकरणिक रूप-रचना भाषा की प्रकृति के विरुद्ध थी। इसके अधिकांश शब्दों को समाज-स्वीकृति नहीं मिली और वे अस्वीकृत कर दिए गए। संकर शब्दों के अत्यधिक प्रयोग के साथ-साथ संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू तथा हिंदुस्तानी के शब्दों एवं बड़े पैमाने पर हिंदुस्तानी उपसर्ग-प्रत्ययों के प्रयोग ने उस्मानिया शब्दावली की विचित्रता प्रदान कर दी।

इलाहाबाद स्थित हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी के प्रमुख पं. सुंदरलाल का शब्दावली निर्माण की दिशा में प्रयास भी इसी प्रकार का था। वे ऐसी शब्दावली चाहते थे, जो भारत की 'सामासिक संस्कृति' का प्रतिनिधित्व करे, किंतु वह संस्कृतनिष्ठ शब्दावली न हो। हिंदुस्तानी का पक्षधर होने के कारण पं. सुंदरलाल की शब्दावली में हिंदुस्तानी, उर्दू तथा खड़ी बोली के शब्दों का प्रयोग अधिक है और संस्कृत का बहुत कम। शब्दावली निर्माण में उन्होंने हालांकि संस्कृत शब्दों को बहिष्कृत तो नहीं किया, किंतु तत्संबंधी नियामक सिद्धांतों का अनुपालन भी नहीं किया। हिंदुस्तानी के कट्टर पक्षधर होने के कारण पं. सुदरलाल की तद्भव रूपों के प्रति आस्था थी। 'संदेसा' (संदेश), 'ब्यौहार' (व्यवहार), 'ब्यौपार' (व्यापार), 'प्रमान' (प्रमाण), 'छेत्र' (क्षेत्र), 'देसीकरन' (देशीकरण) आदि शब्द इसी आस्था को पुष्ट करते हैं। इसके अतिरिक्त, उपसर्ग-प्रत्ययों के चुनाव में हिंदी अथवा उर्दू के साधनों को व्यवहार में लाया गया। वे 'international' के लिए 'अंतरकौमी', 'education' के लिए 'तालीम', 'chairman' के लिए 'मसनदी', 'Auditor General' के लिए 'सरपड़तालिया', 'concurrent' के लिए 'संगचारी', 'literature' के लिए 'अदब साहित्य', 'import' के लिए 'आयासी', 'bye-law' के लिए 'छुट-कानून', 'trade' के लिए 'ब्यौपार', 'disqualification' के लिए 'अजोगता', 'emergency' के लिए 'अचानकी', 'meeting' के लिए 'मिलनी', 'adjustment' के लिए 'बैठ-बिठाव', 'communication' के लिए 'आवाजाई', 'disfigure' के लिए 'रूप-बिगाड़', 'disabled' के लिए 'अपाहिज' और 'adulteration' के लिए 'मिलावट' आदि शब्दों को प्रश्रय देते थे।

इस प्रकार, हिंदुस्तानी विचारधारा के समर्थकों ने हिंदी भाषा को सरल, अधिक प्रयोगक्षम और बोधगम्य बनाने के लिए 'मिली-जुली शब्दावली' का निर्माण किया। लेकिन यह भी वास्तविकता ही रही कि आधारभूत संरचनात्मक ढाँचा न होने के कारण शब्द-रचना प्रक्रिया को आगे बढ़ा पाना इसमें संभव नहीं था। हालांकि इसे कुछ शब्दों में सफलता मिली किंतु हिंदी भाषी समाज ने शब्दावली के देशीकरण की विचारधारा को पूर्णतः स्वीकार नहीं किया।

10.2.3 अंतर्राष्ट्रीयतावादी विचारधारा

डॉ. रघुवीर की संस्कृत-आधारित 'शुद्धतावादी विचारधारा' और शब्दावली के देशीकरण के रूप में 'हिंदुस्तानीवादी विचारधारा' के साथ-साथ धीरे-धीरे एक अन्य विचारधारा भी विकसित हुई। इस विचारधारा के पोषक अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण के पक्षधर थे। इस विचारधारा को 'शब्द-ग्रहणवादी', 'आदानवादी' एवं 'अंग्रेजीवादी' विचारधारा की संज्ञा भी प्रदान की जाती है। इस मत के समर्थकों में अधिकांशतः वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील और सरकारी अधिकारी आदि थे। ये अंग्रेजी तथा अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को लेने के पक्षधर थे। अंग्रेजी शब्दों के अभ्यस्त होने के कारण ये लोग हिंदी के नए शब्द सीखने से बचना चाहते थे। इनका यह मानना रहा है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास पाश्चात्य देशों की देन है, इसलिए जिन संकल्पनाओं और वस्तुओं के लिए हिंदी में शब्द नहीं हैं, उनके अंग्रेजी एवं अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दों को ज्यों का त्यों या फिर यत्किंचित् परिवर्तन के रूप में अनुकूलन करके हिंदी में ले लिया जाए। इन लोगों का मानना था कि अंग्रेजी एवं अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली का प्रचार विश्व में सर्वाधिक होने के कारण हमारे शास्त्रवेत्ताओं को विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित साहित्य को समझने में सरलता होगी। उनकी दृष्टि में प्रत्येक वैज्ञानिक अथवा प्रौद्योगिकी संबंधी शब्द अथवा अर्ध-तकनीकी शब्द अंतर्राष्ट्रीय है और उनके स्थान पर शास्त्रीय परंपरा से पर्याय निर्धारित करना अव्यावहारिक है। इनके अनुवाद के सभी प्रयत्न विफल होंगे और इससे देश का वैज्ञानिक-प्रौद्योगिकी शिक्षा का स्तर गिरेगा जबकि उन्हें अपनाने से अनुवादक अथवा लेखक के लिए शब्दावली संबंधी समस्या का हमेशा के लिए समाधान हो जाएगा। अंग्रेजी अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य भाषाओं के शब्दों के अपने यहाँ प्रयोग से हम अंतर्राष्ट्रीयता से जुड़ेंगे। वैसे भी, ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं में नए शब्द हमेशा आते रहेंगे तो फिर हम कब तक आंतरिक अथवा देशीय स्रोतों से शब्द खोजते/बनाते रहेंगे। अंग्रेजी भाषा में भी विभिन्न भाषाओं से शब्द-ग्रहण संबंधी प्रवृत्ति व्याप्त

है और इस प्रवृत्ति को हिंदी में भी अपनाने से पारिभाषिक शब्दावली संबंधी समस्या से हमेशा के लिए पिंड छूट जाएगा। ऐसी शब्दावली को 'अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली' की संज्ञा प्रदान की गई।

शब्द-ग्रहण संबंधी इस धारणा को दो पक्षों से देखा जा सकता है – (1) शब्दों को ज्यों का त्यों ग्रहण करना लेना, अथवा (2) अंग्रेजी शब्दों में उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर अथवा अपनी भाषा की प्रकृति के अनुसार ध्वनि परिवर्तन के रूप में यत्किंचित् परिवर्तन करके शब्दों को अनुकूलित रूप में चलन में लाना। 'रेडियो', 'ऑक्सीजन', 'स्टेशन', 'पुलिस', 'लीटर', 'मीटर', 'हीटर', 'राडार', 'गीजर', 'हेक्टेयर', 'फोकस' आदि असंख्य शब्दों को ज्यों के त्यों ग्रहण करने के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। जबकि 'फोकस' जैसे शब्दों के साथ उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर 'फोकसन' और 'फोकसित' आदि शब्द अनुकूलन का रूप है। वहीं 'कामदी', 'तकनीक', 'त्रासदी', 'अंतरिम', 'अकादमी' आदि शब्द ध्वनि-परिवर्तन के रूप में अनुकूलन का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

वस्तुतः यह दृष्टि काफी हद तक सुविचारित और उपयुक्त प्रतीत होती है। किंतु यह भी वास्तविकता है कि इस अंतर्राष्ट्रीयतावादी विचारधारा को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि किसी भी समुन्नत देश में न तो ऐसा होता है और न ही होना चाहिए कि अन्य भाषा/भाषाओं के समस्त शब्दों को ले लिया जाए। अगर ऐसा किया जाए तो एक स्थिति ऐसी बन जाएगी जब अपनी भाषा पूरी तरह से कृत्रिम रूप धारण कर लेगी और तब उसका अपना व्यक्तित्व-अस्तित्व नहीं रह जाएगा। वस्तुतः कोई भी भाषा अन्य भाषाओं के सभी शब्दों को अपने में रचा-पचा नहीं सकती।

10.2.4 लोकवादी विचारधारा

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में जहाँ शुद्धतावादी, हिंदुस्तानीवादी और अंतर्राष्ट्रीयतावादी विचार-दृष्टियाँ प्रभावी थीं, वहीं लोकवादी दृष्टि भी देखने को मिलती है। इस प्रवृत्ति को 'स्वभाषावादी विचारधारा' के नाम से भी जाना जाता है। इस विचार-दृष्टि के समर्थकों की आधारभूमि जन-प्रयोग से शब्द ग्रहण करने अथवा जन-प्रचलित शब्दों के योग से शब्द निर्माण की रही है। पारिभाषिक शब्दों के निर्माण संबंधी इस दृष्टि को हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुकूल कहा जा सकता है। 'Infiltrator' के लिए 'घुसपैठिया' शब्द एवं 'Defector' के लिए 'दलबदलू' अथवा 'आयाराम गयाराम' शब्द का प्रयोग करना जन-प्रयोग से शब्द ग्रहण करने की लोकवादी विचार-दृष्टि का परिचायक है। इसी प्रकार, 'Detention' के लिए 'नजरबंद', 'Power House' के लिए 'बिजलीघर', 'Post office' के लिए 'डाकघर', 'Train' के लिए 'रेलगाड़ी', 'Draft' के लिए 'मसौदा' और 'Maternity Home' के लिए 'जच्चाघर' आदि जन-प्रचलित शब्दों के योग से निर्मित पारिभाषिक शब्द हैं। इसी भाँति कुछ अन्य शब्द हैं – 'बिचौलिया', 'फिरौती', 'हुंडी', 'मंदड़िया', 'तेजड़िया' आदि। वैसे, इस संबंध में इस तथ्य को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि सभी प्रकार के पारिभाषिक शब्दों को जन-प्रयोग में से जुटा पाना इस विचारधारा की सीमा रही है। इस कारण केवल इसी विचार-दृष्टि का अवलंब लेकर हिंदी भाषा में पारिभाषिक शब्दों की भव्य इमारत को खड़ा नहीं किया जा सकता।

10.2.5 समन्वयवादी दृष्टि

पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में 'शुद्धतावादी दृष्टि' से निर्मित शब्दावली की दुरूहता, हिंदुस्तानी विचारधारा द्वारा शब्दावली का देशीकरण, लोकवादी विचारधारा द्वारा शब्द-निर्माण की सीमित संभावनाएँ और अंतर्राष्ट्रीयतावादी विचारधारा की अपनी सीमाएँ अतिवादिता की द्योतक हैं। इस कारण पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति का पैदा होना स्वाभाविक था। वास्तव में किसी भी भाषा-समाज को अतिशुद्धतावादी नियमों अथवा भाषा के सहज नियमों को तोड़-मरोड़कर या विदेशी शब्दों से अभिभूत करना स्वीकार्य नहीं है। ऐसे में शब्द-रचना की कठिन प्रक्रियाओं को छोड़ने एवं विभिन्न विचारधाराओं के सही बिंदुओं के चयन से समन्वय-स्थली पर पहुँचने का मार्ग ही शेष रह जाता है। 'सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन' पुस्तक में डॉ. गोपाल शर्मा ने लिखा है कि 'समन्वित दृष्टिकोण इस बात में निहित है कि भारत की सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षणिक और आर्थिक आवश्यकताओं का सही निर्धारण किया जाए, भाषा के विकास और उसकी वर्तमान अवस्था को सामने रखते हुए उसे संपन्न बनाने के लिए प्रयुक्त विविध साधनों का उचित मूल्यांकन किया जाए और उनमें निहित श्रेष्ठ तत्वों को लेकर एक सर्वमान्य समन्वित विधा तैयार की जाए। भाषा को नए सिरे से (abstration)

विविक्ति मानकर चलना ठीक नहीं होता। वह एक वास्तविकता (reality) है, एक व्यवहार अथवा क्रिया है, उसका एक व्यावहारिक प्रयोजन होता है। अतएव उसकी आवश्यकता का मूल्यांकन जन-समाज की गतिविधि और जीवन-क्रम के आधार पर करना आवश्यक है।' (पृ.89) तकनीकी शब्द ग्रहण एवं नव-शब्द निर्माण में इसी संतुलित दृष्टिकोण को अपनाकर पारिभाषिक शब्दावली को समृद्ध किया जा सकता है।

समन्वयवादी मत के आधार पर सुविधा एवं भारतीय भाषाओं की प्रकृति को दृष्टि में रखते हुए शब्द-ग्रहण एवं नव-शब्द निर्माण का समन्वय किया जा सकता है। शब्दों को अंतर्राष्ट्रीय, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, आधुनिक भाषाओं के प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य के अतिरिक्त अन्य सभी भारतीय भाषाओं और बोलियों की शब्दावली से लिया जा सकता है। महात्मा गांधी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद एवं पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसी महान विभूतियों ने पारिभाषिक शब्दावली में सरलता, स्पष्टता एवं सूक्ष्मार्थकता जैसे पक्षों को महत्त्व दिया है। इस संदर्भ में डॉ. राजेंद्र प्रसाद के ये विचार उल्लेखनीय हैं कि 'नए शब्द, जो तकनीकी आवश्यकताओं को दृष्टि से अथवा अन्य भाषाओं के विशेष शब्दों और अभिव्यक्तियों के सही अर्थ के द्योतन की दृष्टि से बनाए जाएँ, पहले अन्य प्रांतीय भाषाओं और बोलियों से लिए जाने चाहिए। यहाँ तक कि विदेशी भाषाओं से अपने शुद्ध रूप से प्राप्त शब्द भी बिलकुल ही बहिष्कृत न किए जाएँ। अधिकांश शब्द-निर्माण का प्रधान स्रोत संस्कृत होनी चाहिए, किंतु इस प्रसंग में विशुद्धता और पंडिताऊपन से बचना चाहिए और हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि संस्कृत से ऐसे शब्द बनाए जाएँ जो बोली जाने वाली भाषा के विन्यास और प्रकृति में ठीक-ठीक बैठ जाएँ और अपनी सरलता के कारण जनता को प्रिय हों।' (सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. गोपाल शर्मा, पृ.92 से उद्धृत) पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में व्यक्तिगत एवं संस्थागत स्तर पर किए गए अनेक कार्यों में से प्रो. टी.के. गज्जर, बंगीय साहित्य परिषद, नागरी प्रचारिणी सभा, महाराष्ट्र कोश मंडल, हिंदी साहित्य सम्मेलन और केंद्र सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग आदि द्वारा किए गए कार्य वस्तुतः व्यावहारिक समन्वय-स्थली के द्योतक हैं। समन्वयवादी विचार-दृष्टि के विद्वानों का विश्वास है कि

- जो शब्द अपने मूल रूप से ही चल सकें उन्हें यथावत स्वीकार कर लेना चाहिए। शब्द ग्रहण करते समय जिनमें आवश्यक हो, उनमें अपनी भाषा की ध्वनि व्यवस्था के अनुरूप गृहीत शब्द का अनुकूलन कर लेना चाहिए (जैसे 'Academy' शब्द को ग्रहण करते हुए उसका लिप्यंतरण 'एकेडमी' न करके हिंदी भाषा की ध्वनि-व्यवस्था के अनुकूल इसका अनुकूलन 'अकादमी' कर देना) अन्यथा उनमें उपसर्ग-प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बना लिए जाएँ। (जैसे 'Focus' शब्द को ग्रहण करते हुए उसके लिप्यंतरित रूप 'फोकस' में उपसर्ग-प्रत्यय जोड़कर 'फोकसन', 'फोकसित' आदि शब्द बनाना)।

- शब्द-ग्रहण अथवा नव-शब्द निर्माण में सर्वप्रथम संस्कृत अन्यथा विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं बोलियों में उपलब्ध उपयुक्त शब्दों को यथासंभव ग्रहण कर लेना चाहिए एवं उनकी सहायता से नव–शब्द सृजित किए जाएँ। नई शब्द-रचना करते समय अपनी भाषा के शब्दों अथवा संस्कृत धातुओं में उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर एवं व्याकरणिक नियमों के अनुसार संधि-समास का प्रयोग करते हुए नए तकनीकी शब्दों की रचना की जानी चाहिए। ऐसा करते समय वर्ण-संकर शब्दों (जैसे 'ऑक्सीकृत' (oxidised), 'रेडियोधर्मी' (Radio-active) का प्रयोग भी ग्राह्य है। किंतु इस प्रकार के नव-निर्मित शब्द में अटपटापन नहीं हो। वे भाषा में सरलता से चलने लायक होने चाहिए।

- विशुद्धतावाद अथवा अनियंत्रित प्रयोगवाद संबंधी अतिवादी स्थितियों-परिस्थितियों से बचकर सहजता-सरलता, सूक्ष्मार्थकता तथा सुबोधता के मार्ग पर चलते हुए पारिभाषिक शब्दावली के प्रचलन के प्रति समुचित आस्था।

वस्तुतः सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप शब्दावली निर्मित करने की विचारधारा है यह। इसमें व्यावहारिक पक्ष को प्रधानता देते हुए शब्दावली को अनंतिम मानने की प्रवृत्ति रहती है, ताकि उसका समयांतराल में पुनरीक्षण कर संशोधन-परिवर्द्धन किया जा सके। वास्तविकता यही है कि 'सामाजिक परिस्थितियों और रुचियों के अनुसार क्रमशः भाषा और शब्दावली में परिवर्तन होता जाता है। नए विचार उत्पन्न होते हैं, नई धारणाएँ बनती हैं। भाषा का विकास सदा उससे की जाने वाली अपेक्षाओं से पीछे रह जाता है।' ('In all walks of life ideas are

developing, outlook is altering and the acceptable words available to the plain man are not always adequate for the expression of his changing thought. The development of language always lags behind the demands of made up on it.' – Browsing among the Words of Science, T.H. Savory, p.9)

10.3 वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

अतिवादिता की शिकार शुद्धतावादी, हिंदुस्तानीवादी और अंतर्राष्ट्रीयतावादी विचारधाराओं के कारण पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति परिव्याप्त हो गई। इस अराजकता से निपटने और शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए भारत सरकार ने 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग (Commission for Scientific & Technical Terminology - CSTT) की स्थापना की। आप पिछली इकाई के भाग 9.3.2 में यह पढ़ चुके हैं कि इससे पहले वर्ष 1950 में 'वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड' की स्थापना की गई थी। समय-समय पर कई बार नाम बदलते रहने के बाद अब यह 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग' के नाम से जाना जाता है।

आयोग को ऐसी तकनीकी शब्दावली की एकरूपता-समरूपता एवं मानकीकरण का दायित्व सौंपा गया जिसमें अखिल भारतीयता की छाप हो। आयोग ने किसी भी प्रकार की अतिवादी दृष्टि का समर्थन करने के स्थान पर राष्ट्रीय लक्ष्य और भाषा-समाज की वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए मध्यम मार्ग का अनुसरण किया। इसके लिए आयोग ने देश के जाने-माने विद्वानों, वैज्ञानिकों, विषय-विशेषज्ञों एवं भाषाविदों से विचार-विनिमय कर सभी विचारधाराओं से मूल तत्वों को ग्रहण किया और अखिल भारतीय स्तर पर शब्दावली के निर्माण के कई मार्गदर्शक सिद्धांत तैयार किए जिन्हें इस इकाई के भाग 10.2 में उल्लिखित-विवेचित किया गया है। ये सिद्धांत वस्तुतः पारिभाषिक शब्दावली संबंधी समन्वयवादी दृष्टिकोण पर ही आधारित हैं। इसमें अंग्रेजी, हिंदुस्तानी, हिंदी-उर्दू, संस्कृत शब्दों एवं शब्द-निर्माण पद्धति को एक सीमा तक स्वीकार करने के प्रति आग्रह है।

समन्वयवादी दृष्टि के मूल में संदर्भानुसार उपयुक्त शब्दों को लेने पर बल है जो संस्कृत, अंतर्राष्ट्रीय, अंग्रेजी, देशी भाषाओं/बोलियों आदि में से किसी के भी हो सकते हैं। राडार, मशीन आदि अनगिनत अंतर्राष्ट्रीय-अंग्रेजी शब्दों; और 'दस्तावेज', 'जिला', 'जमानत' जैसे अरबी-फारसी के शब्दों के अतिरिक्त 'बिचौलिया', 'जच्चाघर' जैसे लोक-प्रचलित शब्दों, 'Acknowledgement' के लिए मराठी के 'पावती', 'annexe' के लिए कन्नड से 'सौध', Battalion के लिए बांग्ला से 'वाहिनी' जैसे भारतीय शब्दों को अपनाना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस समन्वयवादी दृष्टि से सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति सहजता से हो पाती है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के लिए व्यापक दृष्टिकोण को अपनाया है। आयोग का 1967 में प्रकाशित 'बृहत पारिभाषिक शब्द-संग्रह' (विज्ञान, दो भाग) का 'आमुख' यह जानकारी देता है कि आयोग ने पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के लिए कौन से सिद्धांत अपनाए हैं। 'आमुख' में दिए गए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांत इस प्रकार हैं :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग द्वारा स्वीकृत
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

1) अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं :

   क) तत्वों और यौगिकों के नाम, जैसे हाइड्रोजन, कार्बन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि;

   ख) तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ, जैसे डाइन, कैलोरी, ऐम्पियर आदि;

   ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं जैसे फ़ारेनहाइट के नाम पर फ़ारेनहाइट तापक्रम, वोल्टा के नाम पर वोल्टमीटर और ऐम्पियर के नाम पर ऐम्पियर आदि;

   घ) वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली;

ङ) स्थिरांक जैसे π g आदि;

च) ऐसे अन्य शब्द, जिनका आम तौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है, जैसे – रेडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, न्यूट्रॉन आदि;

छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक चिह्न और सूत्र जैसे, साइन, कोसाइन, टेन्जेन्ट, लॉग आदि (गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला में होने चाहिए);

2) प्रतीक, रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएँगे, परंतु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी, विशेषतः साधारण तौल और माप में लिखे जा सकते हैं, जैसे – सेंटीमीटर का प्रतीक cm. हिंदी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा परंतु इसका संक्षिप्त रूप से.मी. हो सकता है। यह सिद्धांत बाल-साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा परंतु विज्ञान और शिल्प-विज्ञान की मानक पुस्तकों में केवल अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक जैसे cm. ही प्रयुक्त होना चाहिए।

3) ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं, जैसे :

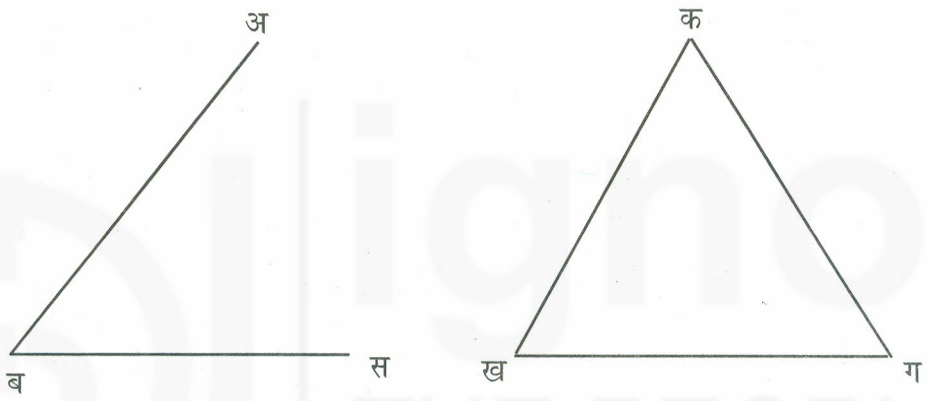

परंतु त्रिकोणमितीय संबंधों में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए, जैसे साइन A, क्रॉस B आदि।

4) संकल्पनाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का सामान्यतः अनुवाद किया जाना चाहिए।

5) हिंदी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता और सुबोधता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सुधार विरोधी और विशुद्धिवादी प्रवृत्तियों से बचना चाहिए।

6) सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में यथासंभव अधिकाधिक एकरूपता लाना ही इनका उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए ऐसे शब्द अपनाने चाहिए जो :

क) अधिक से अधिक प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त होते हों, और

ख) संस्कृत धातुओं पर आधारित हों।

7) ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग के वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे telegraph, telegram के लिए तार, continent के लिए महाद्वीप, atom के लिए परमाणु आदि। ये सब इसी रूप में व्यवहार किए जाने चाहिएँ।

8) अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे इंजन, मशीन, लावा, मीटर, लीटर, प्रिज़्म, टॉर्च आदि इसी रूप में अपनाए जाने चाहिएँ।

9) **अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण** – अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नए चिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े। अंग्रेजी शब्दों का देवनागरीकरण करते समय लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप हो और उनमें ऐसे परिवर्तन किए जाएँ जो भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित हों।

10) **लिंग** – हिंदी में अपनाए गए अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को, अन्यथा कारण न होने पर, पुल्लिग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए।

11) **संकर शब्द** – वैज्ञानिक शब्दावली में संकर शब्द, जैसे ionization के लिए आयनीकरण, voltage के लिए वोल्टता, ringstand के लिए वलय स्टैन्ड, saponifier के लिए साबुनीकारक आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय क्रिया के अनुसार बनाए गए हैं। ऐसे शब्द रूपों को वैज्ञानिक शब्दावली की आवश्यकता, सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।

12) **वैज्ञानिक शब्दों में संधि और समास** – कठिन संधियों का यथासंभव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन लगा देना चाहिए। इससे नए शब्द-रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी। जहाँ तक संस्कृत पर आधारित 'आदिवृद्धि' का संबंध है, 'व्यावहारिक', 'लाक्षणिक' आदि प्रचलित संस्कृत तत्सम शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है, परंतु नव-निर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है।

13) **हलंत** – नए अपनाए हुए शब्दों में आवश्यकतानुसार हलंत का प्रयोग करके उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए।

14) **पंचम वर्ण का प्रयोग** – पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करना चाहिए, परंतु lens, patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस, पेटेंट न करके लेन्स, पेटेन्ट ही करना चाहिए।

पारिभाषिक शब्दों के समतुल्य निर्धारित/निर्मित करने हेतु आयोग ने राष्ट्रीय लक्ष्य और भाषा-समाज की वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए इन सिद्धांतों को स्वीकृत करके अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली विकसित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्धारित उपर्युक्त सिद्धांतों को व्यवहार में लाने पर भाषा में शाब्दिक एकरूपता की स्थापना होगी और उसका मानकीकरण हो पाएगा। वहीं, साथ ही, इन सिद्धांतों की सहायता से विदेशी अथवा प्रादेशिक भाषाओं की तकनीकी शब्दावली का अनुवाद भी सरल हो जाएगा।

10.4 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की युक्तियाँ/तकनीकें

किसी भी नई संकल्पना का विकास, अभिव्यक्ति के लिए नए शब्द की माँग करता है। जिस भाषा में नई संकल्पना का विकास होता है, वह नए तकनीकी शब्द बनाती है। जो भाषाएँ इस विकास को ग्रहण करती हैं, वे उस शब्दावली को ग्रहण कर अपनी भाषा के व्याकरणिक विधानों आदि के अनुसार नए शब्दों का निर्माण करती हैं। इन तकनीकी शब्दों के निर्माण का अपना कोई अलग से व्याकरण नहीं होता है, अर्थात इनके निर्माण की प्रक्रिया सामान्य शब्दों की निर्माण-प्रक्रिया से पृथक नहीं होती। संरचनात्मक स्तर पर दोनों प्रकार के शब्दों में कोई अंतर न होने के कारण तकनीकी शब्दों की निर्माण प्रक्रिया भी सामान्य शब्द निर्माण प्रक्रिया की भाँति समान होती है।

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की दिशा में पहला प्रयास यह रहता है कि संकल्पना के व्यावहारिक अर्थ को व्यक्त करने वाला अपने भाषा-भांडार में उपलब्ध पर्याय का ही चयन किया जाए। इसी दृष्टिकोण के आधार पर अंग्रेजी के 'catharsis' तकनीकी शब्द के लिए हिंदी भाषा में 'विरेचन' शब्द लिया गया। इसी प्रकार 'hour' के समकक्ष 'घंटा' पर्याय निर्धारित किया गया, जबकि अंग्रेजी 'minute' और 'second' की संकल्पनाओं के द्योतक शब्द हिंदी भाषा-भंडार में पर्याय उपलब्ध न होने के कारण इन शब्दों को ग्रहण करते हुए उनका लिप्यंतरण कर दिया गया – 'मिनट' और 'सेकंड'। इसके अतिरिक्त, अपनी भाषिक व्यवस्था के अनुसार नई शब्द-रचना भी की जाती है। वैसे शब्द ग्रहण करने के अतिरिक्त अनुवाद का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के आयाम हैं – अंगीकरण, अनुकूलन, नव-निर्माण एवं अनुवाद। इन्हें पारिभाषिक शब्दावली की 'युक्तियाँ' अथवा 'तकनीकें' भी कहा जाता है।

चैंबर्स टेक्निकल डिक्शनरी में पारिभाषिक शब्दों को परिभाषित करते समय इनकी निर्माण की प्रक्रिया का संकेत मिलता है। इसमें यह उल्लेख मिलता है कि 'पारिभाषिक शब्दावली वस्तुतः विशेषज्ञों एवं तकनीकविदों के अपने

विशेष विचारों को लिपिबद्ध करने के लिए ग्रहण, अनुकूलन तथा निर्माण के द्वारा तैयार किए जाने वाले प्रतीक हैं।' (Technical words are in fact symbols, adopted or invented by specialists and technicians to facilitate the precise recording of their ideas. – Chambers Technical Dictionary) पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया के इन चारों आयामों -- अंगीकरण, अनुकूलन, नव-निर्माण एवं अनुवाद -- का विवेचन इस प्रकार है :

10.4.1 अंगीकरण (Principle of Adoption)

कुछ अंतर्राष्ट्रीय शब्द ऐसे हैं, जिनकी संकल्पना अत्यंत जटिल एवं दुरूह होती है। ऐसे शब्दों को अपनी भाषा में यथावत ग्रहण कर लेना अंगीकरण कहलाता है। कुछ विद्वानों ने इस रूप में गृहीत शब्दावली को 'उद्धृत शब्दावली' की भी संज्ञा दी है। इन शब्दों की विशेषता यह है कि ये पारिभाषिक शब्दावली के महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं, इसलिए इनके संबंध में ढीलापन नहीं अपनाया जा सकता। इनके अंतर्गत (क) नाइट्रोजन-ऑक्सीजन जैसे तत्वों-यौगिकों के नाम, (ख) मीटर, कैलोरी, डाइन, ऐम्पियर जैसे माप-तौल और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ, (ग) मैंजीफेरा इंडिका (आम/आम्र) जैसे वनस्पतिविज्ञान और प्राणिविज्ञान की द्विपदी नामावली (घ) डार्विन और मार्क्स जैसे व्यक्तियों के नाम पर निर्मित शब्द (जैसे डार्विनवाद, मार्क्सवाद आदि) (च) रेडियो, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन जैसे आम तौर पर सारे संसार में व्यवहृत शब्द (छ) π g जैसे स्थिरांक (ज) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिह्न, सूत्र, लॉग आदि आते हैं।

हिंदी भाषा की पारिभाषिक शब्दावली पर विचार करते हुए हम पाते हैं कि यह शब्दावली संस्कृत मूल अथवा परंपरागत एवं प्रयोग में प्रचलित शब्दों, उर्दू, अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं रूपी विभिन्न स्रोतों से समृद्ध हुई है। उदाहरण के लिए 'मंत्री', 'निरीक्षण', 'राष्ट्र', 'देश', 'निर्णय', 'सरकार', 'कृषि', 'दायित्व' आदि पूर्व-प्रचलित शब्दों अथवा संस्कृत मूल के शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली में स्थान दिया गया है। इसके साथ-साथ 'कच्चा माल', 'भत्ता', 'भाड़ा', 'बचत', 'भर्ती', 'कटौती', 'लागत', 'साख', 'समझौता', 'आँकड़े' आदि अनेक परंपरागत शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली में स्थान दिया गया। इसके अतिरिक्त, 'रसीद', 'अर्जी', 'दस्तावेज', 'जुर्माना' 'दावेदार', 'मुआवजा', 'कुर्की' आदि उर्दू शब्दों को पारिभाषिक अर्थ में गृहीत कर लिया गया। बांग्ला भाषा से 'साज गृह', तेलुगु से 'औत्साहिक', मलयालम से 'चिल्लर', कन्नड़ से 'निवल' और 'प्रतिष्ठान', मराठी से 'आवक', 'जावक' और 'पावती' आदि पारिभाषिक शब्द लिए गए हैं। अंग्रेजी से 'रेलवे', 'गार्ड', 'गैस', 'चौक', 'बोनस', 'वायरमैन', 'बिल', 'रेडियो', 'फिटर' आदि असंख्य शब्दों को ज्यों का त्यों स्वीकार करना, शब्दों के अंगीकरण का उदाहरण है।

इस प्रकार की गृहीत शब्दावली को देवनागरी में लिखने और उसे अपनी भाषा में प्रयुक्त करते समय मुख्य कठिनाई वर्तनी की आती है। उदाहरण के लिए, उच्चारण की दृष्टि से 'न्यूमोनिया', 'मैशीन', 'वाइटैमिन' आदि शब्दों की वर्तनी में भिन्नता देखने में नजर आती है। इनके स्थान पर इन शब्दों की हिंदी भाषा में क्रमशः 'निमोनिया', 'मशीन', 'विटामिन' के रूप में वर्तनी प्रचलित है। इसी प्रकार 'species' शब्द को 'स्पीशीज', 'स्पेशींज', 'स्पीशीज़' तथा 'स्पीसीज' एवं 'Glucose' (ग्लूकोज) के लिए 'ग्लूकोस' बोला-लिखा जाना भी वर्तनी संबंधी कठिनाई का द्योतक है।

हिंदी में, अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को अंगीकृत करने का यह अभिप्राय नहीं है कि हमारी अपनी भाषा में शब्द-निर्माण क्षमता का अभाव है। वास्तव में यह भाषिक विकास की एक सामान्य प्रक्रिया है। प्रत्येक भाषा इस दौर से अक्सर गुजरती है। अगर हम अंग्रेजी भाषा के संदर्भ में इस पक्ष पर विचार करें तो यह पाते हैं कि अंग्रेजी में दर्शन-योग, न्याय आदि से संबंधित अनेक भारतीय शब्दों का अंगीकरण हुआ है। इस प्रकार के कुछ शब्द हैं – Maya, Decoit, Yoga, Jungle, Chutney, Curry आदि। इसी प्रकार, अंग्रेजी में प्रचलित Brother शब्द जर्मन से, Position शब्द फ्रांसीसी से, Agile शब्द इतालवी से और Admiral शब्द अरबी भाषा से लिया गया है। अगर कोई शब्द अन्य माध्यम से भाषा तक पहुँचेगा तो उसमें थोड़ा-बहुत परिवर्तन नजर आ ही जाएगा। जैसे 'चंदन' और 'कपूर' जैसे भारतीय शब्द अंग्रेजी में अरबी भाषा के माध्यम से पहुँचे और क्रमशः Sandal और Campher हो गए। इसी भाँति, अंग्रेजी के 'chit' शब्द को देखा जा सकता है, जिसका उद्गम हिंदी का 'चिट्ठी' (chitty-chhitthi) शब्द है। और chity का संक्षिप्त रूप अंग्रेजी में chit हो गया। और इसी प्रकार, हिंदी का 'खाट', अंग्रेजी में cot हो गया। अंगीकृत शब्दों को लिप्यंतरित करते समय अपनी भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखा जाना आवश्यक होता है।

10.4.2 अनुकूलन (Principle of Adaptation)

अनुकूलन को 'रूपांतरण' भी कहा जाता है। शब्द के संदर्भ में अनुकूलन का अभिप्राय है – शब्द में यत्किंचित परिवर्तन करते हुए उसे अपनी भाषा के अनुरूप ढालना। शब्दों का अनुकूलन करते समय विदेशी भाषा के उस शब्द-विशेष को अपना मानकर चलने की मूल धारणा काम करती है। किंतु उस शब्द-विशेष को यथावत न लेकर उसका लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप विकास किया जाता है। अनुकूलन की यह प्रवृत्ति प्रत्येक भाषा की सहज-स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। यह अनुकूलन दो प्रकार से संभव हो फाता है :

क. अपनी भाषा के व्याकरणिक विधान के अनुसार प्रत्यय लगाकर शब्द को अनुकूलित कर लेना। उदाहरण के लिए हिंदी के शब्द 'संत' को अंग्रेजी भाषा ने ग्रहण कर लिया, किंतु उसका विकास अपनी भाषा के व्याकरण के अनुसार करते हुए Saint किया (न कि Sant)। इसी तरह से हिंदी का 'लूट' शब्द अंग्रेजी में Looting हो गया। अंग्रेजी में Brother शब्द जर्मन से, Position शब्द फ्रांसीसी से, Agile शब्द इतालवी से और Admiral शब्द अरबी भाषा से तो लिया गया है किंतु उनसे व्युत्पन्न शब्द क्रमशः Brotherhood, Positioned, Agileness, Admiralty अंग्रेजी के अपने व्याकरणिक-नियमों के अनुसार बने हैं।

   यदि हम हिंदी भाषा के संदर्भ में देखें तो अंग्रेजी के Voltage के लिए हिंदी भाषा में प्रयुक्त 'वोल्टता' शब्द देखा जा सकता है जो 'वोल्ट' के साथ 'ता' प्रत्यय के योग से निर्मित किया गया है। रजिस्ट्रीकरण (रजिस्ट्री + करण), आयनीकरण (आयन + करण), सिलिंडराकार (सिलिंडर + आकार), कंप्यूटरीकरण (कंप्यूटर + करण), नाइट्रोजनीकरण (नाइट्रोजन + करण), साबुनीकारक (साबुन + कारक), ऑक्सीकृत (ऑक्सी + कृत), शेयरधारक (शेयर + धारक), गैलवेनोमापी (गैलवेनो + मापी), गारंटीकर्ता (गारंटी + कर्ता), अपीलकर्ता (अपील + कर्ता), रेलगाड़ी (रेल + गाड़ी) आदि शब्द हिंदी के प्रत्यय आदि लगाकर निर्मित हुए शब्द हैं। मिश्रित रूप वाले ऐसे शब्दों को हिंदी में 'संकर शब्द' एवं अंग्रेजी में 'हाइब्रिड वर्ड्स' (Hybrids words) कहते हैं।

ख. शब्दों की ध्वनियों में थोडा-बहुत परिवर्तन करके शब्द का अनुकूलन करना। हिंदी भाषा में 'अकादमी', 'समन', 'फंतासी', 'संतरी', 'तकनीक', 'रपट', 'अपीलीय', 'गोदाम', 'त्रासदी', 'कामदी', और 'रिपोर्ताज' आदि शब्द अंग्रेजी के क्रमशः academy, summon, fantasy, sentry, technique, report, appellate, godown, tragedy, comedy और reportage शब्दों के ध्वनि-साम्य के आधार पर निर्मित शब्द हैं। इसी प्रकार, अंग्रेजी में प्रयुक्त Engine (एंजिन), Pound (फाउण्ड), Diesel (डिजेल), January (जैनुअरी), February (फैबररी), April (एप्रिल), August (ऑगस्ट), September (सेप्टेम्बर), October (ऑक्टोबर), November (नॉवेम्बर), December (डिसैम्बर) आदि शब्द ध्वनि-परिवर्तन के साथ हिंदी भाषा में क्रमशः 'इंजन', 'पौंड', 'डीजल', 'जनवरी', 'फरवरी', 'अप्रैल', 'अगस्त', 'सितंबर', 'अक्तूबर', 'नवंबर', 'दिसंबर' के रूप में व्यवहृत होते नजर आते हैं।

इस संदर्भ में यही कहा जा सकता है कि अपनी भाषा की ध्वनि व्यवस्था के अनुकूल गृहीत शब्द में हिंदी प्रत्यय लगाकर शब्द के अनुकूलन और उनकी ध्वनियों में यत्किंचित परिवर्तन कर अपनी भाषा में साम्य स्थापित करने की इस प्रवृत्ति से पारिभाषिक शब्दावली परिवार का विकास होता है। इनके प्रयोग से वाक्य-विन्यास में सहजता आती है। यह भाषा की जीवंतता का प्रमाण है, क्योंकि कोई भी भाषा अन्य भाषाओं से आए हुए शब्दों को अस्वीकार नहीं कर सकती।

10.4.3 नव-निर्माण

उन पारिभाषिक शब्दों के पर्यायों के लिए नव-निर्माण की आवश्यकता पड़ती है, जिनके समुचित पर्याय भारतीय भाषाओं में पहले से ही उपलब्ध न हों और जिनका अंगीकरण अथवा अनुकूलन संभव, सुलभ एवं उपयोगी न हो। ऐसी स्थिति में नए शब्दों के निर्माण संबंधी सिद्धांत को अपनाया जाता है।

आप इकाई-7 में यह अध्ययन कर चुके हैं कि हिंदी भाषा में शब्दों के प्रमुख स्रोत हैं – तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द। नए शब्दों के निर्माण के लिए लिए धातु में उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर एवं संधि-समास विधि का प्रयोग

करके शब्द बनाए जाते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक शब्द में इन सभी का अंश विद्यमान हो। इनमें से एक का भी हो सकता है, दो का भी और तीन, चार, पाँच का भी। किंतु इनके मेल से बना शब्द एक ही रहता है। नव–शब्द निर्माण का यह सबसे अधिक प्रचलित तरीका है और तमिल, लैटिन-ग्रीक आदि सहित कमोबेश सभी भाषाओं में यह पद्धति अपनाई जाती है। हिंदी में अनेक तकनीकी शब्दों का निर्माण इसी युक्ति के आधार पर किया गया है।

शब्दों के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि आठ भेद होते हैं। इनमें से चार भेदों को 'विकारी शब्द' कहा जाता है और चार को 'अविकारी शब्द' (अव्यय)। विकारी शब्दों की रूप-रचना में भाषिक व्याकरणिक आवश्यकताओं के लिए परिवर्तन होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि लिंग, पुरुष, वचन, कारक, क्रिया एवं विशेषण के अनुरूप शब्दों की रूप-रचना में बदलाव आ जाता है। हिंदी के शब्दों में पर्याप्त पारदर्शिता है। हिंदी भाषा में शब्द निर्माण के लिए अधिकांशतः संस्कृत भाषा का सहारा लिया जाता है क्योंकि इसमें शब्द-निर्माण का अनंत स्रोत है। संस्कृत भाषा की 520 धातुओं, 20 उपसर्गों एवं 80 प्रत्ययों की सहायता से लाखों-करोड़ों शब्द बनाए जा सकते हैं। इनके समुचित प्रयोग से पारिभाषिक शब्दों की क्रमबद्ध रचना तक की जा सकती है। अगर मूल धातु की जानकारी हो तो उपसर्ग-प्रत्ययों की सहायता से व्यक्ति स्वयं भी विशेषण, विशेष्य, क्रियाविशेषण आदि निर्मित कर सकता है। उदाहरण के लिए हिंदी के 'कर्षण अथवा खींचना' के अर्थ में अंग्रेजी का 'Traction' शब्द प्रयुक्त होता है। इस 'कर्षण' शब्द की व्युत्पत्ति 'कृष' धातु से हुई है। अगर 'कर्षण' शब्द में 'आ' उपसर्ग लगा दिया जाए तो अंग्रेजी के 'Attraction' शब्द के अर्थ का द्योतक 'आकर्षण' शब्द निर्मित हो जाएगा। और इसी प्रकार 'कर्षण' शब्द में 'वि' उपसर्ग लगने पर अंग्रेजी के 'Detraction' शब्द के अर्थ का द्योतक 'विकर्षण' शब्द निर्मित हो जाता है। इसी तरह से 'legal' शब्द के हिंदी पर्याय 'वैध' से पहले उपसर्ग लगाकर 'अवैध', 'वैधानिक', 'सांविधानिक' आदि पारिभाषिक शब्द निर्मित हुए हैं।

संकल्पनात्मक शब्दों के पर्याय निर्धारित करने के लिए नव-शब्द निर्माण पद्धति बहुत उपयोगी एवं व्यावहारिक है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शब्दावली के निर्माण-विकास में यह तकनीक खुलकर अपनाई गई है। 'प्रक्रम', 'प्रक्रिया', 'प्रशिक्षण', 'अनुबंध', 'अभिकलन', 'अपकेंद्री', 'अधिमानव', 'अपक्षय', 'अनुदान', 'अवक्षय', 'अनुक्रिया', 'अधितप्त', 'उपग्रह', 'प्रभारी', 'संशोधन', 'यांत्रिक', 'परिष्करण', 'गुरुत्व', 'आवर्ती', 'परिशोधन', 'उच्चतर', 'उत्प्रेरक', 'विकेंद्रित', 'पर्यावरण', 'निक्षेप', 'अवक्षेपण', 'चित्रित', 'युग्मित', 'भौतिकी', 'सहकारी', 'वरिष्ठतम' आदि अनेक शब्दों को इसी पद्धति से निर्मित किया गया है।

अर्थ की दृष्टि से नजदीक शब्दों के पर्याय निर्धारण में भी नव–शब्द निर्माण रूपी यह पद्धति उपयोगी सिद्ध होती है। उदाहरण के लिए, maintenance, preservation, reservation और conservation के लिए क्रमशः 'अनुरक्षण', 'परिरक्षण', 'आरक्षण' और 'संरक्षण' पर्याय निर्मित किए गए हैं। इसी प्रकार 'नियम', 'विनियम', 'अधिनियम', 'परिनियम'; 'रक्षक', 'संरक्षक', 'अभिरक्षक'; और 'प्राधिकार', 'प्राधिकारी', 'प्राधिकरण', 'प्राधिकृत' आदि शब्दों को देखा जा सकता है। यहाँ यह भी उल्लेख करना अनुचित न होगा कि शब्द अथवा धातु के साथ लगने वाले अधिकांश उपसर्ग-प्रत्यय किसी न किसी अर्थ अथवा अर्थ-छाया को अभिव्यक्त करते हैं। इससे नव-निर्मित शब्द के अर्थ को समझने में सहायता मिलती है।

उपसर्ग-प्रत्यय के अतिरिक्त संधियों द्वारा भी शब्द-निर्माण किया जाता है। यह संधि, शब्द की शब्द के साथ भी हो सकती है, उपसर्ग की शब्द के साथ भी और शब्द की प्रत्यय के साथ भी। गुरुत्व+आकर्षण से मिलकर बना शब्द 'गुरुत्वाकर्षण' के साथ शब्द-संधि का उदाहरण है। इसी प्रकार के अन्य उदाहरण हैं – नाम+अंकन = नामांकन, फल+उद्यान = फलोद्यान/फलोद्यान, अति+चालकता = अतिचालकता, स्वत्व+अधिकार = स्वत्वाधिकार, ध्यान+आकर्षण = ध्यानाकर्षण, विशेष+अधिकार = विशेषाधिकार, निः+वात = निर्वात आदि शब्द। दूसरी ओर, उपसर्ग के साथ शब्द की संधि के उदाहरण हैं – अधि+शासी = अधिशासी, उत्+प्रेरक = उत्प्रेरक, अनु+क्रिया = अनुक्रिया, परि+कलन = परिकलन, उप+अध्यक्ष = उपाध्यक्ष, वि+ किरण = विकिरण, सम+कुलपति = समकुलपति आदि। वहीं प्रत्यय के साथ शब्द की संधि के द्वारा निर्मित कुछ शब्द इस प्रकार हैं – जीव+इक = जैविक, सांख्य+इकी = सांख्यिकी, वाष्प+करण = वाष्पीकरण, ताप+मापी = तापमापी, यंत्र+इक = यांत्रिक, क्षार+इत = क्षारित, वाष्प+इत्र = वाष्पित्र, उद्योग+इक = औद्योगिक।

विदेशी शब्दों के लिए समास द्वारा भी शब्द-निर्माण की रीति अपनाई गई है। संस्कृतनिष्ठ शब्दों में प्रायः समास विधि को तो अपनाया ही जाता है, विदेशी भाषाओं के शब्दों के साथ हिंदी-संस्कृत के शब्द मिलाकर भी नव–शब्द निर्माण किया जाता है। 'Deputy Commissioner' शब्द के लिए निर्धारित हिंदी पर्याय 'उपायुक्त' इसी प्रकार का उदाहरण है। समास विधि में, नवनिर्मित शब्दों को लिखने की तीन रीतियाँ देखने में आती हैं :

1) नवनिर्मित शब्दों के बीच योजक चिह्न अर्थात हाइफन को लगाने की प्रवृत्ति (जैसे जनन-कोशिका, जलवायु-विज्ञानी, कार्यक्रम-निदेशक, विकृति-विज्ञानी, वन-संरक्षक आदि पारिभाषिक शब्द),

2) नवनिर्मित शब्दों को मिलाकर लिखने की प्रवृत्ति (जैसे भाषाविज्ञान, भूविज्ञानी, समाजशास्त्र, गृहविज्ञान, गृहकार्य, भूकंपलेखी आदि पारिभाषिक शब्द); और

3) शब्दों को पृथक-पृथक लिखने की प्रवृत्ति (जैसे राजनीति विज्ञान, गुलाब जल, पवन चक्की, आवास आयुक्त, मौसम विज्ञान आदि पारिभाषिक शब्द)।

पारिभाषिक शब्दों के पर्याय के निर्माण में यह भी उल्लेखनीय है कि एक ही शब्द के तत्सम-तद्भव रूप को भिन्न-भिन्न अर्थों में अपनाकर भी शब्दावली का विकास किया गया है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी 'steam' शब्द के लिए तद्भव शब्द 'भाप' और अंग्रेजी के 'vapour' शब्द के लिए तत्सम शब्द 'वाष्प' पर्याय निर्धारित किया गया है। इसी प्रकार, एक ही पारिभाषिक शब्द के लिए पृथक-पृथक संदर्भ-विशेष को व्यक्त करने के लिए भी पर्यायों में भेद किया गया है। उदाहरण के तौर पर, प्रशासन संबंधी पारिभाषिक शब्दावली में अंग्रेजी शब्द 'acknowledgement' को लिया जा सकता है जिसके लिए 'पावती' एवं 'अभिस्वीकृति' पर्याय निर्धारित किए गए हैं। इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण है – 'designation' शब्द, जिसके लिए 'पद' और 'पदनाम' पर्याय निर्धारित किए गए हैं। वहीं 'Registrar' पारिभाषिक शब्द संदर्भ के अनुसार 'कुलसचिव', 'पंजीयक' और 'रजिस्ट्रार' है। वैसे पर्यायों में विभेद करने के इस अंतर को वर्तनी में भिन्नता रखकर भी उजागर किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'Director' का पर्याय है – निदेशक, निर्देशक। प्रशासनिक पद के संदर्भ 'director' के लिए 'निदेशक' पदनाम लिखा जाता है जबकि किसी फिल्म-नाटक आदि के 'director' के लिए 'निर्देशक' पर्याय प्रयुक्त किया जाता है।

भारत में शब्दावली निर्माण का कार्य केंद्र सरकार के 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग' का है। शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में आयोग की अधिकारिता है। उसके द्वारा निर्मित पारिभाषिक शब्दों को विश्वसनीय माना जाता है और वे ग्राह्य है। धातु में उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर एवं संधि-समास विधि का प्रयोग करके नव–शब्द निर्माण संबंधी इस सिद्धांत को आयोग ने स्वीकार किया है।

10.4.4 अनुवाद (Translation)

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया में अनुवाद का भी सहारा लिया जाता है। तकनीकी शब्द के रूप में व्यक्त मूल संकल्पना को ग्रहण करने वाली भाषा के लिए वह ग्राह्य स्थिति बनाती है। किसी भी नई संकल्पना को दूसरी भाषा में व्यक्त करने के लिए शब्द को ग्रहण करते समय अनुवाद पद्धति के आधार पर राष्ट्रीय शब्दावली परिवार का विकास किया जाता है। इस विधि द्वारा निर्मित पारिभाषिक शब्दों को 'अनुवाद पर्याय' कहा जाता है। लगातार प्रयोग के कारण लक्ष्य भाषा-समाज पारिभाषिक शब्द के अनुवाद पर्याय को स्वीकार कर लेता है। 'जनसंचार माध्यम' (mass media), 'काला धन' (black money)', 'तृतीय विश्व' (third world), 'कार्यशाला' (workshop), 'हरित क्रांति' (green revolution), 'आर्थिक अन्वेषक' (economic investigator), 'गरीबी रेखा' (poverty line), 'शीत युद्ध' (cold war), 'स्वर्ण जयंती' (golden jubilee), 'रजत जयंती' (silver jubilee), 'हीरक जयंती' (diamond jubilee), 'पाँच तारा' (five star), 'कार्य बल' (Task force),'अम्लीय वर्षा' (acid rain), 'श्वेत पत्र' (white paper), 'पीत पत्रकारिता' (yellow journalism), 'विकास परिषद' (development council), 'वायु प्रदूषण' (air pollution), 'लौहपट' (iron curtain), 'अशासकीय टिप्पणी' (unofficial note) आदि अनेक पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में इसी अनुवाद पद्धति को अपनाया गया है।

इसी प्रकार, कभी-कभी तीन अथवा उससे अधिक शब्दों से निर्मित पारिभाषिक शब्द-समूह को भी अनूदित कर दिया जाता है। 'अपर केंद्र निदेशक' (Additional Station Director), 'पश्चिम एशिया शांति सम्मेलन' (West Asia Peace Conference), 'वातित जल कारखाना प्रबंधक' (Aerated Water Factory Manager), 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' (World Health Organisation), 'विश्व व्यापार संगठन' (World Trade Organisation), 'सहायक वाणिज्य प्रचार अधिकारी' (Assistant Commercial Publicity Officer), 'जल पूर्ति और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र' (Water Supply and Primary Health Centre) आदि शब्द, पारिभाषिक शब्द-समूह को अनूदित करने के उदाहरण हैं।

स्पष्ट है कि पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उल्लेखनीय है कि इस प्रक्रिया में शाब्दिक अनुवाद का आश्रय लिया जाता है अर्थात स्रोत भाषा के पारिभाषिक शब्द के समतुल्य लक्ष्य भाषा के शब्द को रख दिया जाता है। किंतु इसमें पर्याप्त सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है क्योंकि शब्द के मूल भाव को समझे बिना अनुवाद द्वारा पर्याय बना लेना कभी-कभी खतरनाक सिद्ध हो सकता है। उदाहरण के लिए, अनुप्रयुक्त विज्ञान की एक शाखा कंप्यूटर विज्ञान में programme शब्द प्रयुक्त होता है। इसका हिंदी पर्याय निर्धारित करते समय शब्दानुवाद का आश्रय लेने पर इसका अनुवाद 'कार्यक्रम' हो जाएगा, जबकि विषय-विशेष के संदर्भ में इसका वास्तविक अर्थ 'एक क्रम से दिए गए आदेश' है और इस आधार पर इसका भावानुवाद 'क्रमादेश' उपयुक्त है। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण है – outstation cheque जिसका भावानुवाद 'बाहरी चेक' ही उपयुक्त है। इसी भावानुवाद के आधार पर ही प्रशासन के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्द 'window envelope' के लिए 'पतादर्शी लिफाफा' पर्याय निर्धारित किया गया है। वस्तुतः पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में अगर इस पक्ष को नजरअंदाज करते हुए केवल शाब्दिक अनुवाद ही किया जाए तो कंप्यूटर विज्ञान के पारिभाषिक शब्द mouse का शब्दानुवाद 'चूहा' ही सामने नजर आएगा।

10.5 अखिल भारतीय शब्दावली

पारिभाषिक शब्दावली के बारे में अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो चुका होगा कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग हिंदी की तकनीकी शब्दावली के संकलन, निर्माण, समन्वय आदि की शीर्ष संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है। आयोग ने मानविकी और विज्ञान शाखाओं-उपशाखाओं अथवा कह सकते हैं विभिन्न विषयों/उप-विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के लिए मानक हिंदी पर्याय प्रस्तुत किए। आयोग ने विभिन्न विषयों के अनेक शब्द-संग्रह आदि प्रकाशित किए हैं। इन शब्द-संग्रहों में कई लाख शब्द समाविष्ट हैं। लेकिन, इस स्थिति के बावजूद आयोग ने पिछली शताब्दी के आठवें दशक में 'अखिल भारतीय शब्दावली' निर्मित करने अथवा पहचानने की योजना को अपनाया। यह स्वयं में विचारणीय प्रश्न है क्योंकि इतनी भारी संख्या में शब्द निर्माण के बावजूद आयोग को अखिल भारतीय शब्दावली तैयार करने की जरूरत क्यों हुई। इस पर विचार करते समय सबसे पहले अखिल भारतीय शब्दावली निर्माण की आवश्यकता पर विचार करना जरूरी है।

10.5.1 अखिल भारतीय शब्दावली निर्माण की आवश्यकता

इस इकाई के भाग 10.3 में आप वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों के विषय में पढ़ चुके हैं। इन सिद्धांतों को बनाने का मूल उद्देश्य यह था कि उनके आधार पर ऐसी पारिभाषिक शब्दावली विकसित की जाए जो सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं के लिए समान रूप से प्रयुक्त हो सके। इसी आधार पर विभिन्न विषयों की कई पारिभाषिक शब्दावलियाँ तैयार भी की गईं। किंतु समय बीतने के साथ-साथ यह देखा गया कि कुछ कारणों से आयोग का सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं के लिए समान पारिभाषिक शब्दावली के विकास संबंधी उद्देश्य पूरी तरह से सिद्ध नहीं हो पाया।

इसके मूल में निहित कारणों फर प्रकाश डालते हुए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. मलिक मोहम्मद ने 1987 में प्रकाशित भौतिकी की 'अखिल भारतीय शब्दावली' की प्रस्तावना में लिखा है कि 'इसका एक प्रत्यक्ष कारण तो यह था कि आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली को अपनाने, उसका अनुकूलन करने और व्यापक प्रचार करने के लिए राज्य स्तर पर एजेंसियाँ समय से स्थापित नहीं हो पायीं। परिणामस्वरूप शब्दावली के मामले में लेखकों और अनुवादकों को कोई प्रामाणिक स्रोत सामग्री उपलब्ध नहीं हो सकी। ऐसी स्थिति में जो

भी तकनीकी साहित्य उनके हाथ लगा, उन्होंने उसी में से पारिभाषिक शब्द ले लिए, भले ही वह साहित्य स्तरीय था अथवा नहीं। इससे भी बुरी बात यह हुई कि कुछ लेखकों ने कोश विज्ञान के मान्य सिद्धांतों को ध्यान में रखे बिना अनेक नए शब्द स्वयं गढ़ लिए। नतीजा यह हुआ कि आज हर भाषा में एक ही संकल्पना के लिए अनेक पर्याय प्रचलन में हैं।' वर्ष 2002 में आयोग द्वारा प्रकाशित 'समेकित अखिल भारतीय शब्द-संग्रह' की प्रस्तावना में भी आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. हरीश कुमार ने इन्हीं कारणों का उल्लेख किया है।

स्पष्ट है कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली को अपनाने, उसका अनुकूलन करने और व्यापक प्रचार-प्रसार करने का कार्य नहीं हो पाया। इसका नतीजा यह हुआ कि पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता बनी रही। इस स्थिति ने भारतीय भाषाओं की ऐसी तकनीकी शब्दावली की आवश्यकता पैदा कि जिसमें सभी भाषाओं में परस्पर समरूपता हो। इससे अखिल भारतीय स्तर पर तकनीकी शब्दावली में एकरूपता एवं समानता स्थापित हो सकती है। शब्दावली की इस समरूपता से उच्च शिक्षा और अनुसंधान के साथ-साथ वैज्ञानिक सूचना संप्रेषित करने और परस्पर आदान-प्रदान में सुविधा रहती।

समय की इस माँग को ध्यान में रखते आयोग ने विज्ञान तथा तकनीकी से संबंधित आधारभूत शब्दों के अखिल भारतीय पर्यायों की पहचान करने अथवा पर्याय निर्धारित करने की योजना पर काम करने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए इस संदर्भ में 1979 में बंगलौर विश्वविद्यालय में 'अखिल भारतीय शब्दावली' (Pan-Indian Terminology) विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की। इस संगोष्ठी में अखिल भारतीय शब्दावली विषय पर चर्चा हुई और इससे संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश निर्धारित किए गए। आयोग ने इस परियोजना पर 1980 से काम करना शुरू किया। इस योजना के अंतर्गत सभी राज्यों की भाषाओं से ऐसे शब्दों को संकलित करने की दिशा में काम किया गया, जिन्हें अखिल भारतीय प्रयोग के लिए स्वीकार किया जाए। इस योजना को राज्य पाठ्य-पुस्तक मंडलों के सहयोग से चलाया गया।

10.5.2 निर्माण की पद्धति

अखिल भारतीय शब्दावली निर्माण के लिए जिस पद्धति को अपनाया गया, उसमें सबसे पहले प्रयास यह किया गया कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग विषय-विशेष की आधारभूत शब्दावली की सूची को अंग्रेजी में तैयार करे। यह सूची उन शब्दों का संकलन होती, जिन्हें अखिल भारतीय प्रयोग के लिए स्वीकार किया जा सकता था। उसके बाद, तैयार सूची की प्रतियाँ देश के सभी राज्य पाठ्य-पुस्तक मंडलों को इस अनुरोध के साथ भेजी जाती कि वे इस सूची को अपने भाषायी क्षेत्र में किसी ऐसे विद्वान के पास भेजें जो विषय-विशेष का विशेषज्ञ तो हो ही, साथ ही वह अपनी भाषा में उस विशेष में व्यवहृत/प्रयुक्त होने वाले वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों से भली प्रकार से परिचित भी हो। वह विशेषज्ञ उसी सूची में शामिल अंग्रेजी में लिखित तकनीकी शब्दों के पर्याय अपनी भाषायी क्षेत्र की भाषा में से संकलित करता और फिर उन्हें आयोग के पास भेज देता था। भाषायी क्षेत्र की दृष्टि से ये स्वयं में मानक पर्याय होते थे।

लेकिन इतना कार्य करके वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा अखिल भारतीय शब्दावली के पर्याय निश्चित-निर्धारित नहीं कर लिए जाते। सभी राज्य पाठ्य-पुस्तक मंडलों से प्राप्त सूचियों में शामिल अंग्रेजी शब्दों के मानक पर्यायों को सारणीबद्ध करके उन्हें अखिल भारतीय संगोष्ठियों में भी प्रस्तुत किया जाता था। इन सूचियों में आयोग द्वारा उन शब्दों के लिए अनुमोदित पर्याय भी दिए रहते थे। इन संगोष्ठियों में राज्य पाठ्य-पुस्तक मंडलों द्वारा नामित विद्वान और कुछ भाषाविद आमंत्रित किए जाते थे। ये संगोष्ठियाँ देश के विभिन्न स्थलों पर आयोजित की जाती थीं। संगोष्ठियों में आमंत्रित विद्वान सारणीबद्ध पर्यायों में से उस शब्द को चुनने की कोशिश करते जो देश की सभी अथवा अधिकांश भाषाओं में स्वीकार्य हों। इसके अलावा, ऐसा भी होता कि यदि उपलब्ध विभिन्न पर्यायों में से कोई पर्याय कसौटी पर खरा नहीं उतरता तो संगोष्ठियों में आमंत्रित भाषाविद ऐसा नया पर्याय गढ़ने में मदद करते जो अखिल भारतीय स्तर पर व्यवहार में लाया जा सके। इस प्रक्रिया को अपनाकर आयोग अखिल भारतीय शब्दावली के पर्याय निर्धारण का कार्य संपन्न करता।

स्पष्ट है कि उक्त प्रक्रिया को अपनाकर आयोग ने संगोष्ठियों, प्रमुख विषय-विशेषज्ञों और भाषा-विशेषज्ञों आदि के मार्गदर्शन में अखिल भारतीय शब्दावलियाँ निर्मित करने की दिशा में कार्य किया। इस प्रकार संकलित, संपादित और निर्धारित विभिन्न विषयों के शब्द 'अखिल भारतीय शब्दावली' कहलाते हैं।

10.5.3 पहचान के सामान्य पक्ष और प्रकाशित शब्दावलियाँ

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संगोष्ठियों में विचार-विमर्श के दौरान कुछ सामान्य पक्ष भी उभरकर सामने आए। ये वे पक्ष थे, जिन्हें आधार रूप में स्वीकार करने पर अखिल भारतीय शब्दावली निर्धारण में मदद मिलती। आयोग ने इन्हीं पक्षों के आलोक में अखिल भारतीय शब्दावली संबंधी कार्य को आगे बढ़ाया। डॉ. मलिक मोहम्मद ने भौतिकी की 'अखिल भारतीय शब्दावली' की प्रस्तावना में इन पक्षों को उजागर किया है। उनके अनुसार, ये पक्ष हैं :

1. अंतर्राष्ट्रीय शब्द सभी को मान्य हैं।
2. अधिकांश ऐसे संस्कृत शब्द जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में बहुत अलग-अलग अर्थ नहीं देते, अखिल भारतीय स्तर पर प्रयोग के लिए स्वीकृत कर लिए जाते हैं।
3. फ़ारसी-अरबी से उद्धृत शब्द जो पहले से ही प्रचलित हैं, अधिकांश भारतीय भाषाओं द्वारा मान्य हैं।
4. यदि कोई शब्द किसी एक भी भाषा में अनादर सूचक अथवा अश्लील अर्थ का बोधक है तो वह एकदम अस्वीकृत कर दिया जाता है।
5. यदि किसी भाषा को कोई विशेष शब्द इसलिए मान्य नहीं होता, क्योंकि उसके स्थान पर पहले से कोई क्षेत्रीय शब्द इतना प्रचलित है कि उसे बदलना असंभव है तो ऐसी स्थिति में अपवादस्वरूप उस भाषा को अपने पूर्व-प्रचलित शब्द का प्रयोग करते रहने की छूट दे दी जाती है।

वर्ष 2002 में आयोग द्वारा प्रकाशित समेकित अखिल भारतीय शब्द-संग्रह की प्रस्तावना में भी आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. हरीश कुमार ने इन्हीं पक्षों का उल्लेख किया है।

'अखिल भारतीय शब्दावली' योजना के अंतर्गत आयोग ने संकलित अखिल भारतीय शब्दावलियों को विषयवार प्रकाशित किया है। आयोग ने सबसे पहले 1985 में 'अखिल भारतीय शब्दावली – खगोलिकी' प्रकाशित की। इसके पश्चात् अर्थशास्त्र और वाणिज्य, भूगोल, गणित, समाजविज्ञान एवं सांस्कृतिक नृविज्ञान (सभी 1986 में); भौतिकी (1987); जीवविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, रसायन विज्ञान, भाषाविज्ञान, समुद्रविज्ञान और भूविज्ञान (1990); शिक्षा, मनोविज्ञान तथा मनोरोगविज्ञान; सांख्यिकी (1991); प्रायोगिक भूगोल (1992); सिविल इंजीनियरी, मानव भूगोल (1993); भूविज्ञान (1995); आयुर्विज्ञान (1996) आदि विषयों की अखिल भारतीय शब्दावलियाँ प्रकाशित की गईं। आयोग इन शब्दावलियों को देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के विभिन्न विषयों के प्राध्यापकों, भाषाविदों, लेखकों, अनुवादकों, कोशकारों, पत्रकारों एवं राज्य के पाठ्य-पुस्तक निर्माण मंडलों को निःशुल्क वितरित करता है।

इसके अलावा, आयोग ने उक्त सभी अखिल भारतीय शब्दावलियों को एक ग्रंथ में उपलब्ध कराने की दिशा में भी काम किया। आयोग ने इसे 'समेकित अखिल भारतीय शब्द-संग्रह' (Comprehensive Glossary of Pan-Indian Terms) नाम से वर्ष 2002 में हरियाणा साहित्य अकादेमी के तत्वावधान में प्रकाशित किया। यह अंग्रेजी-रोमन-हिंदी में तैयार किया गया शब्द-संग्रह है। आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. हरीश कुमार इसके मुख्य संपादक थे।

10.6 सारांश

वास्तव में प्रत्येक भाषा-समाज को किसी भी नए विचार, संकल्पना अथवा स्थिति से साक्षात होने पर उसकी अभिव्यक्ति के लिए शब्दों की आवश्यकता होती है। इसके लिए परंपरागत, नवागत और नवनिर्मित शब्दों के माध्यम से शब्दावली परिवार को विकसित-समुन्नत किया जाता है। शब्दों को ज्यों का त्यों ग्रहण करने के रूप में 'अंगीकरण', विद्यमान शब्दों के परंपरागत अर्थ में विस्तार अथवा संकुचन लाते हुए उसके अर्थ-परिवर्तन/समायोजन, ध्वनिपरक अथवा संकर रूप में उसका 'अनुकूलन', धातुओं में उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर और संधि-समाज द्वारा 'नव शब्द-निर्माण' और शब्दों के 'अनुवाद' की तकनीक को अपनाकर जो पारिभाषिक शब्द निर्धारित किए जाते हैं वे शब्दावली-परिवार का अंग बनकर भाषा-विशेष की पारिभाषिक शब्दावली को समृद्ध करते हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने इन सभी का आधार लेकर पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया है। इस संदर्भ में उसने कुछ सिद्धांत भी निर्धारित किए हैं।

आयोग ने जब अपने द्वारा निर्धारित शब्दावली को सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं के लिए पूरी तरह से सिद्ध नहीं पाया तो उसने 'अखिल भारतीय शब्दावली' निर्माण की आवश्यकता को महसूस किया तथा कुछ विषयों की शब्दावलियाँ प्रकाशित कीं। भारत के उच्चतम न्यायालय ने आयोग द्वारा निर्धारित शब्दावली अपनाने संबंधी निर्णय दिया है। आज आवश्यकता इस बात की है आयोग द्वारा निर्धारित शब्दावली का प्रयोग किया जाए ताकि उसे अधिक से अधिक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो। ऐसा होने पर ही पारिभाषिक शब्दावली में स्थिरता संभव हो सकेगी।

10.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. पारिभाषिक शब्दावली संबंधी विभिन्न विचारधाराओं का परिचय दीजिए।
2. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों का अपने शब्दों में विवेचन कीजिए।
3. पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की विभिन्न युक्तियों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
4. अखिल भारतीय शब्दावली की अवधारणा और आयामों पर प्रकाश डालिए।

10.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- तिवारी, भोलानाथ, 1978. *पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ,* दिल्ली, शब्दकार।
- गुप्त, गार्गी (संपा.), 1992. *पारिभाषिक शब्दावली की विकास-यात्रा,* नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।
- कुमार, सुरेश (संपा.), 1997. *पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद,* आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान।
- शर्मा, गोपाल, 1968. *सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षा अध्ययन,* दिल्ली, एस. चाँद एंड कंपनी।
- टंडन, पूरनचंद एवं सेठी, हरीश कुमार, 1998. *अनुवाद के विविध आयाम,* नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- नगेंद्र (संपा.), 1993. *अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं अनुप्रयोग,* हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (संपा.), 1985. *अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ,* दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- कुमार हरीश (मुख्य संपा.), 2002. *समेकित अखिल भारतीय शब्द-संग्रह,* वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, पंचकूला (हरियाणा), नई दिल्ली और हरियाणा साहित्य अकादमी।
- विज्ञान गरिमा सिंधु, (शब्दावली विशेषांक) अंक 32, वर्ष 2000, नई दिल्ली, *वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग*।
- Savory, Thodore. *The Art of Translation*, Jonathan Cope, London, Thirty Bedford Square.

इकाई 11 पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद का संदर्भ

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता

11.3 अनुवाद के साधन के रूप में पारिभाषिक शब्दावलियाँ

11.4 अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली के चयन की प्रक्रिया और प्रासंगिकता

11.5 अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग की सहजता

11.6 अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग : जटिलता की समस्या तथा समाधान

11.7 सारांश

11.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

11.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता को समझ सकेंगे;
- अनुवाद के साधन के रूप में पारिभाषिक शब्दावलियों से परिचित हो सकेंगे;
- अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली के चयन की प्रक्रिया और प्रासंगिकता को जान सकेंगे;
- अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग की सहजता के बिंदुओं के बारे में जानकारी हासिल कर सकेंगे; और
- अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली-प्रयोग के संबंध में जटिलता की समस्या को समझ सकेंगे तथा उसके संभावित समाधान से परिचित हो सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में आप यह अध्ययन कर चुके हैं कि पारिभाषिक शब्द, सामान्य शब्द से विशिष्ट होते हैं। उनमें सुनिश्चित और विशिष्ट अर्थ सन्निहित होता है। संसार की समृद्ध भाषाएँ पारिभाषिक शब्दावली से संपन्न होती हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में पारिभाषिक शब्दों के बिना काम ही नहीं चल सकता। आप यह भी अध्ययन कर चुके हैं कि मौलिक उद्भावना के समय पारिभाषिक शब्दों का निर्माण देश-काल की परिस्थिति के कारण अपने आप हो जाता है। यह पारिभाषिक शब्दावली की 'सहज विकास प्रक्रिया' कहलाती है। लेकिन जब ज्ञान-विज्ञान को किसी अन्य भाषा से ग्रहण किया जाता है तब उससे संबंधित विशिष्ट जानकारी के साथ-साथ पारिभाषिक शब्द भी अपनी (लक्ष्य) भाषा में आते हैं। आगत पारिभाषिक शब्द के साथ साक्षात के बाद यह लक्ष्य भाषा-भाषियों पर निर्भर करता है कि वे उसके लिए नियोजित प्रक्रिया के जरिए किस प्रकार पर्याय निर्धारित करते हैं। यानी वे शब्द को यथावत ग्रहण करते हुए उसका लिप्यंतरण मात्र कर देते हैं, उसे अपनी भाषा के साँचे में ढालते हुए थोड़े-बहुत फेरबदल करके उसका अनुकूलन कर देते हैं, अपनी भाषा के व्याकरणिक नियमों के अनुसार उपसर्ग-प्रत्यय आदि की सहायता से नव–शब्द निर्माण करते हैं या फिर उसका अनुवाद करते हैं।

भारत में पारिभाषिक शब्दावली निर्मित करने की विकास प्रक्रिया मूलतः 'नियोजित विकास' प्रक्रिया अपनाई गई है। पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की इस नियोजित विकास प्रक्रिया संबंधी इस कार्य को केंद्र स्तर पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (Commission for Scientific and Technical Terminology) द्वारा संपन्न किया जा रहा है, ताकि अखिल भारतीय स्तर पर पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग में एकरूपता एवं मानकता स्थापित हो सके।

ज्ञान-विज्ञान के साहित्य को जब अनुवाद के जरिए अपनी भाषा में लाया जाता है तो अनुवादक के स्तर पर यह जरूरी हो जाता है कि उसे पारिभाषिक शब्दावली का समुचित ज्ञान हो। तभी वह उपयुक्त अनुवाद कर पाता है। इसके लिए जरूरी है कि उसे सामान्य शब्दों के अनुवाद और पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद में अंतर का बोध हो। सफल और सार्थक अनुवाद के लिए पारिभाषिक शब्दों का संचयन करना पड़ता है या कोश तैयार करना पड़ता है या फिर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार किए गए प्रामाणिक पारिभाषिक शब्द संग्रह का इस्तेमाल करना पड़ता है। कहने का अभिप्राय यह है कि पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद का आपस में घनिष्ठ संबंध है।

अनुवाद के संदर्भ में यह उल्लेख भी जरूरी है कि अनुवादक को यह जानकारी होनी चाहिए कि पारिभाषिक शब्दावलियों का चयन किस प्रकार करना चाहिए, ताकि वे स्रोत भाषा के संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रभावी रूप में तो व्यक्त कर ही सकें, साथ ही वह संदेश पूर्ण रूप से प्रासंगिक भी हो। पारिभाषिक शब्दावली का चयन करते समय उनकी आंतरिक प्रक्रिया और उनके संदर्भगत अर्थों का ज्ञान होना भी बहुत आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई में इन सभी पक्षों के आलोक में विचार किया जा रहा है। इस संदर्भ में सबसे पहले अनुवाद के संदर्भ पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता और महत्त्व के विषय में जानना जरूरी है।

11.2 अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता

आधुनिक युग में अनुवाद एक अनिवार्य आवश्यकता का रूप धारण कर चुका है। आज सभी क्षेत्रों में प्रचलित, प्रसारित और अभिव्यक्त तथ्यों को जानने के लिए अनुवाद एक सहज और महत्त्वपूर्ण साधन है। आप जानते हैं कि किसी भी देश के वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास से ही वहाँ की प्रगति और विकास का आकलन होता है। इसीलिए विश्व के सभी देशों में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और तकनीकी क्षेत्रों में विकास करने के लिए बहुत अधिक होड़ लगी रहती है। वैज्ञानिक अपने देश में बहुत से आविष्कार करते हैं। इन आविष्कारों में प्रयुक्त सामग्री और तकनीक उस देश की भाषा में लिपिबद्ध होती है। जब वैज्ञानिक उन्हें अपनी भाषा में लिपिबद्ध करते हैं तभी पारिभाषिक और तकनीकी शब्दावली की रचना भी होती है। उदाहरण के लिए, मार्कोनी ने इतालवी में अपने आविष्कारों को लिखा है तो मेरी क्यूरी ने पोलिश भाषा में अपने आविष्कारों का वर्णन किया है। इसी प्रकार, रूसी भाषा में स्पुतनिक के आविष्कार की कहानी मिलती हैं।

आप समझ सकते हैं कि जिस किसी भी देश में वैज्ञानिक एवं तकनीकी खोजें होती हैं, वहाँ की भाषा में उनके लिए नई तकनीकी शब्दावली की रचना भी होती है। पारिभाषिक शब्दावली के विकास की इस प्रक्रिया को 'सहज प्रक्रिया' का नाम दिया जाता है। इस प्रक्रिया के बारे में इस पाठ्यक्रम की इकाई 9 में आप विस्तार से अध्ययन कर चुके हैं।

यहाँ एक बात पर और ध्यान देना आवश्यक है कि सभी देशों में सभी प्रकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी आविष्कार नहीं होते हैं। इसलिए अन्य देश दूसरे देशों (जहाँ वैज्ञानिक एवं तकनीकी आविष्कार हुए हैं) के उन आविष्कारों के साथ-साथ उनकी पारिभाषिक शब्दावली से भी साक्षात करते हैं। वे उस पारिभाषिक शब्दावली को सीधे अथवा अनुवाद के माध्यम से ग्रहण करते हैं। किंतु, जिस देश में अनुवाद करने की नीति अथवा व्यवस्था नहीं होती है, वह अपने वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी संबंधी कार्य विदेशी भाषा में करते हैं। अपने देश में वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रौद्योगिकी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के लिए भारत सरकार ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत नई दिल्ली में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की है। यह आयोग इस संदर्भ में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ संचालित करता रहता है। जैसे, पारिभाषिक कोशों का निर्माण,

शब्दावली कार्यशालाओं का आयोजन, शब्दावली क्लबों की स्थापना आदि। आयोग शब्दावली का कंप्यूटरीकरण आदि शब्दावली के विकास एवं प्रकाशन के लिए भी अनेक कार्य करता है। स्पष्ट है कि पारिभाषिक शब्दावली के इस विकास के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया जाता है। यह योजनाबद्ध प्रयास ही 'पारिभाषिक शब्दावली का नियोजित विकास' का आधार बनते हैं। पारिभाषिक शब्दावली के नियोजित विकास के बारे में आप इसी पाठ्यक्रम की इकाई 9 में पहले ही पढ़ चुके हैं।

कुछ देशों की भाषा और पारिभाषिक शब्दावली बहुत अधिक समृद्ध एवं संपन्न है क्योंकि वहाँ विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मानविकी के क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति हुई है। विकसित देशों से प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनुवाद सबसे अधिक सहज साधन है। वैसे, विकसित देशों ने भी वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के लिए अन्य देशों की भाषाओं से अपने को समृद्ध एवं संपन्न किया है। उदाहरण के लिए हम देख सकते हैं कि 'मेडिकल एटिमालॉजी' ग्रंथ के संपादक ने आयुर्विज्ञान की पश्चिमी पारिभाषिक शब्दावली के विषय में विवेचन किया है। उनके अनुसार, 'एलोपैथ' शब्द ग्रीक भाषा से विकसित है – ग्रीक : allos – other Phathos - suffering। इस संदर्भ में उनका निम्नलिखित कथन विशेष तौर पर ध्यान देने योग्य है :

> The overwhelming majority of our medical terms stems from Greek, another sizable group is derived from Latin……
>
> Meanwhile a few of our words have other sources from the Arabic we derive a number of terms especially for our Pharma copia.
>
> e.g. : Alcohol - alkali
>
> Camphor - Naptha - Sinna
>
> Syrup - al-chemy - elixis
>
> A few simple words are of Scandinavian descent – ill, leg, skin, scab.
>
> From the French, we have adopted a number of medical terms unchanged or slightly modified – pippette, malaise, poison, venom.
>
> Some others are anglicized from the French words – goiter, gout, jaundice, ointment, physician, powder. Still came from the Greek via French, migraine, frenzy.
>
> For a few words we are indebted to Italian and Dutch.
>
> Italian - influenza, malaria
>
> Dutch - cough, sprue

(अनुवाद कला, डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, पृ. 64 से उद्धृत)

आप इस पाठ्यक्रम की इकाई 8 में यह अध्ययन कर चुके हैं कि पारिभाषिक शब्द वे शब्द होते हैं जो निश्चित सीमा में बँधे रहते हैं। ये शब्द सामान्य व्यवहार की अपेक्षा ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित होते हैं। इनकी अर्थ-सीमा निश्चित होती है। इनका विशिष्ट एवं निश्चित अर्थ होता है। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से परिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं। आप यह भी अध्ययन कर चुके हैं कि पारिभाषिक शब्द सदैव अभिधार्थ में व्यवहृत होते हैं, लक्ष्यार्थ अथवा व्यंजनार्थ में नहीं। ये शब्द विषय-सापेक्ष होते हैं। भौतिकी, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, गणित, राजनीति विज्ञान, इतिहास, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, साहित्यशास्त्र जैसे ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में प्रयुक्त शब्द पारिभाषिक हैं, और इनका अर्थ संबंधित शास्त्र, विज्ञान अथवा विषय के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। अर्थ संकोच की प्रवृत्ति होने के कारण ये शब्द सूक्ष्म अथवा विशिष्ट अर्थ के बोधक होते हैं। चूँकि पारिभाषिक शब्द सामान्य व्यवहार के लिए जन-जीवन में प्रयुक्त न होकर ज्ञान-विज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र से संबंधित होते हैं, इसलिए ऐसे शब्दों की अर्थ और प्रयोग संबंधी सीमाएँ निश्चित होती हैं। पारिभाषिक शब्द विशिष्ट विचार, भाव अथवा संकल्पना को व्यक्त करते हैं। ये शब्द मात्र पारिभाषिक अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए, भाषाविज्ञान में 'रूपिम', 'स्वनिम'(फोनिम); नाट्यशास्त्र में 'प्रकरी', 'पताका' आदि।

विषय-सापेक्ष होने के कारण ज्ञान-विज्ञान के साहित्य में इनका खूब प्रयोग होता है। इसलिए अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की अनेक प्रकार से आवश्यकता होती है। विशेष तौर पर साहित्येतर अनुवाद के क्षेत्र में पारिभाषिक शब्दावली महत्त्वपूर्ण हो जाती है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली होती है। पारिभाषिक शब्द सूक्ष्म अथवा विशिष्ट अर्थ के बोधक होते हैं। विशेष बात यह है कि ये अपने-अपने विषय-क्षेत्र में एक ही अर्थ में व्यवहृत होते हैं। विषय-सापेक्ष होने की वजह से शब्द अथवा शब्दावली एक होने पर भी विशेष संदर्भ में उनके अर्थ अलग-अलग हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, 'credit' शब्द बैंक में 'जमा' के अर्थ में प्रयुक्त होता है तो वाणिज्य-व्यापार में यही शब्द 'उधार' के अर्थ में और किसी औद्योगिक संस्था अथवा व्यक्ति आदि के लिए 'साख', 'श्रेय' के अर्थ में व्यवहृत होता है। इसी प्रकार, 'operation' शब्द चिकित्सा के क्षेत्र में 'शल्यक्रिया' के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जबकि सेवा के क्षेत्र में यह शब्द भिन्न अर्थ देता है (उदाहरण के लिए, 'श्वेत क्रांति' के संदर्भ में प्रयुक्त होने वाला शब्द 'operation flood')।

अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता विशेष रूप से होती है, क्योंकि इसके अभाव में सही अनुवाद किया ही नहीं जा सकता। यदि प्रयास किया भी जाए तो अनुवाद में मूल की अभिव्यंजना नहीं हो पाएगी अथवा निहित अर्थ का अनावश्यक विस्तार होने की आशंका बनी रहती है क्योंकि पारिभाषिक शब्द मूलतः अभिधेयार्थी होते हैं, उनका संक्षिप्त-सुनिश्चित अर्थ होता है। अनुवाद की पारिभाषिक शब्दावली की यथार्थ और पर्याप्त जानकारी रखना आवश्यक है। इसके लिए अनुवादक को अनेक प्रकार के कोशों-शब्दावलियों आदि की सहायता लेनी पड़ती है। कंप्यूटर से भी इस कार्य में बहुत अधिक सहायता मिलती है।

11.3 अनुवाद के साधन के रूप में पारिभाषिक शब्दावलियाँ

स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश को लक्ष्य भाषा में समग्र रूप में अनूदित करने की प्रक्रिया चुनौतियों से भरी श्रम-साध्य प्रक्रिया है। इसका कारण यह है कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति एक जैसी नहीं होती है और उनका गठन भी एकसमान नहीं होता। दोनों भाषाओं की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थितियों में भी पर्याप्त भिन्नता होती है। किसी एक भाषा में सहजता से प्रचलित कहावतें, किंवदंतियाँ, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि उस भाषा-विशेष की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और लोक-परिवेश से जुड़ी होती हैं। इसलिए दूसरी भाषा में पूर्ण रूप से अंतरण कई बार बहुत कठिन हो जाता है।

आप जानते हैं कि भारत एक बहुभाषा-भाषी देश है। भारत जैसी बहुभाषिकता संसार में कहीं नहीं हैं। देश में 1652 भाषाएँ व्यवहार में देखी गई हैं। भारत की इस बहुभाषिकता को संविधान में भी स्वीकृत किया गया है। संविधान की आठवीं अनुसूची को ही देखें तो इसमें भारत की 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है। ये भाषाएँ हैं – असमिया, बांग्ला, ओडिया, मणिपुरी, संथाली, बोडो, गुजराती, पंजाबी, डोगरी, कश्मीरी, सिंधी, मराठी, कोंकणी, संस्कृत, हिंदी, उर्दू, मैथिली, नेपाली, तमिल, मलयालम, कन्नड और तेलुगु। लेकिन बहुभाषिकता की इस स्थिति के बावजूद भारतीय संस्कृति, भारतीय समाज, भारतीय जीवन, भारतीय संप्रेषण व्यवस्था और भारतीय परंपरा में अखंडता उजागर होती है। भारत की बहुभाषिकता को देखते हुए विदेशी भाषाविदों ने यह सवाल उठाया कि भारत में इतनी अधिक भाषाओं का संप्रेषण कैसे होता है? इस प्रश्न के मूल में उनकी इस धारणा की व्याप्ति थी कि बहुभाषिकता से संप्रेषण में बाधा पड़ती है। किंतु इस संबंध में किए गए अध्ययन और व्यावहारिक अनुभव से यह स्पष्ट होता है कि भारत में बहुभाषिकता से संप्रेषण-व्यवस्था में कोई बाधा नहीं पड़ती है। दरअसल बात यह है कि भारतीय भाषाओं में एक सातत्य है, इनकी आर्थी और व्याकरणिक संरचना में परस्पर समरूपता है, इनके बीच बहुत से समान तत्त्व मिलते हैं। भारत की बहुभाषिकता आपस में बहुत अधिक घुली-मिली है। भारतीय भाषाओं में अंतःसंबंध बना रहता है। इनमें शब्दों और वाक्यों के स्तर पर अद्‌भुत समानता देखने को मिलती है।

अगर आप गौर करें तो यह पाएँगे कि सामान्य शब्दों में उपचार, औजार, खनिज पदार्थ, खाद्य और पेय पदार्थ, खेल, गहने-आभूषण, घर-गृहस्थी के सामान, तरकारियाँ, दिशाएँ, धर्म, न्यायालय, अदालत, पक्षी, पेड़-पौधे, पोषक, प्रकृति, फल-फूल, मनोरंजन, मसाला, माप-तौल, रंग, रिश्ते-नाते, रोग, व्यवसाय, शिक्षा आदि विषयक हजारों शब्द सभी भारतीय भाषाओं में लगभग समान रूप से इस्तेमाल होते हैं। इसे उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट किया जा

सकता है। उदाहरण के लिए, हिंदी भाषा के 'औषधि/दवा' शब्द और इसी के अर्थ में अन्य भाषाओं में व्यवहृत होने वाले निम्नलिखित शब्द देखिए :

भाषा	शब्द	भाषा	शब्द
हिंदी	औषधि, दवा	असमिया	औषध, दरब
पंजाबी	दवाई	ओड़िया	औषध
उर्दू	दवा	तेलुगु	नंदु, औषधमु
कश्मीरी	अशुद्, दवा	तमिल	मरुन्दु
सिंधी	दवा	मलयालम	मरून्नु
मराठी	औषध	कन्नड	मछु
गुजराती	दवा	संस्कृत	औषध
बांग्ला	ओशुध		

इसी प्रकार अन्य शब्दों के स्तर पर भी व्यवहारगत सामंजस्य नजर आता है। केवल शब्द के स्तर पर ही नहीं, विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच आर्थी और व्याकरणिक संरचना में भी परस्पर समरूपता अर्थात समान तत्वों को रेखांकित किया जा सकता है। यानी शब्दों की भाँति वाक्यों के स्तर पर भी अद्भुत समानता देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए, दो वाक्य -'नमस्ते! कहिए, आप कैसे हैं?' और 'बिल्कुल ठीक।' और इसी अर्थ में प्रयुक्त होने वाले अन्य विभिन्न भाषाओं के निम्नलिखित वाक्य देखिए :

भाषा	वाक्य-1	वाक्य-2
हिंदी	नमस्ते! कहिए, आप कैसे हैं?	बिल्कुल ठीक।
पंजाबी	सत श्री अकाल! सुणा कि हाल है?	बहुत चंगा।
उर्दू	आदाब अर्ज! मिजाजे शरीफ?	शुक्र है, खूब गुजरती है।
कश्मीरी	आदाब अर्ज! वारय् छिवु सा?	अहन् सा'वारय्।
सिंधी	राम राम! किहिडो हालु आहे?	ठीक आहे।
मराठी	राम राम! काय कसें काय?	ठीक आहे।
गुजराती	नमस्ते! केम छो?	सारूं छे।
बांग्ला	नॉमॉश्कार (नमस्कार)। केमोन् आछेन?	भालो आछि।
असमिया	नॉमॉश्कार (नमस्कार)। आपुनि केने आछे?	भालेइ आछों।
ओड़िया	नॉमॉम्स्काराँ (नमस्कार)। आपॉसॉ किपॉरि आँछान्ति?	भॉला आछि।
तेलुगु	नमस्ते! एंमडि एला गुन्नारु?	आं! अं ताबागाने उन्नारु।
तमिल	वण्णक्कम्! एन्नड एप्पडि इरूक्किङ्ग?	सौख्यमाह, इरूक्किरेन।
मलयालम	नमस्कार! सुखम् तन्ने यल्ले?	सुखम् तन्ने।
कन्नड	नमस्कार! चन्नागिद्दीरा?	इष्टरमट्टिगे।
संस्कृत	नमोनमः! अपि कुशलम्?	सर्वे साधु।

विभिन्न भारतीय भाषाओं के शब्दों और वाक्यों की उपर्युक्त तुलना-तालिकाओं में आपने गौर किया होगा कि उनमें व्यवहारगत सामंजस्य काफी हद तक है।

लेकिन, बहुभाषिकता की इस स्थिति के कारण हमें अनुवाद का सहारा लेना ही पड़ता है। वह सहारा भले ही औपचारिक रूप लिया जाए या फिर अनौपचारिक। यानी भाषेतर व्यक्ति से संप्रेषण के दौरान हम अनुवाद को ही माध्यम बनाते हैं। वह सहज अनुवाद (spontaneous translation) होता है। इसके अलावा, कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधायिका के साथ-साथ शिक्षा तथा ज्ञान-विज्ञान जैसे जीवन व्यवहार के विभिन्न औपचारिक क्षेत्रों

में भी अनुवाद का सहारा लिया ही जाता है। यह अनुवाद कार्य मनुष्य अपनी स्मरण-शक्ति के आधार पर करता है। किंतु इसकी भी एक सीमा होती है। इसलिए अनुवाद संबंधी कार्य को भली प्रकार से निपटाने के लिए अनुवादक को अनेक साधनों की आवश्यकता होती है।

अनुवाद कार्य करने के लिए अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा, दोनों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए क्योंकि अनुवाद करते समय भाषा एक महत्त्वपूर्ण पहलू होता है। परिवर्तनशीलता के कारण किसी भाषा में पूर्ण अधिकार पाना बहुत कठिन होता है। किसी एक भाषा का पर्याप्त ज्ञान तो हो सकता है किंतु वैसा ही अधिकार या ज्ञान दूसरी भाषा में होना प्रायः कठिन है। इसीलिए ठीक-ठीक अनुवाद करने के लिए सहायक सामग्री की आवश्यकता पड़ती है। इनमें से कोश सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन सिद्ध होते हैं। अनुवाद करते समय किसी शब्द के अर्थ पर या निहितार्थ पर संदेह होने पर तुरंत कोश की सहायता लेना ही उचित एवं समयापेक्षी होता है। अनुवादक के लिए यह सावधानी अपेक्षित होती है कि वह शब्द के उपयुक्त अर्थ को भली प्रकार से समझ कर ही अनुवाद करे।

कोशों के प्रकार से संबंधित इकाई-2 में आप यह अध्ययन कर चुके हैं कि कोश भाषिक भी होते हैं और भाषिकेतर भी। भाषिक कोशों में पर्याय कोश, बोली कोश, अभिव्यक्ति कोश, लोकोक्ति-मुहावरा कोश आदि मुख्य हैं। इन कोशों में भाषा के शब्दों और अभिव्यक्तियों के अर्थ तथा प्रयोग को उनके संदर्भों के साथ दिया जाता है। भाषिकेतर कोशों में साहित्य कोश, दर्शन कोश, विज्ञान कोश, पुराण कोश, विश्वकोश आदि को शामिल किया जाता है।

अनुवाद कार्य में जहाँ विभिन्न प्रकार के शब्दकोशों की जरूरत पड़ती रहती हैं, वहीं पारिभाषिक शब्द संग्रहों तथा तकनीकी परिभाषा कोशों की भी आवश्यकता पड़ती रहती है। अनुवादक को जब विशिष्ट क्षेत्र अथवा विषय से संबंधित सामग्री का अनुवाद करना होता है तो उसे स्रोत भाषा के उस विषय-विशेष की पारिभाषिक शब्दावलियों के लिए लक्ष्य भाषा में समानार्थक शब्द प्राप्त करने की आवश्यकता पड़ती है और इसकी पूर्ति तकनीकी परिभाषा कोश और पारिभाषिक शब्द संग्रहों (Technical glossaries) से ही हो सकती है। ऐसे में पारिभाषिक शब्द संग्रह आदि अनुवादक के लिए महत्त्वपूर्ण साधन-उपकरण सिद्ध होते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के 'issue' शब्द के लिए सामान्य अर्थ-संदर्भ में 'संतान', 'समस्या', 'मुद्दा', 'जारी करना' आदि शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं। किंतु प्रशासन के क्षेत्र में इसके लिए 'निर्गम' शब्द व्यवहृत होता है और पत्रकारिता के संदर्भ में इसके लिए 'अंक' तथा वाणिज्य-पूँजी बाजार आदि अर्थशास्त्र के क्षेत्र में 'शेयर जारी करना' प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रकार की जानकारी एवं क्षेत्र के अनुसार पर्याय-विकल्प अनुवादक को पारिभाषिक शब्दावली संग्रह आदि के जरिए उपलब्ध हो पाते हैं।

11.4 अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली के चयन की प्रक्रिया और प्रासंगिकता

इस इकाई की प्रस्तावना से संबंधित भाग 11.2 में यह उल्लेख किया जा चुका है कि अनुवाद के संदर्भ में यह जरूरी होता है कि अनुवादक को यह जानकारी हो कि पारिभाषिक शब्दावलियों का चयन इस प्रकार किया जाए कि वे स्रोत भाषा के संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रभावी रूप में तो व्यक्त कर ही सकें, साथ ही वे पूर्ण रूप से प्रासंगिक भी हों। पारिभाषिक शब्दावली का चयन करते समय अनुवादक की आंतरिक प्रक्रिया और उसके संदर्भगत अर्थ का ज्ञान होना भी जरूरी है। अनुवाद के संदर्भ में यह माना जाता है कि उसका मूल के निकट अथवा अधिक से अधिक समतुल्य होना श्रेष्ठ है। अनुवादक इस समतुल्यता को बनाए रखना का प्रयत्न करता है। ज्ञान-विज्ञान के साहित्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का समतुल्य प्रयोग अनुवादक के लिए अपेक्षित ही नहीं अनिवार्य भी है। इस संदर्भ में यह आवश्यक है कि स्रोत भाषा की पारिभाषिक शब्दावलियाँ लक्ष्य भाषा में उपयुक्त रीति से अनूदित हों।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की युक्तियों के संबंध में आप पिछली इकाई संख्या 10 में पढ़ चुके हैं। आपको याद होगा कि अंगीकरण, अनुकूलन, नवनिर्माण और अनुवाद की प्रक्रिया को अपना कर पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया जाता है। इन्हीं के आलोक में यह कहा जा सकता है कि अनुवाद करते समय पारिभाषिक शब्दावली के लिए समतुल्य चयन की प्रक्रिया में अंतर्राष्ट्रीय शब्दावलियों के चयन में यह ध्यान रखना चाहिए कि यथासंभव उनके प्रचलित रूप को ही हिंदी में लिप्यंतरित करके अपनाया जाए। इस प्रकार, लिप्यंतरण भी एक प्रकार से

अनुवादक के लिए महत्त्वपूर्ण अनुवाद-साधन है। हिंदी में इस प्रकार के शब्दों का काफी प्रयोग किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित पारिभाषिक शब्द और उनके लिप्यंतरित रूप देखिए :

Radio	-	रेडियो	File	-	फाइल
Radar	-	राडार	Bank	-	बैंक
Petrol	-	पेट्रोल	X-ray	-	एक्सरे
Cement	-	सीमेंट	Battery	-	बैटरी
Company	-	कंपनी	Engine	-	इंजन
Meter	-	मीटर	Diesel	-	डीजल
Rail	-	रेल	Station	-	स्टेशन
Bus	-	बस	Ticket	-	टिकट
Car	-	कार	Hockey	-	हॉकी
Kaymogram	-	काइमोग्राम (तरंग लेख)	Cricket	-	क्रिकेट
Pidgin	-	पिजिन (मिश्र भाषा)	Harmonium	-	हारमोनियम

जो पारिभाषिक शब्दावलियाँ पूरे विश्व में व्यवहृत होती हैं, उन्हें लिप्यंतरित करके अनुवाद में प्रयुक्त करना अपेक्षाकृत अधिक प्रासंगिक है। इससे पारिभाषिक शब्द-विशेष की संकल्पना, अर्थ एवं भाव के संप्रेषण में आसानी रहती है क्योंकि यह पहले से ही लक्ष्य भाषा परिवेश में रच-बस चुका होता है। उदाहरण के लिए, 'सीमेंट' के अनूदित रूप 'वज्रचूर्ण' में मूल जैसा न तो संप्रेषण भाव है और न ही सुगमता भी। इसी प्रकार, 'कंपनी' का अनूदित समतुल्य 'समवाय' की तुलना में इसे लिप्यंतरित रूप में ग्रहण करना अधिक सुविधाजनक है। हालाँकि, इस संबंध में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा पारिभाषिक शब्दों के निर्माण सिद्धांतों को भी ध्यान में रखना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के संदर्भ में आयोग ने यह सिद्धांत अपनाया है कि

1) अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं :
   - क) तत्वों और यौगिकों के नाम जैसे हाइड्रोजन, कार्बन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि;
   - ख) तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ, जैसे डाइन, कैलोरी, ऐम्पियर आदि;
   - ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं जैसे फ़ारेनहाइट के नाम पर फ़ारेनहाइट तापक्रम, वोल्टा के नाम पर वोल्टमीटर और ऐम्पियर के नाम पर ऐम्पियर आदि;
   - घ) वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली;
   - ङ) स्थिरांक जैसे π g आदि;
   - च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आम तौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है जैसे रेडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, न्यूट्रॉन आदि;
   - छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक चिह्न और सूत्र जैसे, साइन, कोसाइन, टेन्जेन्ट, लॉग आदि (गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला में होने चाहिए);

अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि 'अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नए चिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े। अंग्रेजी शब्दों का देवनागरीकरण करते समय लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप हों और उनमें ऐसे परिवर्तन किए जाएँ जो भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित हों।' कहने का अभिप्राय यह है कि विदेशी पारिभाषिक शब्दावलियों को कभी-कभी लिप्यंतरित करने के दौरान उन्हें हिंदी ध्वनियों के अनुसार अनुकूलित कर लिया जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा भी संप्रेषणीयता और प्रासंगिकता बनी रहती है। उदाहरण के लिए,

- Academy - अकादमी
- Technique - तकनीक
- Tragedy - त्रासदी
- Reportage - रिपोर्ताज

जैसा कि आप जानते ही हैं, पारिभाषिक शब्दावलियों के चयन में सहजता और सुगमता के साथ-साथ संकल्पना-संप्रेषण और प्रयोगजन्य सरलता का होना आवश्यक है।

आपको अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली का चयन संदर्भ-विशेष के अनुसार ही करना चाहिए। समानार्थक अथवा पर्याय होने पर भी उपसर्गों और प्रत्ययों से निर्मित पारिभाषिक शब्द अलग-अलग अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं। इसलिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित पारिभाषिक शब्द देखिए :

- Vice President - उपाध्यक्ष/उपराष्ट्रपति
- Sub-Inspector - उप-निरीक्षक
- Deputy Commissioner - उपायुक्त
- Joint Director - संयुक्त निदेशक
- Assistant Registrar - सहायक कुलसचिव

हालाँकि Vice, Sub और Deputy उपसर्ग समानार्थक हैं। किंतु उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि समानार्थक होने के बावजूद Vice, Sub और Deputy उपसर्गों से पृथक-पृथक पारिभाषिक शब्द बनते हैं।

अंग्रेजी के Chief शब्द से, हिंदी में निर्धारित कुछ समतुल्य (अनूदित) पारिभाषिक शब्दों को देखिए :

- Chief Controller - मुख्य नियंत्रक
- Chief of Air Staff - वायु सेनाध्यक्ष
- Chief of Engineering Services - इंजीनियरी सेवा प्रमुख
- Chief of Materials - चीफ ऑफ मैटीरियल्स

उपर्युक्त उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि एक ही उपसर्ग 'chief' प्रयुक्त करने के बावजूद उसके हिंदी 'मुख्य', 'अध्यक्ष', 'प्रमुख' और 'चीफ' शब्द प्रयुक्त किए गए हैं। दूसरी ओर, उपसर्ग और प्रत्यय, दोनों रूपों में प्रयुक्त अंग्रेजी के General शब्द से हिंदी में जो समतुल्य (अनूदित) पारिभाषिक शब्द निर्मित होते हैं, उनमें से कुछ को उदाहरण के तौर पर देखिए :

- General election - आम चुनाव
- General Manager - महाप्रबंधक
- General Secretary - महासचिव
- General knowledge - सामान्य ज्ञान
- Director General - महानिदेशक
- Attorney General - महान्यायवादी

उपर्युक्त उदाहरणों में आपने गौर किया होगा कि General शब्द पहले चार उदाहरणों में उपसर्ग के रूप में और अंतिम दो में प्रत्यय (परसर्ग) के रूप में प्रयुक्त हुआ है। वहीं आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि इन उपसर्गों और प्रत्ययों से निर्मित पदनामों के हिंदी अनुवाद में यह 'General' शब्द केवल 'उपसर्ग' रूप में ही प्रयुक्त हुआ है।

अनुवाद करते समय एक ही अंग्रेजी तकनीकी शब्द के लिए एक से अधिक पर्याय भी मिलते हैं। इसी प्रकार एक ही अंग्रेजी तकनीकी शब्द के लिए पृथक-पृथक विषय क्षेत्रों अथवा संदर्भों में पृथक-पृथक पर्यायों का भी

आवश्यकता के अनुसार चयन करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित पारिभाषिक शब्द और उनके विषय-क्षेत्र अथवा संदर्भ के अनुसार भिन्न हिंदी पर्याय देखिए :

Charge	:	कार्य-भार (प्रशासन) व्यय (लेखा) धावा (राजनीति) आरोप (विधि)
Credit	:	साख (वाणिज्य) उधार, ऋण (अर्थशास्त्र) श्रेय, आभार (साहित्यशास्त्र)
Balance	:	शेष, बकाया (बैंक, व्यापार) तराजू संतुलन
Bar	:	सिल्ली (साबुन, आइसक्रीम) मयखना (मदिरालय) विधेयक (प्रशासन)
capital	:	पूँजी (व्यापार) बड़े अक्षर (अंग्रेजी भाषा) राजधानी
Section	:	धारा (विधि) अनुभाग (प्रशासन) वर्ग (कक्षा)
production	:	उत्पादन (वाणिज्य, अर्थशास्त्र) निर्माण, प्रस्तुति, प्रस्तुतीकरण (पत्रकारिता, रंगमंच) प्रयोग (रंगमंच)
principal	:	प्राचार्य (शिक्षा) प्रधान (प्रशासन) मूलधन (बैंकिंग) मालिक, स्वामी
repertory	:	सूचीपत्र (वास्तुकला) भंडार, निक्षेपागार (पुरालेख) वस्तु सारणी (सांस्कृतिक नृविज्ञान) संग्रह (पुस्तकालय विज्ञान) नाटकचक्र; नटचक्र, नटाली (समालोचना)
candidate	:	अभ्यर्थी, उम्मीदवार, पदाभिलाषी, प्रार्थी
manual	:	पुस्तिका, दीपिका नियम पुस्तक, नियमावली कायिक, शारीरिक, हस्त
play	:	क्रीड़ा, खेल नाटक

introduction	:	परिचय प्रस्तावना विषय-प्रवेश पुरःस्थापना
native	:	मूल निवासी प्राकृतिक, सहज देशी, देशज, देशीय
movement	:	आंदोलन संचलन गतिविधि
holding	:	धारण जोत शेयर पूँजी धारित राशि, धृति
government house	:	(राज्य में) राजभवन (केंद्र में) राष्ट्रपति भवन
effective	:	प्रभावी, कारगर वास्तविक

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजी के तकनीकी शब्द-विशेष के लिए भिन्न-भिन्न विषय-क्षेत्रों अथवा संदर्भों में अलग-अलग पर्यायों का चयन करना जरूरी हो जाता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक को चाहिए कि वह मूल पाठ में आए पारिभाषिक शब्दों के संदर्भ एवं अर्थ को ठीक से समझकर उपयुक्त पर्याय का ही चयन करे।

पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद में यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता होती है कि उनके उपयुक्त और मानक रूपों का चयन किया जाए। कुछ अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के हिंदी में एकाधिक रूप प्रचलित हैं। ऐसे में अनुवादक को यह ध्यान रखना होता है कि वह प्रसंग के अनुसार उनमें से उपयुक्त पर्याय का ही चयन करे। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित पारिभाषिक शब्द और उनके पर्याय देखिए :

- Attestation : अनुप्रमाण, प्रमाणीकरण, अभिप्रमाणन, अभिप्रमाणीकरण।
- Surplus : अतिशेष, अधिक, अतिरिक्त, बेशी।
- True copy : सही प्रतिलिपि, सत्य प्रतिलिपि, सच्ची प्रतिलिपि।

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि शब्द के अनेक समानक रूप हैं। इनमें से एक मानक रूप का चयन करना होता है। उदाहरण के लिए, उपर्युक्त Attestation, Surplus और True copy के लिए क्रमशः 'अभिप्रमाणीकरण', 'अतिरिक्त' और 'सत्यप्रतिलिपि' मानक रूप हैं।

इस भाग का अध्ययन करने के पश्चात आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद को मूल (अर्थात स्रोत भाषा की सामग्री) के अधिक से अधिक समतुल्य होना उपयुक्त है। आपको यह भी पता चल गया है कि पारिभाषिक शब्दावलियों का अनुवाद सामान्य अनुवाद से कुछ अलग होता है, क्योंकि पारिभाषिक शब्दों में विशिष्ट संकल्पना निहित रहती है और अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना होता है कि वह समूची संकल्पना भी अनूदित हो जाए। विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय शब्दावलियों के बारे में ध्यान देने की जरूरी होती है। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावलियों को लक्ष्य भाषा में लिप्यंतरित रूप में स्वीकार कर लेना ठीक होता है। ऐसा करने से मूल शब्द में निहित संकल्पना, अर्थ एवं भाव के संप्रेषण में सहजता और बोधगम्यता रहती है।

अंतर्राष्ट्रीय शब्दावलियों को लक्ष्य भाषा में लिप्यंतरित रूप में स्वीकार करने के अलावा अन्य विदेशी पारिभाषिक शब्दावलियों पर भी विचार करें तो यह भी विकल्प रहता है कि उन्हें अनुकूलित रूप में भी स्वीकार कर लिया जाए। इनके अनुकूलन से संप्रेषणीयता और प्रासंगिकता बनी रहती है। इस संबंध में पहले ही दिए गए उदाहरणों (जैसे 'academy', 'technique' आदि को क्रमशः 'अकादमी', 'तकनीक' रूप में अनुकूलित करना) के मूल में यही संप्रेषणीयता और प्रासंगिकता देखी जा सकती है।

आपने यह भी देखा कि पारिभाषिक शब्दावलियों के अनुवाद में मानक रूपों का चयन किया जाता है। जैसे 'Surplus' के लिए हिंदी में 'अतिशेष', 'अधिक', 'अतिरिक्त', 'बेशी' आदि समानार्थक शब्दों में से 'अतिरिक्त' को ग्रहण करना उपयुक्त है।

आप यह भी समझ चुके हैं कि पारिभाषिक शब्दावलियों के निर्माण में सहजता का विशेष ध्यान रखा जाता है ताकि शब्दावली के स्तर पर भाषा में दुरूहता अथवा जटिलता न आ सके। हमें यह भी ध्यान रखना होता है कि पारिभाषिक शब्दावलियों का चयन संदर्भ-विशेष के अनुसार ही किया जाता है, समानार्थक अथवा पर्याय होने के कारण नहीं। उदाहरण के लिए, 'vice president' का अनुवाद 'उपाध्यक्ष' और 'उपराष्ट्रपति' दोनों हैं। इसलिए 'vice president' का अनुवाद प्रसंग के अनुसार जो भी उपयुक्त हो, करना चाहिए।

11.5 अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग की सहजता

अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो चुका होगा कि पारिभाषिक शब्दावली में विशिष्ट और नवीन अर्थ आरोपित रहता है, इसलिए अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से इनमें कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियाँ एवं गुण होते हैं। इसी कारण पारिभाषिक शब्दावली, सामान्य अथवा अपारिभाषिक शब्दावली से पृथक हो जाती है।

अक्सर यह कहा जाता है कि पारिभाषिक शब्दावली जटिल होती है, वह सहज बोधगम्य नहीं होती है। हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के लिए विशेष रूप से इस प्रकार की बात कह दी जाती है। इकाई के इस भाग में हम यही विचार करेंगे कि पारिभाषिक शब्दावली की कठिनता का प्रश्न क्यों है और किसके लिए उठता है? साथ ही हम यह भी विचार करेंगे कि इस संबंध में वास्तविकता क्या है।

आप यह जानते हैं कि यदि भाषा की प्रकृति के अनुकूल पारिभाषिक शब्दावली निर्मित होती है तो सहजता से स्वीकृत हो जाती है और जटिलता की बात भी नहीं आती है।

आप जानते हैं कि जिस प्रकार शब्दावली के निर्माण, ग्रहण, अनुकूलन और अनुवाद में सतर्कता बरती जाती है, उसी प्रकार उसके प्रयोग में भी सतर्कता की आवश्यकता होती है। अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग के संदर्भ में निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देने की जरूरत है :

1. अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते समय स्रोत भाषा के अत्यधिक प्रभाव से बचना चाहिए क्योंकि यह जरूरी नहीं है कि स्रोत भाषा में विभिन्न विज्ञानों और शास्त्रों में एक पारिभाषिक शब्द का प्रयोग जिन अर्थों में होता है तो लक्ष्य भाषा में भी उन विज्ञानों और शास्त्रों में भी एक ही शब्द उन्हीं अर्थों में प्रयुक्त हो। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी में 'root' शब्द का प्रयोग वनस्पतिविज्ञान (Botony) और व्याकरण (Grammar), दोनों में पृथक-पृथक अर्थों में होता है। किंतु हिंदी में इन दोनों विषयों में इस शब्द का प्रयोग इन अर्थों में नहीं होता है। हिंदी में वनस्पतिविज्ञान में 'जड़' (root) तथा व्याकरण में 'धातु' (root) शब्दों का प्रयोग होता है।

   इसी प्रकार, अंग्रेजी का 'function' शब्द हिंदी में प्रशासन (Administration) के क्षेत्र में 'कार्य' और 'समारोह' के अर्थ में तथा विधि (Law) में 'कृत्य' के अर्थ में तथा भाषाविज्ञान (Linguistics) में 'प्रकार्य' के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

   आइए, एक और उदाहरण लेते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी में एक शब्द है – 'margin', जिसका हिंदी में वाणिज्य (Commerce) के क्षेत्र में 'गुंजाइश', 'पड़ता', 'लाभ', 'अंतर' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जबकि

यही शब्द मुद्रण (Printing) के क्षेत्र में 'हाशिया' या 'उपांत' के अर्थ में और वास्तुकला (Architecture) के क्षेत्र में 'प्रांत पट्टी' के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

यही स्थिति हिंदी में भी है। अंग्रेजी में विभिन्न विषयों में अलग-अलग प्रयुक्त होने वाले शब्दों के लिए हिंदी में एक ही शब्द है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी में धातुविज्ञान में 'metal', आयुर्विज्ञान में 'element' और भाषाविज्ञान में 'root' है, जबकि इन सभी विज्ञानों में हिंदी में एक ही शब्द अर्थात 'धातु' शब्द का ही प्रयोग होता है।

2. अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग में यह सावधानी बरतनी चाहिए कि वे प्रथम दृष्ट्या सामान्य रूप से जो अर्थ व्यक्त करते हैं, पारिभाषिक संदर्भों में वह अर्थ असंगत तो नहीं है। उदाहरण के लिए, पुस्तकालय विज्ञान (Library Science) में अंग्रेजी का एक शब्द प्रयुक्त होता है -'artcraft'। यदि शब्द-प्रतिशब्द इसका अनुवाद किया जाए तो वह कदाचित 'कलाशिल्प' होगा। किंतु यह उपयुक्त अनुवाद नहीं है क्योंकि पुस्तकालय विज्ञान में यह पारिभाषिक शब्द है, जिसके लिए हिंदी में 'कृत्रिम चर्मबंध' शब्द प्रयुक्त होता है।

3. आप जानते ही हैं कि पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर उनके पर्यायों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। इसे भली प्रकार से समझने के आइए हम एक उदाहरण का प्रयोग करते हैं। जैसे, रसायन विज्ञान में 'water'के लिए 'पानी' और 'salt' के लिए 'नमक' शब्दों का प्रयोग नहीं हो सकता जबकि सामान्य जीवन-व्यवहार में ये शब्द (अर्थात 'पानी' और 'नमक') बहुत अधिक चलन में हैं। रसायन विज्ञान के क्षेत्र में इन शब्दों के लिए क्रमशः 'जल' और 'लवण' शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार पारिभाषिक संदर्भ में 'बिजली' के स्थान पर 'विद्युत' शब्द का ही प्रयोग किया जाएगा। सामान्य संदर्भों में ही देखें तो 'deceased' शब्द के 'मृत', 'दिवंगत', 'स्वर्गीय', 'परलोकवासी' आदि अनेक हिंदी पर्याय हो सकते हैं। किंतु यदि यही 'deceased' शब्द प्रशासन अथवा विधि की भाषा में आए तो वहाँ 'मृत' पर्याय ही उपयुक्त होता है, 'दिवंगत' अथवा 'स्वर्गीय' अथवा 'परलोकवासी' नहीं।

11.6 अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग : जटिलता की समस्या तथा समाधान

इस पाठ्यक्रम की इकाई 9 में आप यह अध्ययन कर चुके हैं कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में पारिभाषिक शब्दावली के व्यवस्थित रूप से निर्माण का कार्य स्वतंत्रता के पश्चात तीव्र गति से आगे बढ़ा। उस समय तक तकनीकी शब्दावली के निर्माण के अनेक संप्रदाय विकसित हो चुके थे। इन संप्रदायों (विचारधाराओं) को 'शुद्धतावादी', 'अंतर्राष्ट्रीयतावादी', 'हिंदुस्तानीवादी ', 'लोकवादी' संप्रदायों के रूप में जाना जाता है। विशेष बात यह है कि इन संप्रदायों अर्थात विचारधाराओं को मानने वाले कोशकारों ने अपनी-अपनी सिद्धांत-दृष्टि के आधार पर ज्ञान-विज्ञान की भिन्न-भिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं की पारिभाषिक शब्दावलियों का निर्माण किया। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की दृष्टि से उनके प्रयास महत्त्वपूर्ण थे। किंतु इसमें भी कोई संदेह नहीं कि इससे पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति बन गई थी। तब इस अराजकता को दूर करने के लिए भारत सरकार ने केंद्र स्तर पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की थी। इस आयोग ने समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के कुछ सिद्धांत अपनाए जिनके बारे में आप पिछली इकाई 10 में आप अध्ययन कर चुके हैं। इन सिद्धांतों के द्वारा पारिभाषिक शब्दावली में एकरूपता और मानकीकरण का प्रयास किया गया ताकि पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में अराजकता को दूर किया जा सके और साथ ही जटिलता भी कम की जा सके।

किंतु वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा हिंदी में निर्मित पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में अक्सर उसके जटिल या कठिन होने का प्रश्न उठाया जाता है और सरल पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की निरंतर अपेक्षा की जाती है ताकि हिंदी भाषा में जटिलता उत्पन्न न हो। इसलिए यहाँ यह विचार करना जरूरी हो जाता है कि क्या पारिभाषिक शब्दावली जटिल होती है? क्या अनुवाद करते समय अनुवादक पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग की जटिलता को अनुभव करता है? और, पारिभाषिक शब्दावली की इस जटिलता का समाधान क्या है?

इन प्रश्नों के संदर्भ में यदि सम्यक विचार किया जाए तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी। पारिभाषिक शब्दावली सामान्य या बोलचाल की शब्दावली की तुलना में निर्माण, प्रयोग तथा अर्थ, भाव और संकल्पना-संप्रेषण की दृष्टि से विशिष्ट होती है। हिंदी का सामान्य ज्ञान रखने वाले व्यक्ति के लिए पारिभाषिक शब्दावली कठिन लग सकती है क्योंकि इस प्रकार की शब्दावली विषय-विशेष और क्षेत्र-विशेष से संबंधित होती है तथा सामान्य कार्य-व्यवहार में इनके प्रयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसलिए सामान्य भाषा-भाषी के लिए पारिभाषिक शब्दावली का कठिन प्रतीत होना स्वाभाविक है। यह बात केवल हिंदी भाषा के लिए ही नहीं, बल्कि अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के संदर्भ में भी लागू होती है। अंग्रेजी के शब्दकोश में हिंदी के अनेक पारिभाषिक शब्द, विशेष तौर पर दार्शनिक शब्द, स्थान प्राप्त किए हुए हैं। उदाहरण के लिए, 'maya' (माया), 'atman' (आत्म), 'mukti' (मुक्ति), 'Bhakti' (भक्ति), 'bhang' (भांग), 'Bhajan' (भजन), 'Angrej' (अंग्रेज), 'badmash' (बदमाश), 'gora' (गोरा), 'jungle' (जंगल), 'swadeshi' (स्वदेशी), 'tamasha' (तमाशा), 'dharma' (धर्म), 'yatyra' (यात्रा), 'chakra' (चक्र), 'nirvan' (निर्वाण), 'yoga' (योग), 'pandit' (पंडित),'bindi' (बिंदी), 'dhoti' (धोती), 'ghee' (घी), 'chatni' (चटनी), 'sati' (सती), 'baba' (बाबा), 'roti' (रोटी), 'chunni' (चुन्नी), 'pan' (पान), 'sari' (साड़ी), 'loot' (लूट) आदि।

आप इकाई 8 में यह अध्ययन कर चुके हैं कि पारिभाषिक शब्दों का निर्माण ऐसी धातुओं और शब्दों से होता है, जिनमें विशेष उर्वरता होती है। एक अवधारणा से संबद्ध अनेक शब्द निर्मित करने के लिए इस प्रकार के शब्दों से सुविधा भी होती है। आप यह भी जानते हैं कि संस्कृत की तत्सम शब्दावली भारतीय भाषाओं में तत्सम और तद्भव रूप में बहुत अधिक गृहीत हुई है। ऐसी स्थिति में संस्कृत के तत्सम (मूल) शब्द में उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास की पद्धति अपनाकर अनेक पारिभाषिक शब्द विकसित कर लिए जाते हैं। इस पद्धति से निर्मित शब्दों में एक अंत-र्संबंध भी होता है। उदाहरण के लिए, तत्सम शब्द 'विधि' से 'वैधता', 'वैधीकरण', 'वैध रूप से', 'विधायी', 'विधान सभा', 'विधान परिषद', 'विधान मंडल', 'संविधान', 'सांविधानिक', 'विधेय' आदि शब्द निर्मित होते हैं। इन शब्दों में अर्थगत अर्थ-संबंध भी है। इन शब्दों की अंग्रेजी के 'Law' शब्द तथा उससे निर्मित रूपों 'legal', 'legality', 'legislation', 'legally', 'legislative', 'Legislative Assembly', 'Legislative Council', 'legislator' आदि से समतुल्यता भी है। 'Law' शब्द के पर्याय रूप में 'कानून' शब्द भी प्रचलित और स्वीकृत है, किंतु 'कानून' की सहायता से अन्य संबंधित पारिभाषिक शब्द निर्माण के लिए उसके मूल स्रोत अरबी-फारसी तक जाने की जरूरत पड़ेगी, जोकि एक जटिल कार्य है। और एक बात यह भी है कि संस्कृत की तुलना में इन भाषाओं के शब्द अन्य भारतीय भाषाओं में तत्सम अथवा तद्भव रूप में प्रायः कम ही मिलते हैं।

आप जानते हैं कि पारिभाषिक शब्दावली विषय-विशेष और क्षेत्र-विशेष से संबंधित होती है। इसलिए उस विषय-विशेष का ज्ञान न रखने वालों को यह दुरूह या जटिल प्रतीत हो सकती है। उदाहरण के लिए 'प्रतिपूर्ति', 'सकल प्राप्तियाँ', 'स्थानापन्न नियुक्ति', 'पुनश्च', 'संस्वीकृत बजट' आदि शब्दों को देखा जा सकता है जो अंग्रेजी के क्रमशः 'compensation', 'gross receipts', 'officiating appointment', 'postscript', 'sanctioned budget' शब्दों के लिए प्रयुक्त होते हैं।

पारिभाषिक शब्दों की जटिलता के समाधान के लिए आवश्यक है कि उन्हें बार-बार प्रयोग में लाया जाए और उन्हें सामाजिक स्वीकृति दिलाई जाए। सामाजिक स्वीकृति के एक प्रयास के रूप में इन्हें स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है। स्कूली पाठ्यक्रमों में पारिभाषिक शब्दों को यदि संकल्पना सहित सघनता से प्रयुक्त किया जाए तो उन्हें सार्थक तरीके से सामाजिक स्वीकृति मिल सकती है। वैसे, इस संदर्भ में यह भी जरूरी हो जाता है कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्धारित पारिभाषिक शब्दों का ही प्रयोग किया जाए। भारत के उच्चतम न्यायालय (Supreme Court of India) ने एक मामले अपना ऐतिहासिक निर्णय आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली के प्रयोग की अनिवार्यता स्थापित की है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हर जगह एकसमान मानक शब्दावली का प्रयोग सुनिश्चित करने की दृष्टि से उच्चतम न्यायालय का यह आदेश विशेष महत्त्व रखता है। इसके अनुपालन से पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग क्षेत्र में अराजकता की स्थिति भी समाप्त होगी।

वस्तुतः शब्द स्वयं में न तो सरल होते हैं और न ही कठिन; वे परिचित और अपरिचित होते हैं। परिचित शब्द सरल और अपरिचित शब्द कठिन लगते हैं। यदि जटिल प्रतीत होने वाले शब्द बार-बार सामने आते हैं तो उनकी जटिलता और दुर्बोधता समाप्त हो जाती है और वे सरल प्रतीत होने लगते हैं। विभिन्न माध्यमों से बार-बार हमारे

सामने आने वाले अनेक जटिल और दुर्बोध पारिभाषिक शब्द अब सरल और सुबोध हो गए हैं। उदाहरण के लिए, 'सांसद' (Member of Parliament), 'विधायक' (Member of Legislative Assembly), 'पर्यावरण' (environment), 'प्रदूषण' (pollution), 'पोषण' (nutrition), 'जनसंचार' (mass communication), 'प्रस्ताव' (motion), 'अधिसूचना' (notification), 'मानक कटौती' (standard deduction), 'अभिलेख' (record), 'प्राधिकरण' (authority), 'समायोजन' (adjustment), 'अनधिकृत' (unauthorised), 'अवमूल्यन' (depreciation), 'आपदा प्रबंधन' (disaster management), 'सूचना प्रौद्योगिकी' (information technology), 'महामहिम' (His Excellency), 'बहुमत' (majority), 'जनसंख्या' (population), 'शपथ ग्रहण समारोह' (oath taking ceremony), 'जीवाश्म' (fosil), 'प्रकाश-संश्लेषण' (photo-synthesis), ऊतक (tissue), 'प्रतिनिधि-मंडल' (delegation), 'सामुदायिक केंद्र' (community centre), 'गणतंत्र दिवस' (Republic Day), 'स्वर्ण जयंती' (golden jubilee), 'चुनाव' (election), 'मतदान' (voting), 'पुनःप्रभार' (recharge), 'आवृत्ति' (frequency) आदि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अनुवादक को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्धारित शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। वैसे इसके साथ-साथ अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों की प्रयोगजन्य सहजता का विशेष ध्यान रख लेना चाहिए। अंग्रेजी की पारिभाषिक शब्दावलियों के अनूदित रूप यदि बहुत अधिक जटिल हैं तो उनका लिप्यंतरित अथवा अनुकूलित रूप में प्रयोग किया जा सकता है। पारिभाषिक शब्दावलियों के प्रयोग में हठवादिता से बचते हुए समन्वय अथवा मध्य मार्ग अपनाना सुविधाजनक होता है। इस प्रकार, पारिभाषिक शब्दों की जटिलता का समाधान हो सकता है। उदाहरण के लिए 'गारंटी' (प्रतिभूति), 'एंटीबायोटिक' (प्रतिजैविक), 'रूलिंग' (विनिर्णय), 'रेल' (संयान), 'कैंटीन' (आहारिका), 'कॉल बेल' (बुलावा घंटी), 'डॉक्टर' (चिकित्सक), 'काडर' (संवर्ग), 'डिस्ट्रिक्ट सेंटर' (जिला केंद्र), 'ट्रेडमार्क' (व्यापार चिह्न), 'मिनट', 'सेकंड', 'स्टेपलर', 'स्टाफ कार', 'टेलेक्स', 'ट्रॉली' आदि। इन उदाहरणों में आपने गौर किया होगा कि अनूदित रूप की तुलना में लिप्यंतरित रूप अधिक सहज प्रतीत होते हैं, इसलिए उन्हें प्रचलन और प्रयोग में लाने में सहजता होगी।

11.7 सारांश

'पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद' संबंधी इस इकाई में आपने सबसे पहले अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता को समझा और उसके बाद अनुवाद के साधन के रूप में पारिभाषिक शब्दावलियों के बारे में जानकारी हासिल की। इसके साथ-साथ आपको यह भी बोध हो गया होगा कि पारिभाषिक शब्दावली के चयन की प्रक्रिया और प्रासंगिकता क्या है। आपने यह जानकारी भी हासिल की है कि पारिभाषिक शब्दावलियों के प्रचलित एकाधिक रूपों में से मानक रूप का ही चयन किया जाता है। आपने यह भी जाना कि पारिभाषिक शब्दावली के स्थान पर उनके पर्याय शब्दों का प्रयोग नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए, विषय-विशेष में प्रयोग के समय 'जल' के स्थान पर 'पानी' और 'लवण' के स्थान पर 'नमक' शब्दों का प्रयोग संभव नहीं है। आपने यह भी समझा कि पारिभाषिक शब्दावलियों की तथाकथित जटिलता प्रयोग और प्रचलन से दूर हो जाती है, क्योंकि वास्तव में शब्द सरल और कठिन नहीं होते, बल्कि परिचित और अपरिचित होते हैं। पारिभाषिक शब्दावलियों के चयन और प्रयोग में सहजता लानी चाहिए। इसलिए हठवादिता से बचते हुए समन्वय का मार्ग अपनाना चाहिए, जिसे हम मध्यमार्ग भी कह देते हैं।

11.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
2. पारिभाषिक शब्दावलियाँ अनुवाद का साधन-उपकरण कैसे सिद्ध होती हैं?
3. अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली का चयन करते समय क्या ध्यान रखना चाहिए?
4. अंतर्राष्ट्रीय शब्दावलियों के चयन में अनुवादक को किन बातों का ध्यान रखना होता है?
5. अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग की सहजता से आप क्या समझते हैं?
6. अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की जटिलता और उसके समाधानों पर प्रकाश डालिए।

11.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- -----, *प्रशासनिक शब्दावली,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, 1992. *बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह* (मानविकी), खंड 1 और 2, नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, 1994. *बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह* (विज्ञान), खंड 1 और 2, नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *अखिल भारतीय शब्दावली* (भाषाविज्ञान), नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *भूगोल की मूलभूत शब्दावली,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *मनोविज्ञान परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *दर्शन परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *शिक्षा परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *समाज कार्य परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,।
- -----, *समाजशास्त्र परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *पुस्तकालय विज्ञान परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *पत्रकारिता परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *पुरातत्त्व परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *भाषाविज्ञान परिभाषा कोश,* खंड 1 और 2, नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *कंप्यूटर विज्ञान परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *प्रबंध विज्ञान परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -----, *अंतर्राष्ट्रीय विधि परिभाषा कोश,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- नरवणे, विश्वनाथ दिनकर (सं.). *भारतीय व्यवहार कोश,* मुंबई, त्रिवेणी संगम।
- नगेंद्र (सं.), *मानविकी पारिभाषिक कोश,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- आप्टे, वी.एस. *संस्कृत-हिंदी कोश,* दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
- अय्यर, विश्वनाथ, 1990. *अनुवाद कला,* दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।

इकाई 12 विभिन्न विषय-क्षेत्रों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली : अभ्यास

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 विभिन्न विषय-क्षेत्रों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली संग्रहण : चुनौतियाँ एवं स्रोत

12.2.1 पारिभाषिक शब्दावली संग्रहण : चुनौतियाँ

12.2.2 प्रमुख पारिभाषिक शब्द-सूचियाँ संकलन-संपादन के स्रोत

12.3 मानविकी-सामाजिक विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

12.4 विज्ञान-प्रौद्योगिकी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

12.5 प्रशासन के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

12.6 वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

12.7 मीडिया के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

12.8 विधि के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

12.9 सारांश

12.10 अभ्यासों के उत्तर

12.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- मानविकी-सामाजिक विज्ञान के साथ-साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली और उनके हिंदी पर्यायों से परिचित हो सकेंगे और उनका अभ्यास कर सकेंगे;
- वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा, मीडिया के क्षेत्र से जुड़े मुख्य पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी-हिंदी-अंग्रेजी पर्यायों का पता लगा सकेंगे और उनके अनुवाद का अभ्यास कर सकेंगे; और
- प्रशासन एवं विधि के क्षेत्र से संबंधित प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली के बारे में जान सकेंगे और उनका अंग्रेजी-हिंदी-अंग्रेजी अभ्यास कर सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम की इकाई 7-10 को पढ़ने के बाद आप 'शब्द : अवधारणा', 'पारिभाषिक शब्दावली : प्रकृति, प्रकार और अभिलक्षण', 'पारिभाषिक शब्दावली का विकास और मानकीकरण', 'पारिभाषिक शब्दावली : विचारधाराएँ, सिद्धांत और युक्तियाँ' जैसे पक्षों से परिचित हो चुके हैं। पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न आयामों के बारे में जानने के पश्चात अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि पारिभाषिक शब्दावली का क्या महत्त्व है। इस महत्त्व को और अधिक स्पष्ट करने के साथ-साथ अन्य पक्षों को उजागर करने के लिए इकाई 11 में अनुवाद के संदर्भ में पारिभाषिक शब्दावली पर चर्चा की गई है। इसका अध्ययन करने के पश्चात आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता-अनिवार्यता क्या है। इसमें जहाँ अनुवाद के साधन के रूप में पारिभाषिक शब्दावलियों पर विचार किया गया, वहीं इनके प्रयोग को सहजता के संदर्भ में भी देखा गया और यह बताया गया था कि पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद में क्या-क्या कठिनाइयाँ संभव होती हैं और उनका समाधान कैसे संभव है।

जैसा कि आप जानते ही हैं, प्रत्येक भाषा के अपने अनेक प्रकार्य होते हैं, जिन्हें संपन्न करने की प्रक्रिया में एक विशिष्ट शब्दावली प्रयुक्त की जाती है। इस विशिष्ट शब्दावली का स्वरूप स्वयं में परिभाषेय होता है। इसलिए इसे 'पारिभाषिक शब्दावली' कहा जाता है। ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रशासन, वाणिज्य-व्यापार आदि ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिनकी अपनी-अपनी विशिष्ट शब्दावली है। ये सभी क्षेत्र पारिभाषिक शब्दावली का विशाल भंडार निर्मित करते हैं। इस इकाई में आप ज्ञान-विज्ञान और जीवन-व्यवहार के इन विविध क्षेत्रों में से मानविकी-सामाजिक विज्ञान, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, प्रशासन, वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग, मीडिया और विधि के क्षेत्र की पारिभाषिक शब्दावली का अभ्यास करेंगे। इनमें से विधि के अलावा, अन्य सभी क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्द-सूचियों को मुख्य रूप से भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित तद्विषयक शब्दावलियों के आधार पर संकलित एवं संपादित किया गया है। वैसे, पारिभाषिक शब्दावली से परिचित कराने और उनका अभ्यास कराने से पूर्व इन्हें तैयार करने के स्रोतों के संबंध में भी इस इकाई में जानकारी दी गई है।

इस इकाई में मानविकी-सामाजिक विज्ञान, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, प्रशासन, वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग, मीडिया और विधि के क्षेत्र में से प्रत्येक विषय की 80-100 प्रमुख पारिभाषिक शब्दों को रखा गया है। इस शब्दावली को अंग्रेजी-हिंदी भाषा के क्रम में प्रस्तुत किया गया है, किंतु इन्हें हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद के संदर्भ में भी समान रूप से व्यवहार में लाया जाता है। **सत्रांत परीक्षा में इन विभिन्न विषय-क्षेत्रों की इस पारिभाषिक शब्दावली और इनके अनुवाद से संबंधित प्रश्न भी शामिल किए जाएँगे। ये प्रश्न दोनों में से किसी भी रूप में यानी अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद अथवा हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद करने से संबंधित हो सकते हैं। इसलिए विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे इनके हिंदी अनुवाद का अच्छी तरह से अभ्यास कर लें ताकि सत्रांत परीक्षा में उपयुक्त और उचित पर्याय दे सकें।**

12.2 विभिन्न विषय-क्षेत्रों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली संग्रहण : चुनौतियाँ एवं स्रोत

इस पाठ्यक्रम की इकाई 9 के भाग 9.3 में 'पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा' पर प्रकाश डालते हुए यह स्पष्ट किया जा चुका है कि भारत में स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात इसके निर्माण के प्रयास किए गए थे। ये प्रयास व्यक्तिगत रूप से भी किए गए थे और संस्थागत स्तर पर भी। वैसे, स्वतंत्रता के पश्चात भी ये प्रयास व्यक्तिगत और प्रशासनिक स्तर पर किए गए। इस क्षेत्र में काशी नागरी प्रचारिणी सभा, प्रयाग स्थित हिंदी साहित्य सम्मेलन, कलकत्ता की बंगीय साहित्य परिषद, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी आदि शैक्षिक-साहित्यिक संस्थाओं के प्रयास के साथ-साथ डॉ. रघुवीर, पं. सुंदरलाल, डॉ. जाफर हसन, महेश चरण सिंह, दाते और कर्वे आदि के व्यक्तिगत स्तर पर दिए गए योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

'पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा' (भाग 9.3) यह भी स्पष्ट करती है कि पारिभाषिक शब्दावली निर्माण संबंधी मनमाने दृष्टिकोणों ने एक ही अवधारणा के लिए विभिन्न पारिभाषिक शब्द-प्रयोग संबंधी अराजकता की स्थिति पैदा कर दी थी। अराजकता की इस स्थिति को दूर करने के लिए केंद्र सरकार ने वर्ष 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया। इसके बाद पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की दिशा में योजनाबद्ध प्रयास शुरू किए गए। आयोग के द्वारा विभिन्न विषयों की पारिभाषिक शब्दावलियाँ तैयार की गईं। आयोग के द्वारा किए जा रहे प्रयास आज भी जारी हैं।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में अधिकारिता है। शिक्षा, प्रशासन आदि समस्त क्षेत्रों में आयोग द्वारा निर्मित मानक शब्दावली के ही हर जगह प्रयोग की बाध्यता है। लेकिन, इसके बावजूद कतिपय विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर पारिभाषिक शब्दावलियाँ भी तैयार की हैं। ऐसे में अखिल भारतीय स्तर पर पारिभाषिक शब्दावली व्यवहार में अनेकरूपता की स्थिति बनी रह गई। इस अनेकरूपता को दूर करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली के बारे में उच्चतम न्यायालय ने भी यह निर्णय है कि अखिल भारतीय स्तर पर आयोग के द्वारा निर्धारित पारिभाषिक शब्दावली का ही पालन किया जाए। (उच्चतम न्यायालय के इस निर्णय के संबंध में आप इस पाठ्यक्रम की इकाई 9 के भाग 9.4 में अध्ययन कर चुके हैं।) मानक पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग की वांछनीयता, एकरूपता एवं समानता की दृष्टि से यह अनिवार्यता सार्थक है। यही कारण है कि विभिन्न

विषय-क्षेत्रों की चयनित पारिभाषिक शब्दावली को इस इकाई में संकलित-संपादित कर आपके समक्ष प्रस्तुत करने के लिए आयोग द्वारा निर्मित शब्दावलियों को ही आधार बनाया गया है। लेकिन इस दौरान कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई जिनके बारे मे यहाँ चर्चा करना अनुपयुक्त न होगा।

12.2.1 पारिभाषिक शब्दावली संग्रहण : चुनौतियाँ

पारिभाषिक शब्द सूचियाँ संकलित-संपादित करने की प्रक्रिया में यह समस्या अनुभव की गई कि इस दिशा में आज भी केवल व्यक्तिगत-संस्थागत स्तर पर ही नहीं, अपितु विभिन्न विभागों-कार्यालयों द्वारा अपने-अपने स्तरों पर भी शब्दावली निर्माण कार्य किए गए हैं और किए जा रहे हैं। यानी भारत सरकार के विभिन्न सरकारी विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, वैज्ञानिक संगठनों, बैंकों और अन्य एजेंसियों आदि के द्वारा स्वयं भी शब्दावलियाँ/शब्द-संग्रह प्रकाशित किए गए हैं। इसका मूल कारण तलाश करने पर यह पता चलता है कि हालाँकि, आयोग द्वारा प्रकाशित शब्दावलियाँ अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में पर्याप्त सफल रही हैं, लेकिन इनमें सरकार के सैकड़ों विभागों-कार्यालयों आदि के प्रकार्यों के अनुसार शब्दों एवं उनके अर्थों-पर्यायों के भिन्न-भिन्न एवं प्रयोग-आधारित भेदों को शामिल करना असंभव था। विभिन्न विभागों के द्वारा निष्पादित किए जाने वाले कार्यों की प्रकृति एक-जैसी नहीं होती। उनके तकनीकी कार्यों की भिन्न पृष्ठभूमि के कारण कार्यालय-विशेष के कार्य-व्यापार के संचालन से संबंधित कमोबेश सभी पारिभाषिक शब्दों के पर्याय उपलब्ध कराने में कोई एक शब्दावली सफल नहीं हो सकती। इसलिए अब आयोग अपने द्वारा निर्धारित प्रक्रिया और मानकों के अनुसार शब्दावली तैयार करने के अलावा सरकारी विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, वैज्ञानिक संगठनों, बैंकों और अन्य एजेंसियों को अपने-अपने संगठनों में अंतर्विभागीय प्रयोग के लिए अपनी-अपनी विभागीय शब्दावलियाँ प्रकाशित करने में सहायता भी कर रहा है। इसके अलावा, विभिन्न विभागों आदि के द्वारा भी दैनंदिन व्यवहार की सुगमता के लिए स्वयं इन्हें तैयार कराया जा रहा है।

भारत सरकार के सरकारी विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, वैज्ञानिक संगठनों, बैंकों और अन्य एजेंसियों आदि के द्वारा स्वयं भी शब्दावलियाँ/शब्द-संग्रह अंतर्विभागीय प्रयोग अर्थात आंतरिक वितरण के लिए तैयार कराया जा रहा है। इस संदर्भ में केंद्रीय भंडारण निगम की 'भण्डारण शब्दावली', नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड की 'कार्यालयीन एवं तकनीकी शब्दावली' और भारत सरकार के आयकर विभाग, आयकर निदेशालय (गवेषणा, सांख्यिकी, प्रकाशन एवं जन-संपर्क) की 'प्रत्यक्ष कर शब्दावली' विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। इनमें शामिल पारिभाषिक शब्दों के लिए आयोग द्वारा निर्धारित रूप (पर्याय) शामिल किए हुए हैं। इसी अनुक्रम में, भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय की 'विद्युत शब्दावली', भारतीय मानक ब्यूरो (बी.आई.एस.) की 'समेकित वैज्ञानिक एवं पारिभाषिक शब्दावली', 'दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड की मानक बीमा शब्दावली' तथा राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की 'लघु हिंदी सहायिका' का भी नाम लिया जा सकता है। इन शब्दावलियों को या तो वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के संयुक्त तत्त्वावधान में तैयार किया गया या फिर आयोग के अनुमोदन से प्रकाशित किया गया है।

आयोग के संयुक्त तत्त्वावधान में कार्यालय-विशेष की ओर से तैयार की जाने वाली शब्दावली भी आयोग के शब्द निर्माण संबंधी सिद्धांतों की प्रक्रिया और मानकों के आधार पर तैयार की जाती है। शब्दावली निर्माण का यह कार्य आम तौर पर विभिन्न चरणों में पूरा किया जाता है। सबसे पहले, कार्यालय-विशेष के संदर्भ में व्यवहृत होने वाले विभिन्न विशिष्ट शब्दों का चयन एवं संकलन किया जाता है। इसके पश्चात, चयनित-संकलित शब्दों के हिंदी समानक निर्धारित किए जाते हैं और फिर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के विशेषज्ञों से उनका अनुमोदन कराया जाता है। अनुमोदन की इस प्रक्रिया में आयोग के विशेषज्ञों के साथ संबंधित विभाग-कार्यालय द्वारा बैठकें आयोजित करके चयनित-संकलित शब्दावली की समीक्षा की जाती है। विशेष बात यह रहती है कि इस प्रकार शब्दावली तैयार करते समय सहजता, सरलता, सार्थकता, उपयुक्तता और उपयोगिता का पूरी तरह से ध्यान रखा जाता है।

भारत सरकार के संभवतः अन्य विभागों-कार्यालयों आदि के द्वारा भी शब्दावली निर्माण संबंधी इसी प्रकार के प्रयास किए गए होंगे, लेकिन उनका यहाँ जिक्र न हो पाना हमारी सीमा मानी जा सकती है। इसमें कोई संदेह

नहीं कि कार्यालय-विशेष के इस प्रकार के प्रयासों से जहाँ अनुवाद कार्य में एकरूपता लाने में महत्त्वपूर्ण योगदान मिलेगा वहीं हिंदी में मौलिक लेखन के लिए उत्साहवर्धन होगा। इससे कार्यालय-विशेष के कामकाज में हिंदी प्रयोगों के सहज विकास के लिए प्रेरणाप्रद एवं सुसाध्य परिवेश निर्मित होगा। वैसे भी, शब्द निर्माण का कार्य ऐसा है जो कभी समाप्त नहीं होता है; यह सतत जारी रहने वाली प्रक्रिया है। देश-विदेश में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे विकास के कारण नित-नए शब्द गढ़े जा रहे हैं। इसलिए उनके पर्याय तैयार करने जरूरी हो जाते हैं। यही कारण है कि शब्दावलियों/शब्द-संग्रहों आदि को अद्यतन करके संशोधित संस्करण निकालने की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है।

12.2.2 प्रमुख पारिभाषिक शब्द-सूचियाँ संकलन-संपादन के स्रोत

पारिभाषिक शब्द सूचियाँ संकलित-संपादित करने की प्रक्रिया में यह समस्या अनुभव की गई कि किन्हें आधार बनाया जाए। इस विषय में यह निर्णय लिया गया कि भाग 12.1 में उल्लिखित प्रमुख विषय-क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावलियों की सूचियाँ तैयार करने के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार की गई शब्दावलियों को ही आधार बनाया जाए। वैसे भी, इस संबंध में उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार अखिल भारतीय स्तर पर आयोग के द्वारा निर्धारित पारिभाषिक शब्दावली का ही पालन किया जाना अपेक्षित है। इसलिए इकाई में शामिल पारिभाषिक शब्द-सूचियों को आयोग की निम्नलिखित शब्दावलियों के आधार पर संकलित-संपादित किया गया है:

1. बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी), खंड I और II (Comprehensive Glossary of Technical Terms : Humanities) (Vol. I & II)
2. बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (विज्ञान), खंड I और II (Comprehensive Glossary of Technical Terms : Sciences) (Vol. I & II)
3. प्रशासनिक शब्दावली (Glossary of Administrative Terms)
4. प्रशासन मूलभूत शब्दावली (Administration : A Fundamental Glossary)
5. पत्रकारिता एवं मुद्रण शब्दावली (Glossary of Journalism & Printing)
6. कंप्यूटर विज्ञान की मूलभूत शब्दावली (Fundamental Glossary of Computer Science)
7. समेकित अखिल भारतीय शब्द-संग्रह (Comprehensive Glossary of Pan-Indian Terms)

इनमें से अंतिम, समेकित अखिल भारतीय शब्द-संग्रह है। अंग्रेजी-रोमन-हिंदी में तैयार किया गया आयोग का यह शब्द-संग्रह वर्ष 2002 में हरियाणा साहित्य अकादेमी के तत्त्वावधान में प्रकाशित किया है। यह वस्तुतः आयोग की 'अखिल भारतीय शब्दावली' योजना के अंतर्गत खगोलिकी (1985) अर्थशास्त्र और वाणिज्य, भूगोल, गणित, समाजविज्ञान एवं सांस्कृतिक नृविज्ञान (सभी 1986 में); भौतिकी (1987); जीवविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, रसायन विज्ञान, भाषाविज्ञान, समुद्रविज्ञान और भूविज्ञान (1990); 'शिक्षा, मनोविज्ञान तथा मनोरोगविज्ञान', सांख्यिकी (1991); प्रायोगिक भूगोल (1992); सिविल इंजीनियरी, मानव भूगोल (1993); भूविज्ञान (1995); आयुर्विज्ञान (1996) आदि कुल 20 विषयों की तैयार की गई अखिल भारतीय शब्दावलियों का समेकित शब्द-संग्रह है। आप 'अखिल भारतीय शब्दावली' की आवश्यकता, निर्माण-पद्धति और इसकी पहचान के सामान्य पक्षों के बारे में इस पाठ्यक्रम की इकाई 10 के भाग 10.5 में अध्ययन कर चुके हैं। शब्द-सूचियों को अंतिम रूप देते समय, इस शब्द-संग्रह को भी अवलोकित किया गया है।

आपके मन में यह प्रश्न उठ रहा होगा कि तीसरे और चौथे क्रम पर उल्लिखित 'प्रशासनिक शब्दावली' और 'प्रशासन मूलभूत शब्दावली' का अलग-अलग अस्तित्व क्यों? आपका इस संबंध में विचार करना उपयुक्त है। यहाँ हम आपको यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि आयोग ने 'प्रशासन मूलभूत शब्दावली' में जिन प्रविष्टियों को शामिल किया है, वे मूलतः पूर्व-प्रकाशित प्रशासनिक शब्दावलियों से ही ली गई हैं। आयोग ने इस शब्दावली का प्रकाशन मूलभूत तकनीकी शब्दावली के निर्माण संबंधी परियोजना के अधीन किया है। इस शब्दावली के जरिए प्रशासनिक

विषय से संबंधित शब्दावली कार्यशालाओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को मूलभूत प्रशासनिक शब्दावली के सही-सही प्रयोग के बारे में अवगत कराने के लिए तैयार किया गया है। इसके अलावा, प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं को भी इस शब्दावली से परिचित कराया जाता है।

आइए, अब हम विषय-वार पारिभाषिक शब्दावली संग्रहण के स्रोतों के संबंध में जानें।

मानविकी और सामाजिक विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली संग्रह के स्रोत : इस सूची को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार किए गए 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' के वर्ष 1992 में प्रकाशित खंड I और II के पुनरीक्षित, परिवर्धित तथा अद्यतन संस्करण (कंप्यूटर डाटाबेस) के आधार पर तैयार किया गया है। इससे पहले आयोग ने इस शब्द-संग्रह का प्रथम संस्करण 1973 में प्रकाशित किया था।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली संग्रह के स्रोत : इकाई के इस भाग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली को शामिल किया गया है। जैसा कि इस इकाई के भाग 12.2.2 में यह स्पष्ट किया जा चुका है, इस सूची को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार किए गए 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (विज्ञान)' के वर्ष 1994 में प्रकाशित खंड I और II के संशोधित संस्करण (कंप्यूटरीकृत डाटाबेस) के आधार पर संकलित-संपादित करके प्रस्तुत किया गया है। 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' की भाँति विज्ञान संबंधी इस शब्द-संग्रह का भी आयोग ने सबसे पहला संस्करण 1973 में प्रकाशित किया था। इसके अलावा, इस सूची संकलन के लिए आयोग द्वारा ही वर्ष 1996 में प्रकाशित 'कंप्यूटर विज्ञान की मूलभूत शब्दावली' का भी आधार ग्रहण किया गया है।

प्रशासनिक शब्दावली संग्रह के स्रोत : प्रशासनिक शब्दावली संबंधी सूची को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की 'प्रशासनिक शब्दावली' के अंग्रेजी-हिंदी शब्द-संग्रह के आधार पर तैयार किया गया है। आयोग ने इस शब्दावली को अंग्रेजी-हिंदी और हिंदी-अंग्रेजी शब्दावली के अनुसार अलग-अलग प्रकाशित किया हुआ है। प्रशासन के क्षेत्र में इस शब्दावली की सर्वाधिक माँग है। प्रशासन के क्षेत्र में शब्दावली के स्तर पर निरंतर बढ़ोतरी हो रही है। यही कारण है कि इसे लगातार अद्यतन करने की आवश्यकता बनी रहती है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए आयोग इस शब्द-संग्रह को नियमित रूप से संशोधित-परिवर्धित करता रहता है। वर्ष 2010 तक इस 'प्रशासनिक शब्दावली' (अंग्रेजी-हिंदी) के सात संशोधित और पुनर्मुद्रित संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। इकाई में शामिल प्रशासनिक शब्दावली को इसी के आधार पर तैयार किया गया है।

इसके अलावा, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, आयोग ने वर्ष 2008 में प्रकाशित 'प्रशासन मूलभूत शब्दावली' में पूर्व-प्रकाशित प्रशासनिक शब्दावलियों से प्रविष्टियों को शामिल किया है। यह शब्दावली मूलभूत प्रशासनिक शब्दावली की आवश्यकता को पूरा करने के लिए तैयार की गई है। प्रशासन संबंधी शब्दावली की सूची तैयार करते समय इस शब्दावली को भी अवलोकित किया गया है।

वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली संग्रह के स्रोत : स्पष्ट है कि इस वर्ग के अंतर्गत वित्त-वाणिज्य आदि विभिन्न विषय क्षेत्र शामिल हैं। इस सूची को तैयार करते समय मुख्य रूप से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' को ही आधार बनाया गया है। इसके अलावा, आयोग की 'वाणिज्य शब्दावली', 'अखिल भारतीय शब्दावली : अर्थशास्त्र और वाणिज्य' एवं 'पूँजी बाजार एवं संबद्ध शब्दावली' को भी अवलोकित किया गया है। साथ ही, भारत सरकार के आयकर विभाग के आयकर निदेशालय (गवेषणा, सांख्यिकी, प्रकाशन और जन-संपर्क) द्वारा वर्ष 2006 में प्रकाशित 'प्रत्यक्ष कर शब्दावली' (अंग्रेजी-हिंदी) को भी अवलोकित किया गया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि आयकर विभाग की इस शब्दावली में भारत सरकार के विधि मंत्रालय और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत पारिभाषिक शब्दावली का तो प्रयोग किया ही गया है, साथ ही हिंदी के आम प्रचलन वाले सरल शब्दों को भी यथासंभव शामिल किया हुआ है। इस शब्दावली के 'प्राक्कथन' में आयकर निदेशक ने यही विचार व्यक्त किए हैं।

'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' में वित्त-वाणिज्य के अलावा, **बैंकिंग** से संबंधित अनेक शब्द भी शामिल हैं। इसके अलावा, भारतीय रिज़र्व बैंक ने अलग से 'बैंकिंग शब्दावली' भी प्रकाशित की है। सर्वप्रथम वर्ष 1980

में प्रकाशित इस शब्दावली के वर्ष 2012 तक सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा, कुछ अन्य बैंकों ने भी अपनी-अपनी शब्दावलियाँ तैयार की हैं, जो कमोबेश भारतीय रिज़र्व बैंक की शब्दावली पर ही आधारित हैं। वैसे, आम तौर पर सभी बैंक, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा तैयार की गई 'बैंकिंग शब्दावली' का ही प्रयोग कर रहे हैं। इसलिए बैंकिंग शब्दावली की सूची तैयार करते समय आयोग के शब्द-संग्रह के साथ-साथ 'बैंकिंग शब्दावली' को भी अवलोकित किया गया है।

ऐसी ही स्थिति **बीमा शब्दावली** की भी है। 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' में बीमा से संबंधित अनेक पारिभाषिक शब्द मिलते हैं। इसके अलावा, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग और दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के संयुक्त तत्त्वावधान में वर्ष 2012 में पहली बार प्रकाशित 'मानक बीमा शब्दावली' जैसे शब्द-संग्रह भी मिलते हैं। इस सूची में बीमा संबंधी शब्दावली को शामिल करने के लिए हमने इन दोनों शब्दावली को आधार के रूप में लिया है।

मीडिया शब्दावली संग्रह के स्रोत : मीडिया से संबंधित शब्द-सूची को तैयार करते समय मुख्य रूप से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित 'पत्रकारिता एवं मुद्रण शब्दावली' (Glossary of Journalism & Printing) को आधार बनाया गया है। इसे आयोग ने वर्ष 1998 में प्रकाशित किया था। इसके अलावा, आयोग द्वारा तैयार की गई 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' को भी आधार बनाया गया है। इसका मूलभूत कारण यह है कि इस पारिभाषिक शब्द-संग्रह में संचार (communication) से संबंधित भी अनेक पारिभाषिक शब्द संकलित किए हुए हैं। यह मूलतः जनसंचार से जुड़ी शब्दावली ही है। शब्द-संग्रह देखने से पता चलता है कि कोश निर्माण प्रक्रिया में विशेषज्ञ सलाहकार समिति की बैठकों एवं संगोष्ठियों में भाग लेकर संबंधित विषयों की शब्दावली का पुनरीक्षण-अनुमोदन के पश्चात कोश तैयार किया गया है। पुनरीक्षण-अनुमोदन करने वाले बाहरी-विशेषज्ञों की इस शब्द-संग्रह के आरंभ में जो सूची दी हुई है, उसे 'जनसंचार एवं मुद्रण' (Journalism and Printing) वर्ग के अंतर्गत शामिल किया हुआ है। इसलिए मीडिया संबंधी शब्द-सूची तैयार करते समय हमने इस पक्ष को ध्यान में रखा है और 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' से भी यथावश्यक पारिभाषिक शब्द लिए हैं।

विधि शब्दावली संग्रह के स्रोत : विधि के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली के संकलन-संपादन के लिए भारत सरकार के विधि मंत्रालय के विधायी विभाग (राजभाषा खंड) द्वारा तैयार की गई विधि शब्दावली के वर्ष 2001 में प्रकाशित संस्करण को आधार बनाया गया है। यह विधि शब्दावली का छठा संस्करण है। 1970 में विधि शब्दावली का पहला संस्करण प्रकाशित हुआ था। इसके बाद वर्ष 1979, 1983, 1988 और 1992 तक कुल पाँच संशोधित संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। चूँकि 'विधि शब्दावली' का वर्ष 2001 के बाद संभवतः कोई नया संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ है, इसलिए इसी संस्करण के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली की सूची तैयार की गई है।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण सतत रूप से जारी रहने वाली प्रक्रिया है। इसलिए विभिन्न प्रकार की शब्दावलियों/शब्द-संग्रहों के संशोधित संस्करण निकालकर शब्द-सूचियों को अद्यतन किया जाता है। नए शब्दों एवं उनके पर्यायों को जानने के लिए आप इन शब्दावलियों के नवीनतम संस्करणों का उपयोग कीजिए।

आइए, अब हम विभिन्न प्रमुख विषय-क्षेत्रों की चुनिंदा पारिभाषिक शब्दावली और उनके पर्यायों से परिचित हों और उनके अनुवाद का अभ्यास करें। इस क्रम में सबसे पहले मानविकी-सामाजिक विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दों की सूची दी जा रही है।

12.3 मानविकी-सामाजिक विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

इकाई के इस भाग में मानविकी और सामाजिक विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली को शामिल किया गया है। जैसा कि आपको स्पष्ट किया जा चुका है, इस सूची को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार किए गए 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' के वर्ष 1992 में प्रकाशित खंड I और II के पुनरीक्षित,

परिवर्धित तथा अद्यतन संस्करण (कंप्यूटर डाटाबेस) के आधार पर तैयार किया गया है। आयोग ने इस शब्द-संग्रह का प्रथम संस्करण 1973 में प्रकाशित किया था।

मानविकी और सामाजिक विज्ञान के पारिभाषिक शब्दों की इस सूची में ज्ञान के इस क्षेत्र के विभिन्न विषयों के 80 पारिभाषिक शब्दों को रखा गया है। इसमें जहाँ अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द और उनके हिंदी पर्याय शामिल किए हुए हैं, वहीं ही साथ आपकी जानकारी के लिए मानविकी और सामाजिक विज्ञान के उस विषय क्षेत्र के संक्षिप्ताक्षर (abbreviation) भी शामिल किए गए हैं, जिनसे वे संबंधित हैं। इन संक्षिप्ताक्षरों को केवल विषय क्षेत्र की जानकारी देने के लिए शामिल किया गया है। परीक्षा की दृष्टि से इन संक्षिप्ताक्षरों का कोई महत्त्व नहीं है।

तालिका 1 : मानविकी और सामाजिक विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

क्र. सं.	पारिभाषिक शब्द	विषय संबंधी संक्षिप्ताक्षर	हिंदी पर्याय
1.	abnormal behaviour	Edu, Psy	अपसामान्य व्यवहार
2.	aboriginal culture	CA	आदिवासी संस्कृति
3.	abstract art	FA	अमूर्त कला
4.	atomic disarmament	Pol	परमाणु निरस्त्रीकरण
5.	barter system	CA, Eco	वस्तु-विनिमय पद्धति
6.	bilateral mutual assistance	Pol	द्विपक्षीय परस्पर सहायता
7.	brain drain	Edu, Soc	बुद्धिजीवी अपवाह, प्रतिभा पलायन
8.	capitalistic imperialism	Pol	पूँजीवादी साम्राज्यवाद
9.	coalition ministry	Pol	बहुदलीय मंत्रिमंडल
10.	cost of production	Eco, Com	उत्पादन लागत, उत्पादन व्यय
11.	cultivation of language	Lin	भाषा का परिष्करण
12.	decentralised measures	Pol	विकेंद्रित उपाय
13.	diplomatic correspondence	Pol	राजनयिक पत्रव्यवहार
14.	durable goods	Eco	दीर्घोपयोगी वस्तुएँ
15.	European Economic Community (EEC)	Eco, Com	यूरोपीय आर्थिक समुदाय
16.	expansionist policy	Eco, Pol	विस्तारवादी नीति
17.	family of nations	His, Pol	राष्ट्रकुल
18.	federal republic	Pol	संघीय गणतंत्र
19.	foot-loose industry	Eco	स्वतंत्र उद्योग, स्वच्छंद उद्योग
20.	freedom of expression	Pol	अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य
21.	gandhian economics	Eco	गांधीवादी अर्थशास्त्र
22.	general language proficiency	Lin	सामान्य भाषायी प्रवीणता
23.	geological survey	Arl, CA	भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण
24.	grammatical gender system	Lin	व्याकरणिक लिंग-व्यवस्था
25.	gross national product	Eco	सकल राष्ट्रीय उत्पाद
26.	guiding principles	Edu, Pol, Psy	निर्देशक सिद्धांत

27.	harvest home song	Fok	खलिहानोत्सव गीत
28.	hyper accountability	Pol	अतिशय उत्तरदायित्व
29.	ideal utilitarianism	Phl, Pol	आदर्श उपयोगितावाद
30.	implied powers	Pol	निहित शक्तियाँ
31.	indentured labour	CA, Eco, Soc	करारबद्ध श्रमिक, गिरमिटिया
32.	indigenous word	Lin	देशज शब्द, देशी शब्द
33.	job analysis approach	Edu	कार्य विश्लेषण उपागम
34.	kinship term	Lin	बंधुतावाची शब्दावली
35.	knowledge by acquaintance	Edu, Phl	साक्षात् ज्ञान
36.	labour-intensive industry	Eco	श्रम-प्रधान उद्योग
37.	land settlement	His, Pol	बंदोबस्त, भूव्यवस्था
38.	less-developed economy	Eco	अल्प-विकसित अर्थव्यवस्था
39.	matrilineal family	CA, Psy, Soc	मातृवंशीय परिवार
40.	motivation technique	Edu, Psy	अभिप्रेरण प्रविधि
41.	mutual confidence treaty	Pol	परस्पर विश्वास संधि
42.	national consciousness	Pol	राष्ट्रीय चेतना
43.	non-commercial publication	Lib	अव्यापारिक प्रकाशन
44.	Non-Alignment Movement (NAM)	Pol	गुटनिरपेक्ष आंदोलन, निर्गुट आंदोलन
45.	occupational research and analysis scheme	Edu, SW	व्यावसायिक अनुसंधान और विश्लेषण योजना
46.	open air theatre	Lit	खुला रंगमंच, मुक्ताकाश रंगमंच
47.	open door policy	Eco	मुक्त द्वार नीति
48.	orientalist	His	प्राच्यविद
49.	patrilineal family	CA, Psy, Soc	पितृवंशीय परिवार, पितृवंशीय कुटुंब
50.	peninsular India	His	प्रायद्वीपीय भारत
51.	population explosion	Eco	जनसंख्या-विस्फोट
52.	principal clause	Lin	मुख्य उपवाक्य
53.	public utility service	Eco, Soc, Pol	लोकोपयोगी सेवा
54.	qualitative studies	Soc	गुणात्मक अध्ययन
55.	'Quit India' movement	Pol	'भारत छोड़ो' आंदोलन
56.	racial discrimination	Adm,CA,Pol	प्रजातीय भेदभाव
57.	refresher course	Adm, Edu	पुनश्चर्या पाठ्यक्रम
58.	representation of minorities	Pol	अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व
59.	restrictive practices	Eco	प्रतिबंधात्मक व्यवहार
60.	rural rehabilitation programme	Soc, SW	ग्राम पुनर्वास कार्यक्रम
61.	secularism	Pol	धर्मनिरपेक्षतावाद, धर्मनिरपेक्षता, पंथ निरपेक्षता
62.	self-determination	CA, His, Psy, Soc	आत्म-निर्धारण, आत्म-निर्णय

63.	semi-finished goods	Adm, Edu	अर्ध-निर्मित वस्तुएँ, अधबनी वस्तुएँ
64.	social reforms movement	Psy, Soc, SW	सामाजिक सुधार आंदोलन
65.	standard deviation	Stat	मानक विचलन
66.	standard language	Lin	मानक भाषा
67.	trade union unity	Adm, Edu, Pol	मजदूर संघ एकता
68.	traditional society	CA, Soc, Psy	परंपरागत समाज, पारंपरिक समाज
69.	treaty of friendship	Pol	मैत्री संधि
70.	unbalanced growth	Eco	असंतुलित संवृद्धि
71.	uncivilised tribe	CA	असभ्य जनजाति
72.	utopian literature	Lit	कल्पनालोकी साहित्य
73.	visible unemployment	SW	प्रत्यक्ष बेकारी, प्रत्यक्ष बेरोजगारी
74.	voluntary organisation	CA, Soc	स्वैच्छिक संगठन
75.	who's who	Lit	परिचायिका
76.	working class	Eco, Pol, Soc, SW	श्रमिक वर्ग, मजदूर वर्ग, श्रमिक श्रेणी
77.	word formation	Lin	शब्द निर्माण, शब्द रचना
78.	world trade depression	Pol	विश्व-व्यापी व्यापार मंदी
79.	young people's edition	Lib	बाल संस्करण
80.	zone of transition	Soc	संक्रमण क्षेत्र

मानविकी और सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों की उपर्युक्त पारिभाषिक शब्दावली में प्रयुक्त संक्षिप्ताक्षरों के पूरे रूप आपकी जानकारी के लिए इस प्रकार हैं :

क्र.सं.	प्रयुक्त संक्षिप्ताक्षर (Used Abbreviation)	विषय (Subject)
1.	Adm	Administration (प्रशासन)
2.	Arl	Archaeology (पुरातत्व, पुरातत्वविज्ञान)
3.	CA	Cultural Anthrolopology (सांस्कृतिक नृविज्ञान)
4.	Com	Commerce (वाणिज्य)
5.	Eco	Economics (अर्थशास्त्र)
6.	Edu	Education (शिक्षा)
7.	FA	Fine Arts (ललित कलाएँ)
8.	Fok	Folklore (लोकवार्ता, लोक गाथा)
9.	His	History (इतिहास)
10.	Lib	Library Science (पुस्तकालय विज्ञान)
11.	Lit	Literary Criticism (आलोचना, समालोचना)
12.	Phl	Philosophy (दर्शनशास्त्र)
13.	Psy	Psychology (मनोविज्ञान)
14.	SW	Social Work (समाज कार्य)
15.	Soc	Sociology (समाजशास्त्र)
16.	Stat	Statistics (सांख्यिकी)

मानविकी और सामाजिक विज्ञान से संबंधित चयनित पारिभाषिक शब्दावली और उनके पर्यायों को जानने के बाद आइए, अब हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली से परिचित हों।

12.4 विज्ञान-प्रौद्योगिकी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

इकाई के इस भाग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली को शामिल किया गया है। जैसा कि इस इकाई के भाग 12.2.2 में यह स्पष्ट किया जा चुका है, इस सूची को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार किए गए 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (विज्ञान)' के वर्ष 1994 में प्रकाशित खंड I और II के संशोधित संस्करण (कंप्यूटरीकृत डाटाबेस) के आधार पर संकलित-संपादित करके प्रस्तुत किया गया है। 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' की भाँति विज्ञान संबंधी इस शब्द-संग्रह का भी आयोग ने सबसे पहला संस्करण 1973 में प्रकाशित किया था। इसके अलावा, आयोग द्वारा ही वर्ष 1996 में प्रकाशित 'कंप्यूटर विज्ञान की मूलभूत शब्दावली' का भी आधार ग्रहण किया गया है।

विज्ञान विषयों के पारिभाषिक शब्दों की संपादित-संकलित की गई इस सूची में विज्ञान-प्रौद्योगिकी संबंधी विभिन्न विषयों के 80 पारिभाषिक शब्द दिए हुए हैं। मानविकी और सामाजिक विज्ञान संबंधी पारिभाषिक शब्दावली की भाँति इसे भी अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द और उसके हिंदी पर्याय के क्रम में शामिल किया हुआ है। इसके साथ-साथ विज्ञान-प्रौद्योगिकी के उस विषय क्षेत्र का संक्षिप्ताक्षर (abbreviation) भी शामिल किया हुआ है, जिससे वह संबंधित है। इस संक्षिप्ताक्षर को केवल विषय क्षेत्र की जानकारी देने के लिए शामिल किया गया है। परीक्षा की दृष्टि से इस संक्षिप्ताक्षर का कोई महत्त्व नहीं है।

तालिका 2 : विज्ञान-प्रौद्योगिकी से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

क्र.सं.	पारिभाषिक शब्द	विषय संबंधी संक्षिप्ताक्षर	हिंदी पर्याय
1.	abnormal resistence	Math.	अपसामान्य प्रतिरोध
2.	absolute temperature	Phy.	परम ताप
3.	angular motion	Zool.	कोणीय गति
4.	aqua-culture	Bot.	जल कृषि
5.	atomic power	Chem., Phy.	परमाणु शक्ति
6.	artificial intelligence	Comp.	कृत्रिम बुद्धि
7.	bacteria	H.Sc., Biol.	जीवाणु, बैक्टीरिया
8.	bad conductor	Phy.	कुचालक
9.	biological control	Biol.	जैव नियंत्रण
10.	binary code	Astron., Chem., Geol., Math., Phy., Comp.	द्वि-आधारी कोड, द्वि-आधारी कूट
11.	catchment area	Cvl., Geol.	जलग्रहण क्षेत्र
12.	central processing unit	Comp.	केंद्रीय संसाधन एकक
13.	chain reaction	Phy.	शृंखला-अभिक्रिया
14.	colour blindness	Zool., Phy., H.Sc.	वर्णांधता
15.	communicable disease	Bot., H.Sc.	संचरणीय रोग
16.	data entry device	Comp.	आँकड़ा प्रविष्टि युक्ति
17.	dehydration product	Chem., Geol., H.Sc., Zool.	निर्जलीकरण उत्पाद, जल-वियोजन उत्पाद
18.	drain pipe	Cvl.	जलनिकास पाइप, अपवाह पाइप
19.	echo level	Geol., Phy., Zool.	प्रतिध्वनि स्तर
20.	electrification	Phy.	विद्युतीकरण, आवेशन

21.	endoscopy	Med.(Sur.)	अंतर्दर्शन
22.	equilibrium	Math.	संतुलन, साम्य
23.	excavation	Geol.	उत्खनन
24.	fishery research	Geog.	मत्स्य अनुसंधान
25.	forest gathering industry	Geog.	वन-संग्रहण उद्योग
26.	fossil fuel	Bot.	जीवाश्मी ईंधन
27.	frequency	Math., Phy.	आवृत्ति, बारंबारता
28.	freezing point	Chem.	हिमांक
29.	fuel oil	Geog.	ईंधन तेल
30.	full moon	Math.	पूर्ण चंद्र, पूर्णिमा, पूर्णमासी
31.	gall bladder	Zool., H.Sc.	पित्ताश्य
32.	geographical distribution	Geog.	भौगोलिक वितरण, भूगोलीय वितरण
33.	gravitational field	Phy., Geog., Geol.	गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र
34.	green house effect	Bot., H.Sc.	पौधाघर प्रभाव, ग्रीन हाउस प्रभाव
35.	ground water	Geol., Geog.	भौम-जल
36.	gunpowder	Chem.	बारूद
37.	horizontal-vertical control	Math.	क्षैतिज-ऊर्ध्वाधर नियंत्रण
38.	integrated circuit	Comp.	एकीकृत परिपथ
39.	intensity of sound	Phy.	ध्वनि की तीव्रता
40.	intensive care unit	Med. (Sur.)	गहन चिकित्सा केंद्र
41.	joint density function	Phy.	संयुक्त घनत्व फलन
42.	key-board	Comp.	कुंजी पटल
43.	key-species	Bot.	मुख्य स्पीसीज
44.	light house	Math.	प्रकाश स्तंभ
45.	lubricator	Chem. (Met.)	स्नेहक, स्नेहकारी
46.	melting point	Phy.	गलनांक
47.	micro surgery	Med. (Sur.)	सूक्ष्म शल्यकर्म
48.	monsoonal change	Geog.	मानसूनी परिवर्तन
49.	natural language processing	Comp.	प्राकृतिक भाषा संसाधन
50.	noble gas mixture	Chem.	उत्कृष्ट गैस मिश्रण
51.	nuclear explosion	Zool.	नाभिकीय विस्फोट
52.	numerator-denominator	Math.	अंश-हर
53.	observatory	Phy.	वेधशाला, ऑबजरवेटरी
54.	oceanography	Zool.	समुद्रविज्ञान
55.	optical character recognition	Comp.	प्रकाशिक संप्रतीक अभिज्ञान
56.	oxidation	Chem.	ऑक्सीकरण
57.	photosynthesis	Bot.	प्रकाश-संश्लेषण
58.	primary particle	Phy.	प्राथमिक कण
59.	probability	Math.	प्रायिकता
60.	program function key	Comp.	क्रमादेश प्रकार्य कुंजी

61.	quantitative response	Chem.	मात्रात्मक अनुक्रिया
62.	respiratory organ	Biol., H.Sc.	श्वसन अंग
63.	resistence power	Phy.	प्रतिरोध क्षमता
64.	retrieval	Comp.	पुनर्प्राप्ति
65.	saturation point	Chem.	संतृप्ति स्थिति
66.	sense organ	Zool.	ज्ञानेंद्रिय, संवेदन अंग
67.	sericulture	Bot.	रेशम कीटपालन
68.	solar system	Chem., Geol.	सौर परिवार
69.	sound wave	Phy.	ध्वनि तरंग
70.	storage device	Comp.	भंडारण युक्ति
71.	test tube stand	Chem.	परखनली स्टैंड
72.	transplant	Med. (Sur)	प्रतिरोप
73.	tributary	Cvl	सहायक नदी
74.	ultimate equilibrium value	Chem.	चरम् संतुलन मान
75.	ultraviolet radiation	Phy.	पराबैंगनी विकिरण
76.	vaporisation	Phy.	वाष्पन
77.	virtual memory	Comp.	आभासी स्मृति
78.	volume density	Geog., Phy., Chem., Math.	आयतन-घनत्व
79.	word processing	Comp.	शब्द संसाधन
80.	zone of discharge	Chem.	विसर्जन क्षेत्र

विज्ञान-प्रौद्योगिकी संबंधी विभिन्न विषयों की उपर्युक्त पारिभाषिक शब्दावली में प्रयुक्त संक्षिप्ताक्षरों के पूरे रूप आपकी जानकारी के लिए इस प्रकार हैं :

क्र.सं.	प्रयुक्त संक्षिप्ताक्षर (Used Abbreviation)	विषय (Subject)
1.	Astron.	Astronomy (खगोल विज्ञान)
2.	Biol.	Biology (जीव विज्ञान)
3.	Bot.	Botany (वनस्पति विज्ञान)
4.	Chem.	Chemistry (रसायन विज्ञान)
5.	Comp.	Computer Science (कंप्यूटर विज्ञान)
6.	Cvl.	Civil Engineering (सिविल इंजीनियरिंग)
7.	Geol.	Geology (भूविज्ञान)
8.	Geog.	Geography (भूगोल)
9.	H.Sc.	Home Science (गृह विज्ञान)
10.	Math.	Mathematics (गणित)
11.	Med.(Sur.)	Medical Science (Surgery) [आयुर्विज्ञान (शल्य विज्ञान)]
12.	Phy.	Physics (भौतिकी)
13.	Zool.	Zoology (प्राणि विज्ञान)

आशा है, आपने तालिका 1 और 2 में दी गई पारिभाषिक शब्दावली को अच्छी तरह से समझकर याद कर लिया होगा। अब हम इन दोनों तालिकाओं में संकलित शब्दों के अनुवाद का अभ्यास करेंगे।

अभ्यास 1

1. मानविकी-सामाजिक विज्ञान से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए :

	अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	हिंदी पर्याय
1.	atomic disarmament	.....
2.	diplomatic correspondence	.....
3.	family of nations	.....
4.	gross national product	.....
5.	labour-intensive industry	.....
6.	Non-Alignment Movement (NAM)	.....
7.	peninsular India	.....
8.	representation of minorities	.....
9.	treaty of friendship	.....
10.	zone of transition	.....

2. मानविकी-सामाजिक विज्ञान से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए :

	हिंदी पारिभाषिक शब्द	अंग्रेजी पर्याय
1.	वस्तु-विनिमय पद्धति	.....
2.	दीर्घोपयोगी वस्तुएँ	.....
3.	सामान्य भाषायी प्रवीणता	.....
4.	खलिहानोत्सव गीत	.....
5.	कार्य विश्लेषण उपागम	.....
6.	व्यावसायिक अनुसंधान और विश्लेषण योजना	.....
7.	'भारत छोड़ो' आंदोलन	.....
8.	मानक विचलन	.....
9.	असंतुलित संवृद्धि	.....
10.	विश्व-व्यापी व्यापार मंदी	.....

3. विज्ञान-प्रौद्योगिकी से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए :

	अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	हिंदी पर्याय
1.	biological control	.....
2.	dehydration product	.....
3.	electrification	.....
4.	freezing point	.....
5.	intensive care unit	.....
6.	micro surgery	.....
7.	optical character recognition	.....
8.	respiratory organ	.....
9.	tributary	.....
10.	virtual memory	.....

4. विज्ञान-प्रौद्योगिकी से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए :

	हिंदी पारिभाषिक शब्द	अंग्रेजी पर्याय
1.	कृत्रिम बुद्धि	.....
2.	वर्णांधता	.....
3.	वन-संग्रहण उद्योग	.....
4.	गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र	.....
5.	प्रकाश स्तंभ	.....
6.	उत्कृष्ट गैस मिश्रण	.....
7.	प्रकाश-संश्लेषण	.....
8.	रेशम कीटपालन	.....
9.	पराबैंगनी विकिरण	.....
10.	विसर्जन क्षेत्र	.....

आइए, अब हम प्रशासन के क्षेत्र से संबंधित प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली से परिचित हों।

12.5 प्रशासन के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

जैसा कि इस इकाई के भाग 12.2.2 में यह स्पष्ट किया जा चुका है, इस सूची को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की 'प्रशासनिक शब्दावली' के अंग्रेजी-हिंदी शब्द-संग्रह के आधार पर तैयार किया गया है। आयोग ने इस शब्दावली को अंग्रेजी-हिंदी और हिंदी-अंग्रेजी शब्दावली के अनुसार अलग-अलग प्रकाशित किया हुआ है। वर्ष 2010 तक इस 'प्रशासनिक शब्दावली' (अंग्रेजी-हिंदी) के सात संशोधित और पुनर्मुद्रित संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। इकाई में शामिल प्रशासनिक शब्दावली को इसी के आधार पर तैयार किया गया है। इसके अलावा, आयोग द्वारा वर्ष 2008 में प्रकाशित 'प्रशासन मूलभूत शब्दावली' को भी अवलोकित किया गया है। पारिभाषिक शब्दों की इस सूची में प्रशासन के क्षेत्र के 100 पारिभाषिक शब्दों को अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द और उसके हिंदी पर्याय के क्रम में दिया गया है।

तालिका 3 : प्रशासन के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

1.	adverse remarks	प्रतिकूल अभ्युक्ति, प्रतिकूल टिप्पणी
2.	annual administrative report	वार्षिक प्रशासनिक रिपोर्ट
3.	assessment year	निर्धारण-वर्ष
4.	authority letter	प्राधिकार पत्र
5.	average emoluments	औसत परिलब्धियाँ
6.	ballot paper	मतपत्र
7.	black market	चोर बाजार, काला बाजार
8.	breach of agreement	करार-भंग
9.	bulk purchase	थोक खरीद
10.	casting vote	निर्णायक मत
11.	censure motion	निंदा प्रस्ताव
12.	chronological order	कालक्रम
13.	cultural exchange programme	सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम
14.	dearness allowance	महँगाई भत्ता

15.	divided responsibility	विभाजित उत्तरदायित्व
16.	division of labour	श्रम विभाजन
17.	dual citizenship	दोहरी नागरिकता
18.	effective implementation	प्रभावी कार्यान्वयन
19.	employee's provident fund	कर्मचारी भविष्य निधि
20.	entertainment tax	मनोरंजन कर
21.	estimates of expenditure	व्यय प्राक्कलन
22.	extra-ordinary leave	असाधारण छुट्टी
23.	fair copy	स्वच्छ प्रति
24.	famine relief	अकाल राहत
25.	farewell address	विदाई भाषण
26.	follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
27.	foreign trade	विदेश व्यापार
28.	gallantry award	शौर्य पुरस्कार
29.	government servant conduct rules	सरकारी कर्मचारी आचरण नियमावली
30.	grievance procedure	शिकायत (निवारण) पद्धति
31.	guiding principles	मार्गदर्शी सिद्धांत
32.	half yearly report	अर्ध-वार्षिक रिपोर्ट, छमाही रिपोर्ट
33.	high level decision	उच्च स्तरीय निर्णय
34.	Hindi version	हिंदी रूपांतर, हिंदी अनुवाद
35.	human rights	मानवाधिकार
36.	immigration authority	आप्रवास प्राधिकारी
37.	inspection questionnaire	निरीक्षण प्रश्नावली
38.	inter-departmental meeting	अंतर्विभागीय बैठक
39.	irregularity	अनियमितता
40.	joining date	कार्यग्रहण तारीख
41.	joint responsibility	संयुक्त उत्तरदायित्व
42.	journey time	यात्रा समय
43.	key industry	आधारभूत उद्योग, मूल उद्योग
44.	keynote address	आधार व्याख्यान
45.	labour room	प्रसूति कक्ष
46.	leave not earned	अनर्जित छुट्टी
47.	length of service	सेवा-काल
48.	line of action	कार्य-दिशा, कार्रवाई की दिशा
49.	livestock	पशुधन
50.	maximum average pay	अधिकतम औसत वेतन
51.	memorial lecture	स्मारक व्याख्यान
52.	monetary grant	आर्थिक अनुदान
53.	mutual understanding	आपसी समझ

54.	national integration	राष्ट्रीय अखंडता
55.	no-confidence motion	अविश्वास प्रस्ताव
56.	no-demand certificate	बेबाकी प्रमाणपत्र
57.	non-recurring expenditure	अनावर्ती व्यय
58.	no smoking	धूमपान निषेध
59.	offer of appointment	नियुक्ति प्रस्ताव
60.	organizational structure	संगठनात्मक संरचना
61.	orientation programme	अभिविन्यास कार्यक्रम
62.	outstanding balance	बाकी शेष
63.	paramilitary forces	अर्धसैनिक बल
64.	performance audit	निष्पादन लेखापरीक्षा
65.	personal contact programme	वैयक्तिक संपर्क कार्यक्रम
66.	private and confidential	निजी एवं गोपनीय
67.	programme schedule	कार्यक्रम-अनुसूची
68.	public provident fund	सार्वजनिक भविष्य निधि
69.	quality control	गुणता नियंत्रण
70.	quorum	कोरम, गणपूर्ति
71.	refreshment room	जलपान गृह
72.	restrictive trade practices	प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार
73.	revised budget	परिशोधित बजट
74.	revolutionary change	क्रांतिकारी परिवर्तन
75.	semi-skilled labour	अर्ध-कुशल श्रमिक
76.	small (scale) industry	लघु उद्योग
77.	SMS	संक्षिप्त संदेश सेवा
78.	standing committee	स्थायी समिति
79.	station leave	स्टेशन छोड़ने की अनुमति
80.	supplementary grant	अनुपूरक अनुदान
81.	swimming pool	तरण ताल
82.	table of the house	सदन-पटल
83.	terms of reference	विचारार्थ विषय
84.	token strike	सांकेतिक हड़ताल
85.	trade delegation	व्यापार प्रतिनिधिमंडल
86.	treaty of extradition	प्रत्यर्पण संधि
87.	true translation	ठीक अनुवाद
88.	unanimous decision	एकमत निर्णय, सर्वसम्मत निर्णय
89.	unavoidable circumstances	अपरिहार्य परिस्थितियाँ
90.	union territory	संघ राज्य-क्षेत्र
91.	valedictory session	समापन सत्र
92.	verbal discussion	मौखिक चर्चा

93.	voluntary work	स्वैच्छिक कार्य
94.	vote of thanks	धन्यवाद प्रस्ताव
95.	wage payment	मजदूरी भुगतान
96.	wear and tear	टूट-फूट
97.	window envelope	पतादर्शी लिफाफा
98.	working days	कार्य-दिवस, काम के दिन
99.	yearly report	वार्षिक रिपोर्ट
100.	zero tax-paying capacity	शून्य कर-भुगतान क्षमता

प्रशासनिक शब्दावली से परिचित होने के बाद आइए अब हम वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा के क्षेत्र से संबंधित प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होते हैं।

12.6 वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

इस इकाई के भाग 12.2.2 में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली सूची तैयार करते समय मुख्य रूप से आयोग द्वारा प्रकाशित 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' को ही आधार बनाया गया है। इसके अलावा, आयोग की 'वाणिज्य शब्दावली', 'अखिल भारतीय शब्दावली : अर्थशास्त्र और वाणिज्य' एवं 'पूँजी बाजार एवं संबद्ध शब्दावली' को भी अवलोकित किया गया है। साथ ही, भारत सरकार के आयकर विभाग के आयकर निदेशालय (गवेषणा, सांख्यिकी, प्रकाशन और जन-संपर्क) द्वारा वर्ष 2006 में प्रकाशित 'प्रत्यक्ष कर शब्दावली' (अंग्रेजी-हिंदी) को भी अवलोकित किया गया है। इस संदर्भ में भारतीय रिज़र्व बैंक की 'बैंकिंग शब्दावली' और आयोग तथा दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रकाशित 'मानक बीमा शब्दावली' भी विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं।

पारिभाषिक शब्दों की इस सूची में वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा क्षेत्र से संबंधित 80 पारिभाषिक शब्दों को अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द और उसके हिंदी पर्याय के क्रम में दिया गया है।

तालिका 4 : वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

1.	abridged balance sheet	संक्षिप्त तुलन-पत्र
2.	account book	लेखा बही
3.	assurance policy	(1) बीमा नीति (2) बीमा पॉलिसी
4.	bad debt reserve	अशोध्य ऋण आरक्षित निधि
5.	bank reconciliation statement	बैंक समाधान विवरण
6.	bearer cheque	वाहक चेक
7.	bull-bear	तेजड़िया-मंदड़िया
8.	buyback of shares	शेयरों की वापसी खरीद
9.	centralised banking solution	केंद्रीकृत बैंकिंग समाधान
10.	credit and thrift society	बचत-उधार समिति
11.	cum-dividend	लाभांश-सहित
12.	cumulative time deposit	संचयी सावधि जमा
13.	debt crisis	ऋण संकट
14.	declaration of solvency	शोधनक्षमता की घोषणा
15.	dissolution of partnership	भागीदारी का विघटन

16.	double account system	दोहरी प्रविष्टि प्रणाली
17.	errors & omissions excepted (E&OE)	भूल-चूक लेनी-देनी
18.	ex-dividend	लाभांश-रहित
19.	exim policy	निर्यात-आयात नीति
20.	fair market value	उचित बाजार-मूल्य
21.	fixed monthly income	नियत मासिक आय
22.	foreign direct investment (FDI)	विदेशी प्रत्यक्ष निवेश
23.	free market aera	मुक्त बाजार क्षेत्र
24.	gold exchange standard	स्वर्ण विनिमय मान
25.	government securities market	सरकारी प्रतिभूति बाजार
26.	household consumption	घरेलू उपभोग, घरेलू खपत
27.	household income	पारिवारिक आय
28.	income and expenditure account	आय-व्यय लेखा
29.	injury benefit	चोट हितलाभ
30.	international standard	अंतर्राष्ट्रीय मानक
31.	issue market	शेयर निर्गम बाजार
32.	joint beneficiary	संयुक्त लाभार्थी
33.	joint stock bank	संयुक्त पूँजी बैंक
34.	joint venture agreement	संयुक्त उद्यम करार
35.	knowledge hub	ज्ञान केंद्र
36.	land mortgage bank	भूमि बंधक बैंक
37.	life insurance premium	जीवन बीमा किस्त
38.	life saving drugs	प्राणरक्षक औषधियाँ
39.	liquid assets	तरल परिसंपत्तियाँ
40.	maiden public issue	प्रथम सार्वजनिक निर्गमन
41.	market friendly product	बाजार-अनुकूल उत्पाद
42.	merchant banking services	व्यापार बैंकिंग सेवाएँ, मर्चेंट बैंकिंग सेवाएँ
43.	multicity cheque book	बहु-नगरीय चेक बुक
44.	national insurance scheme	राष्ट्रीय बीमा योजना
45.	no-claim bonus	दावा-शून्य बोनस
46.	no profit no loss	न लाभ न हानि, लाभ-हानि रहित
47.	non-scheduled bank	गैर-अनुसूचित बैंक
48.	non-taxable income	गैर-कर योग्य आय
49.	open market policy	खुला बाजार नीति
50.	outstanding advance	बकाया अग्रिम
51.	paid-up capital	प्रदत्त पूँजी, चुकता पूँजी
52.	per capita income	प्रति व्यक्ति आय
53.	post-dated cheque	उत्तर दिनांकित चेक
54.	pre-investment survey	निवेश-पूर्व सर्वेक्षण

55.	quasi-credit facilities	ऋणवत् सुविधाएँ, ऋण-सदृश सुविधाएँ
56.	quantitative credit restriction	मात्रात्मक उधार प्रतिबंध
57.	rate of interest	ब्याज दर
58.	real purchasing power	वास्तविक क्रयशक्ति
59.	retail outlet	खुदरा दुकान
60.	shareholder funds	शेयरधारक निधियाँ
61.	sleeping partner	निष्क्रिय भागीदार
62.	small saving drive	अल्प बचत अभियान
63.	special economic zone (SEZ)	विशेष आर्थिक क्षेत्र
64.	speculative business	सट्टा व्यापार
65.	tax capitalization	कर का पूँजीकरण
66.	terms of trade	आयात-निर्यात स्थिति, व्यापार स्थिति, व्यापार की शर्तें
67.	trading and manufacturing account	व्यापार तथा विनिर्माण लेखा
68.	traveller's cheque	यात्री चेक
69.	unaudited financial results	अपरीक्षित वित्तीय परिणाम
70.	underground industry	भूमिगत उद्योग, ग़ैर-कानूनी उद्योग
71.	unsecured loans and advances	गैर-जमानती ऋण और अग्रिम, अरक्षित ऋण और अग्रिम
72.	value-added tax (VAT)	वर्धित मूल्य कर
73.	voluntary liquidation	स्वैच्छिक परिसमापन
74.	war risk insurance	युद्ध जोखिम बीमा
75.	weekly arear statement	साप्ताहिक बकाया कार्य-विवरण
76.	wholesale price index	थोक कीमत सूचकांक
77.	withdrawal slip	निकासी पर्ची
78.	working capital needs	कार्यशील पूँजी आवश्यकताएँ
79.	yearly arrivals	वार्षिक आमद
80.	zero rate of interest	ब्याज की शून्य दर

आशा है, आपने तालिका 3 और 4 में दी गई पारिभाषिक शब्दावली को अच्छी तरह से समझकर याद कर लिया होगा। अब हम इन दोनों तालिकाओं में संकलित शब्दों के अनुवाद का अभ्यास करेंगे।

अभ्यास 2

1. प्रशासन से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए :

	अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	हिंदी पर्याय
1.	annual administrative report	.....
2.	breach of agreement	.....
3.	dearness allowance	.....
4.	farewell address	.....
5.	inter-departmental meeting	.....
6.	joining date	.....
7.	monetary grant	.....

8. orientation programme .....
9. quorum .....
10. table of the house .....
11. token strike .....
12. unavoidable circumstances .....
13. vote of thanks .....
14. window envelope .....
15. yearly report .....

2. प्रशासन से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए :

	हिंदी पारिभाषिक शब्द	अंग्रेजी पर्याय
1.	औसत परिलब्धियाँ	.....
2.	सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम	.....
3.	असाधारण छुट्टी	.....
4	शौर्य पुरस्कार	.....
5.	निरीक्षण प्रश्नावली	.....
6.	बेबाकी प्रमाणपत्र	.....
7.	निष्पादन लेखापरीक्षा	.....
8.	सार्वजनिक भविष्य निधि	.....
9.	प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार	.....
10.	अनुपूरक अनुदान	.....
11.	विचारार्थ विषय	.....
12.	एकमत/सर्वसम्मत निर्णय	.....
13	समापन सत्र	.....
14.	मजदूरी भुगतान	.....
15.	शून्य कर-भुगतान क्षमता	.....

3. वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए :

	अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	हिंदी पर्याय
1.	assurance policy	.....
2.	centralised banking solution	.....
3.	ex-dividend	.....
4.	household income	.....
5.	joint beneficiary	.....
6.	maiden public issue	.....
7.	quantitative credit restriction	.....
8.	small saving drive	.....
9.	voluntary liquidation	.....
10.	yearly arrivals	.....

4. वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए:

	हिंदी पारिभाषिक शब्द	अंग्रेजी पर्याय
1.	बैंक समाधान विवरण	.....
2.	शोधनक्षमता की घोषणा	.....
3.	प्राणरक्षक औषधियाँ	.....
4.	गैर-अनुसूचित बैंक	.....
5.	उत्तर दिनांकित चेक	.....
6.	वास्तविक क्रयशक्ति	.....
7.	निष्क्रिय भागीदार	.....
8.	वर्धित मूल्य कर	.....
9.	निकासी पर्ची	.....
10.	ब्याज की शून्य दर	.....

प्रशासन और वाणिज्य-बैंकिंग-बीमा के क्षेत्र से संबंधित प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होने के बाद आइए अब हम मीडिया शब्दावली की जानकारी हासिल करें।

12.7 मीडिया के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

जैसा कि आपको भाग 12.2.2 में यह स्पष्ट किया जा चुका है, मीडिया से संबंधित शब्द-सूची को तैयार करते समय मुख्य रूप से आयोग द्वारा प्रकाशित 'पत्रकारिता एवं मुद्रण शब्दावली' (Glossary of Journalism & Printing) और 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)' को आधार बनाया गया है। पारिभाषिक शब्दों की इस सूची में मीडिया से संबंधित 80 पारिभाषिक शब्द हैं, जिन्हें अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द और उसके हिंदी पर्याय के क्रम में दिया गया है।

तालिका 5 : मीडिया के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

1.	acknowledgement of source	सूत्र का उल्लेख
2.	adequate sample	पर्याप्त नमूना
3.	advance story	अग्रिम समाचार
4.	amateur performance	नौसिखिया काम
5.	audience research	दर्शक अनुसंधान, श्रोता अनुसंधान, पाठक अनुसंधान
6.	background music	पार्श्व संगीत
7.	bi-weekly paper	(1) पाक्षिक पत्र (2) अर्ध-साप्ताहिक पत्र
8.	cabinet size	कैबिनेट आकार
9.	camera angle	कैमरा कोण
10.	classified advertisement	वर्गीकृत विज्ञापन
11.	columnist	स्तंभ लेखक
12.	crime news	अपराध समाचार
13.	daily newspaper	दैनिक समाचार पत्र
14.	diplomatic correspondent	राजनयिक संवाददाता
15.	dirty copy	अस्पष्ट लिपि
16.	dissemination of information	सूचना प्रसार

17.	documentary programming	वृत्त कार्यक्रम, वृत्तचित्र कार्यक्रम
18.	editorial publicity campaign	संपादकीय प्रचार अभियान
19.	entertainment poster	मनोरंजन इश्तहार
20.	exhibition publicity	प्रदर्शनी प्रचार
21.	eye-witness account	प्रत्यक्ष विवरण
22.	fake news	जाली समाचार
23.	fancy cover	मनोहारी आवरण
24.	foreign news service	विदेशी समाचार सेवा
25.	free lance journalist	स्वतंत्र पत्रकार
26.	free mailing list	मानार्थ सूची
27.	ghost writer	अन्यार्थ लेखक
28.	gossip column	गपशप स्तंभ
29.	greeting card	शुभकामना कार्ड
30.	gutter journalism	गंदी पत्रकारिता, काली पत्रकारिता
31.	half title paper	संक्षिप्त पृष्ठ शीर्ष
32.	hard news	कोरा समाचार
33.	house magazine	संस्था पत्रिका
34.	illustrated article	सचित्र लेख
35.	impersonal journalism	व्यक्ति निरपेक्ष पत्रकारिता
36.	information media	सूचना माध्यम
37.	jacket	पुस्तकावरण
38.	journalistic technique	पत्रकारिता तकनीक
39.	labour reporting	श्रम-समाचार लेखन
40.	late news	ताजा समाचार
41.	lead story	मुख्य समाचार
42.	library edition	पुस्तकालय संस्करण
43.	literary piracy	साहित्यिक चोरी
44.	live broadcast	सीधा प्रसारण
45.	local announcement	स्थानीय सूचना
46.	manuscript	पांडुलिपि
47.	national programme	राष्ट्रीय कार्यक्रम
48.	news agency	समाचार एजेंसी, समाचार समिति
49.	news conference	संवाददाता सम्मेलन
50.	newspaper establishment	समाचार पत्र प्रतिष्ठान
51.	non-official source	(1) अनधिकारिक सूत्र (2) गैर-सरकारी सूत्र
52.	objectionable advertising	आपत्तिजनक विज्ञापन
53.	official version	सरकारी कथन, सरकारी पाठ, आधिकारिक कथन, आधिकारिक पाठ
54.	opinion writing	मत-लेखन

55.	pocket edition	जेबी संस्करण, गुटका संस्करण
56.	pre-press	मुद्रण पूर्व, छपाई पूर्व
57.	press communique/release	प्रेस विज्ञप्ति
58.	quiz programme	प्रश्नोत्तरी
59.	reader interest	पाठक अभिरुचि
60.	reference material	संदर्भ सामग्री
61.	reliable source	विश्वस्त सूत्र
62.	running commentary	आँखों देखा हाल
63.	sales promotion	विक्रय संवर्धन
64.	social and personal item	सामाजिक और वैयक्तिक समाचार
65.	sound effects	ध्वनि प्रभाव
66.	special audience programme	विशेष श्रोता कार्यक्रम
67.	sponsor	प्रायोजक
68.	stage review	रंगमंच समीक्षा, नाट्य समीक्षा
69.	title page	मुख पृष्ठ
70.	type manuscript	टंकित पांडुलिपि
71.	utilityman	उपयोगी व्यक्ति
72.	verbal oddities	शाब्दिक खिलवाड़
73.	visual effect	दृश्य प्रभाव
74.	vocal music	कंठ संगीत, गायन
75.	voice test	स्वर परख
76.	weather report	मौसम विवरण
77.	word for word duplication	शब्दशः आवृत्ति
78.	word-of-mouth information	मौखिक सूचना
79.	writing style	लेखन शैली
80.	yellow journalism	सनसनीदार पत्रकारिता

12.8 विधि के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

विधि के क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली के संकलन-संपादन के लिए भारत सरकार के विधि मंत्रालय के विधायी विभाग (राजभाषा खंड) द्वारा तैयार की गई 'विधि शब्दावली' को आधार बनाया गया है। इस पारिभाषिक शब्द सूची में विधि संबंधी 80 पारिभाषिक शब्द हैं। इन शब्दों को भी अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द और उसके हिंदी पर्याय के क्रम में दिया गया है।

तालिका 6 : विधि से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली

1.	adjournment motion	स्थगन प्रस्ताव
2.	adult franchise	वयस्क मताधिकार
3.	anticipatory bail	अग्रिम जमानत
4.	appellate powers	अपीली शक्तियाँ
5.	appropriation bill	विनियोग विधेयक

6.	bill of rights	अधिकार-पत्र, बिल ऑफ राइट्स
7.	breach of Trust	न्यास भंग, विश्वास भंग
8.	code of criminal procedure	दंड प्रक्रिया संहिता
9.	concurrent list	समवर्ती सूची
10.	composite culture	सामासिक संस्कृति
11.	condemned criminal	सिद्धदोष अपराधी
12.	delegated legislation	प्रत्यायोजन विधान, प्रत्यायोजित विधान
13.	definitive judgment	अंतिम निर्णय
14.	disruptive activity	विध्वंसकारी क्रियाकलाप
15.	doubtful rights	शंकास्पद अधिकार
16.	evacuee property	निष्क्रांत संपत्ति
17.	explicit definition	सुस्पष्ट परिभाषा
18.	eye of law, in the	विधि की दृष्टि, विधि की दृष्टि में
19.	first information report (FIR)	प्रथम इत्तिला रिपोर्ट
20.	free legal aid	निःशुल्क विधिक सहायता
21.	fundamental of Constitution	संविधान के मूल-तत्व
22.	gratuitously	बिना प्रतिफल के, आनुग्रहिक रूप से
23.	gross negligence	घोर उपेक्षा
24.	habitual defaultor	आभ्यासिक व्यतिक्रमी
25.	harmonious development	सामंजस्यपूर्ण विकास
26.	hunger strike	भूख हड़ताल
27.	imperfect charge	अपूर्ण आरोप
28.	Indian Penal Code (IPC)	भारतीय दंड संहिता
29.	insufficient ground	अपर्याप्त आधार
30.	involuntary loss	अस्वैच्छिक हानि
31.	joint parties	संयुक्त पक्षकार
32.	judicial enquiry	न्यायिक जाँच
33.	know-how	व्यवहार ज्ञान
34.	law and practice	विधि और प्रथा
35.	legislative drafting	विधायी प्रारूपण
36.	liberation writ	छोड़ने के लिए रिट
37.	malafide	असद्भावपूर्वक
38.	mandatory provision	आज्ञापक उपबंध
39.	military law	सैन्य विधि
40.	misleading information	भ्रामक सूचना, भ्रामक जानकारी
41.	mutual agreement	परस्पर सहमति
42.	noble ideal	उच्च आदर्श
43.	non statutory body	अकानूनी निकाय
44.	null and void	अकृत और शून्य

45.	oath of secracy	गोपनीयता की शपथ
46.	order of attachment	कुर्की का आदेश
47.	official list	अधिकृत सूची
48.	perpetual succession	शाश्वत उत्तराधिकार
49.	physical possession	भौतिक कब्जा; वस्तुगत कब्जा
50.	proclamation of sale	विक्रय की उद्घोषणा
51.	qualifying word	विशेषक शब्द
52.	quasi judicial act	न्यायिककल्प कार्य
53.	rational judgement	युक्तिसंगत निर्णय
54.	rectification	परिशुद्धि, सुधार
55.	right to information	सूचना का अधिकार
56.	restoration of possession	कब्जे का प्रत्यावर्तन
57.	rule of interpretation	निर्वचन का नियम
58.	secondary evidence	द्वितीयक साक्ष्य
59.	self acquired property	स्वार्जित संपत्ति
60.	sine die	अनिश्चित काल के लिए
61.	statutory obligation	कानूनी दायित्व
62.	stop gap arrangements	कामचलाऊ व्यवस्था
63.	taxable gift	कराधेय दान
64.	term of copyright	प्रतिलिप्यधिकार की अवधि
65.	transfer memorandum	अंतरण ज्ञापन
66.	transitory provisions	अस्थायी उपबंध
67.	true verdict	सच्चा अभिमत
68.	unauthorised act	अप्राधिकृत कार्य
69.	undesirable transcation	अवांछनीय संव्यवहार
70.	unforeseen circumstances	अकल्पित परिस्थितियाँ
71.	vested interest	निहित हित
72.	victim	आहत व्यक्ति
73.	voidable	शून्यकरणीय
74.	violation of the Constitution	संविधान का अतिक्रमण
75.	voluntary surrender	स्वेच्छया अभ्यर्पण
76.	warrant of arrest	गिरफ्तारी का वारंट, गिरफ्तार करने के लिए वारंट
77.	winding up	परिसमापन
78.	without jurisdiction	बिना अधिकारिता के/अधिकारिता के बिना
79.	written security	लिखित प्रतिभूति
80.	youthful offender	किशोर अपराधी

आशा है, आपने तालिका 5 और 6 में दी गई पारिभाषिक शब्दावली को अच्छी तरह से समझकर याद कर लिया होगा। अब हम इन दोनों तालिकाओं में संकलित शब्दों के अनुवाद का अभ्यास करेंगे।

अभ्यास 3

1. मीडिया के क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए :

	अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	हिंदी पर्याय
1.	columnist	.....
2.	documentary programming	.....
3.	free mailing list	.....
4.	jacket	.....
5.	labour reporting	.....
6.	library edition	.....
7.	pocket edition	.....
8.	running commentary	.....
9.	social and personal item	.....
10.	yellow journalism	.....

2. मीडिया के क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए :

	हिंदी पारिभाषिक शब्द	अंग्रेजी पर्याय
1.	राजनयिक संवाददाता	.....
2.	संपादकीय प्रचार अभियान	.....
3.	मनोहारी आवरण	.....
4.	अन्यार्थ लेखक	.....
5.	साहित्यिक चोरी	.....
6.	समाचार पत्र प्रतिष्ठान	.....
7.	विश्वस्त सूत्र	.....
8.	प्रायोजक	.....
9.	शाब्दिक खिलवाड़	.....
10.	शब्दशः आवृत्ति	.....

3. विधि के क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए :

	अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द	हिंदी पर्याय
1.	anticipatory bail	.....
2.	breach of Trust	.....
3.	code of criminal procedure	.....
4.	first information report (FIR)	.....
5.	habitual defaultor	.....
6.	judicial enquiry	.....
7.	mandatory provision	.....
8.	order of attachment	.....
9.	perpetual succession	.....
10.	qualifying word	.....

11. right to information .....
12. sine die .....
13. term of copyright .....
14. winding up .....
15. youthful offender .....

4. विधि के क्षेत्र से संबंधित निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए:

	हिंदी पारिभाषिक शब्द	अंग्रेजी पर्याय
1.	स्थगन प्रस्ताव	.....
2.	सिद्धदोष अपराधी	.....
3.	निःशुल्क विधिक सहायता	.....
4.	भारतीय दंड संहिता	.....
5.	विधायी प्रारूपण	.....
6.	अकानूनी निकाय	.....
7.	गोपनीयता की शपथ	.....
8.	विक्रय की उद्घोषणा	.....
9.	न्यायिककल्प कार्य	.....
10.	निर्वचन का नियम	.....
11.	स्वार्जित संपत्ति	.....
12.	अंतरण ज्ञापन	.....
13.	अवांछनीय संव्यवहार	.....
14.	निहित हित	.....
15.	संविधान का अतिक्रमण	.....

12.9 सारांश

प्रत्येक भाषा के विभिन्न प्रकार्यों को संपन्न करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली प्रयुक्त की जाती है। ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रशासन, वाणिज्य-व्यापार आदि विभिन्न क्षेत्रों की अपनी-अपनी विशिष्ट शब्दावली है। इस इकाई में आपको ज्ञान-विज्ञान और जीवन-व्यवहार के इन विविध क्षेत्रों में से मानविकी-सामाजिक विज्ञान, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, प्रशासन, वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग, मीडिया और विधि के क्षेत्र की पारिभाषिक शब्दावली से परिचित कराया गया है और इसका अभ्यास कराया गया है।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की अधिकारिता है। उच्चतम न्यायालय ने भी यह निर्णय दिया है कि अखिल भारतीय स्तर पर आयोग के द्वारा निर्धारित पारिभाषिक शब्दावली का ही पालन किया जाए। इसलिए इकाई में शामिल शब्दावली को आयोग द्वारा निर्मित शब्दावलियों के आधार पर ही तैयार किया गया है। लेकिन इस दौरान कुछ चुनौतियाँ भी सामने आईं। जैसे, आज भी केवल व्यक्तिगत-संस्थागत स्तर पर ही नहीं, बल्कि प्रशासनिक स्तर पर आयोग के अलावा, यानी भारत सरकार के विभिन्न सरकारी विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, वैज्ञानिक संगठनों, बैंकों और अन्य एजेंसियों आदि के द्वारा स्वयं भी शब्दावलियाँ/शब्द-संग्रह तैयार किए गए हैं। आयोग की शब्दावलियाँ अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में काफी रही हैं, लेकिन इनमें सरकार के सैकड़ों विभागों-कार्यालयों आदि के प्रकार्यों के अनुसार शब्दों एवं उनके अर्थों-पर्यायों के भिन्न-भिन्न एवं प्रयोग-आधारित भेदों को शामिल असंभव था। इसलिए विभिन्न विभागों आदि के द्वारा भी स्वयं इन्हें आंतरिक वितरण के लिए तैयार कराया जा रहा है। इन्हें या तो आयोग के संयुक्त

तत्त्वावधान में तैयार किया गया है या फिर उनके अनुमोदन से प्रकाशित किया गया है। इन्हें आयोग के शब्द निर्माण संबंधी सिद्धांतों की प्रक्रिया और मानकों और सहयोग से तैयार किया जाता है। वैसे, शब्दावली तैयार करते समय सहजता, सरलता, सार्थकता, उपयुक्तता और उपयोगिता का पूरी तरह से ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार के प्रयासों से अनुवाद कार्य में एकरूपता लाने में महत्त्वपूर्ण योगदान मिलता है और हिंदी में मौलिक लेखन के लिए उत्साहवर्धन होता है। निस्संदेह, इससे सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोगों का सहज विकास के लिए प्रेरणाप्रद एवं सुसाध्य परिवेश निर्मित होगा।

इकाई में शामिल पारिभाषिक शब्द-सूचियों को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित शब्दावलियों के अलावा, भारतीय रिज़र्व बैंक, विधि मंत्रालय, आयकर विभाग, दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड आदि द्वारा तैयार की शब्दावलियों के आधार पर संकलित-संपादित किया गया है। इसके अलावा, जिन अन्य शब्द-संग्रहों की सहायता ली गई है, उनका संकेत भी इकाई के संबंधित भाग में किया गया है।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण, सतत रूप से जारी रहने वाली प्रक्रिया है। इसलिए इनके संशोधित संस्करण निकालने की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है। नए शब्दों एवं उनके पर्यायों को जानने के लिए आप इन शब्दावलियों का सहयोग लीजिए।

इस इकाई में मानविकी-सामाजिक विज्ञान, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, प्रशासन, वित्त-वाणिज्य-बैंकिंग, मीडिया और विधि के क्षेत्र में से प्रत्येक विषय की 80-100 प्रमुख पारिभाषिक शब्दों को रखा गया है। इस शब्दावली को अंग्रेजी-हिंदी भाषा के क्रम में प्रस्तुत किया गया है, किंतु इन्हें हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद के संदर्भ में भी समान रूप से व्यवहार में लाया जाता है। **सत्रांत परीक्षा में इन विभिन्न विषय-क्षेत्रों की इस पारिभाषिक शब्दावली और इनके अनुवाद से संबंधित प्रश्न भी शामिल किए जाएँगे। ये प्रश्न दोनों में से किसी भी रूप में यानी अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद अथवा हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद करने से संबंधित हो सकते हैं। इसलिए विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे इनके हिंदी अनुवाद का अच्छी तरह से अभ्यास कर लें ताकि सत्रांत परीक्षा में उपयुक्त और उचित पर्याय दे सकें।**

12.10 अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

1.
1. परमाणु निरस्त्रीकरण
2. राजनयिक पत्रव्यवहार
3. राष्ट्रकुल
4. सकल राष्ट्रीय उत्पाद
5. श्रम-प्रधान उद्योग
6. गुटनिरपेक्ष आंदोलन, निर्गुट आंदोलन
7. प्रायद्वीपीय भारत
8. अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व
9. मैत्री संधि
10. संक्रमण क्षेत्र

2.
1. barter system
2. durable goods
3. general language proficiency
4. harvest home song
5. job analysis approach
6. occupational research and analysis scheme
7. 'Quit India' movement
8. standard deviation
9. unbalanced growth
10. world trade depression

3.
1. जैव नियंत्रण
2. निर्जलीकरण उत्पाद, जल-वियोजन उत्पाद
3. विद्युतीकरण, आवेशन
4. हिमांक
5. गहन चिकित्सा केंद्र
6. सूक्ष्म शल्यकर्म
7. प्रकाशिक संप्रतीक अभिज्ञान
8. श्वसन अंग
9. सहायक नदी
10. आभासी स्मृति

4. 1. artificial intelligence
2. colour blindness
3. forest gathering industry
4. gravitational field
5. light house
6. noble gas mixture
7. photosynthesis
8. sericulture
9. ultraviolet radiation
10. zone of discharge

अभ्यास 2

1. 1. वार्षिक प्रशासनिक रिपोर्ट
2. करार-भंग
3. महँगाई भत्ता
4. विदाई भाषण
5. अंतर्विभागीय बैठक
6. कार्यग्रहण तारीख
7. आर्थिक अनुदान
8. अभिविन्यास कार्यक्रम
9. कोरम, गणपूर्ति
10. सदन-पटल
11. सांकेतिक हड़ताल
12. अपरिहार्य परिस्थितियाँ
13. धन्यवाद प्रस्ताव
14. पतादर्शी लिफाफा
15. वार्षिक रिपोर्ट

2. 1. average emoluments
2. cultural exchange programme
3. extra-ordinary leave
4. gallantry award
5. inspection questionnaire
6. no-demand certificate
7. performance audit
8. public provident fund
9. restrictive trade practices
10. supplementary grant
11. terms of reference
12. unanimous decision
13. valedictory session
14. wage payment
15. zero tax-paying capacity

3. 1. (1) बीमा नीति (2) बीमा पॉलिसी
2. केंद्रीकृत बैंकिंग समाधान
3. लाभांश-रहित
4. पारिवारिक आय
5. संयुक्त लाभार्थी
6. प्रथम सार्वजनिक निर्गमन
7. मात्रात्मक उधार प्रतिबंध
8. अल्प बचत अभियान
9. स्वैच्छिक परिसमापन
10. वार्षिक आमद

4. 1. bank reconciliation statement
2. declaration of solvency
3. life saving drugs
4. non-scheduled bank
5. post-dated cheque
6. real purchasing power
7. sleeping partner
8. value-added tax (VAT)
9. withdrawal slip
10. zero rate of interest

अभ्यास 3

1. 1. स्तंभ लेखक
2. वृत्त कार्यक्रम, वृत्तचित्र कार्यक्रम
3. मानार्थ सूची
4. पुस्तकावरण
5. श्रम-समाचार लेखन
6. पुस्तकालय संस्करण
7. जेबी संस्करण, गुटका संस्करण
8. आँखों देखा हाल
9. सामाजिक और वैयक्तिक समाचार
10. सनसनीदार पत्रकारिता

2. 1. diplomatic correspondent
2. editorial publicity campaign
3. fancy cover
4. ghost writer

5. literary piracy
6. newspaper establishment
7. reliable source
8. sponsor
9. verbal oddities
10. word for word duplication

3. 1. अग्रिम जमानत
2. न्यास भंग, विश्वास भंग
3. दंड प्रक्रिया संहिता
4. प्रथम इत्तिला रिपोर्ट
5. आभ्यासिक व्यतिक्रमी
6. न्यायिक जाँच
7. आज्ञापक उपबंध
8. कुर्की का आदेश
9. शाश्वत उत्तराधिकार
10. विशेषक शब्द
11. सूचना का अधिकार
12. अनिश्चित काल के लिए
13. प्रतिलिप्यधिकार की अवधि
14. परिसमापन
15. किशोर अपराधी

4. 1. adjournment motion
2. condemned criminal
3. free legal aid
4. Indian Penal Code
5. legislative drafting
6. non statutory body
7. oath of secracy
8. proclamation of sale
9. quasi judicial act
10. rule of interpretation
11. self acquired property
12. transfer memorandum
13. undesirable transcation
14. vested interest
15. violation of the Constitution

12.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- -------, 1992. *बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी),* खंड I और II, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- -------, 1994. *बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह (विज्ञान),* खंड I और II, नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -------, 2008. *प्रशासनिक शब्दावली (Glossary of Administrative Terms)*, नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -------, 2008. *प्रशासन मूलभूत शब्दावली (Administration : A Fundamental Glossary)*, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -------, 1998. *पत्रकारिता एवं मुद्रण शब्दावली (Glossary of Journalism μ Printing)*, नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -------, 1996. *कंप्यूटर विज्ञान की मूलभूत शब्दावली (Fundamental Glossary of Computer Science)*, नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -------, 2002. *समेकित अखिल भारतीय शब्द-संग्रह (Comprehensive Glossary of Pan-Indian Terms)*, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग और हरियाणा साहित्य अकादेमी, पंचकूला (हरियाणा) द्वारा प्रकाशित।
- -------, 2012. *बैंकिंग शब्दावली,* मुंबई, भारतीय रिज़र्व बैंक।

- -------, 2012. *मानक बीमा शब्दावली,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग एवं दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रकाशित।
- -------, *वाणिज्य शब्दावली,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -------, 1986. *अखिल भारतीय शब्दावली : अर्थशास्त्र और वाणिज्य,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -------, 1986. *पूँजी बाजार एवं संबद्ध शब्दावली,* नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- -------, 2001. *विधि शब्दावली, विधायी विभाग* (राजभाषा खंड), विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली, भारत सरकार।
- -------, *भण्डारण शब्दावली,* नई दिल्ली, केंद्रीय भंडारण निगम (भारत सरकार का उपक्रम)।
- -------, *कार्यालयीन एवं तकनीकी शब्दावली,* राजभाषा विभाग, फरीदाबाद (हरियाणा), नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड।
- -------, 2006. *प्रत्यक्ष कर शब्दावली,* आयकर विभाग, आयकर निदेशालय (गवेषणा, सांख्यिकी, प्रकाशन एवं जन-संपर्क), नई दिल्ली, भारत सरकार।
- -------, 2012. *विद्युत शब्दावली,* विद्युत मंत्रालय एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली, फरीदाबाद, प्रकाशक – एन.एच.पी.सी. लिमिटेड।
- -------, *समेकित वैज्ञानिक एवं पारिभाषिक शब्दावली (Consolidated Glossary of Scientific and Technical Terms)* (अंग्रेजी-हिंदी), नई दिल्ली, भारतीय मानक ब्यूरो (बी.आई.एस.)।
- ------, 2005. *लघु हिंदी सहायिका,* नई दिल्ली, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण।